अगस्त, 2023

मेरी खेती

किसानों की बात मेरी खेती के साथ

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

IFFCO

नैनो यूरिया तरल

के उपयोग से बढे खेतों की शान

- खेत खलियान
- सरकारी नीतियां
- मौसम व अन्य कृषि सुझाव
- सब्ज़ी
- फूल
- औषधीय खेती
- पशुपालन - पशुचारा
- प्रगतिशील किसान

MERIKHETI

सम्पादकीय

आज हम आपको ऐसे दो भाईयों के बारे में बताऐंगे जो कि राजस्थान के करौली जनपद के रहने वाले हैं। एक का नाम सुरजन सिंह है, तो दूसरे का नाम मोहर सिंह है। दोनों पहले प्राइवेट स्कूल में नौकरी करते थे।

खेती में मेहनत ज्यादा और फायदा कम होने के चलते लोग नौकरी करना अधिक पसंद कर रहे हैं। यहां तक कि प्राइवेट नौकरी करने के लिए लोग लाइन में कतारबद्ध खड़े रहते हैं। परंतु, आज हम ऐसे दो भाइयों के संबंध में बात करेंगे, जिनमें खेती से संबंधित व्यवसाय करने की इच्छा के चलते अच्छी- खासी प्राइवेट नौकरी छोड़ दी। अब यह दोनों भाई फूल, फल और सब्जियों की नर्सरी लगाकर प्रति माह मोटी आमदनी कर रहे हैं। इन दोनों भाइयों का कहना है, कि नर्सरी का बिजनेस शुरू करते ही उनकी आमदनी पहले की तुलना में दोगुनी हो गई है। अब ये दोनों भाई बाकी युवाओं के लिए भी मिसाल बन चुके हैं।

ये दोनों भाई राजस्थान के करौली जनपद के रहने वाले हैं। एक का नाम सुरजन सिंह है तो दूसरे का नाम मोहर सिंह। हालाँकि, पहले दोनों प्राइवेट स्कूल में ही नौकरी करते थे। इससे उनके घर का खर्चा नहीं चलता था। ऐसे में दोनों ने कुछ अलग हटकर व्यवसाय शुरू करने की योजना बनाई। तभी दोनों भाइयों के दिमाग में नर्सरी का व्यवसाय शुरू करने का आइडिया आया। मुख्य बात यह है, कि दोनों भाइयों ने किराए पर जमीन लेकर दो महीने पहले ही नर्सरी का व्यवसाय शुरू किया है। दोनों भाइयों का कहना है, कि यह एक ऐसा व्यवसाय है, जिससे आमदनी तो हो ही रही है, साथ में पर्यावरण भी स्वच्छ हो रहा है।

सुरजन सिंह का कहना है, कि पहले वे प्राइवेट स्कूल में टीचर की नौकरी करते थे। दरअसल, इससे उनको अच्छी आमदनी नहीं हो रही थी। इस वजह से उन्होंने नर्सरी का बिजनेस चालू करने की योजना बनाई। इसके पश्चात उन्होंने ट्रायल के रूप में एक छोटी सी नर्सरी लगाकर अपना व्यवसाय शुरू किया। इससे उनको काफी ज्यादा फायदा हुआ। इसके उपरांत दोनों भाइयों ने किराए पर भूमि लेकर बेहद बड़े इलाके में नर्सरी लगानी चालू कर दी। अब उनकी नर्सरी में काफी बड़ी तादात में लोग पौधे खरीदने आ रहे हैं।

साथ ही, मोहर सिंह का कहना है कि इस नर्सरी में विभिन्न किस्मों के पौधे हैं। इनमें से कई पौधों को हमने कोलकाता से मंगवाया है, जिसकी अच्छी बिक्री हो रही है। इसके अतिरिक्त वह देसी पौधों को स्वयं ही नर्सरी में तैयार कर रहे हैं। फिलहाल, उनकी नर्सरी में 20 रुपए से लेकर 1200 रुपए तक के पौधे हैं। इससे आप यह आंकलन कर सकते हैं, कि किस किस तरह के पौधे इनकी नर्सरी में मौजूद हैं।

-संपादक
दिलीप यादव

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति
आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी विश्वविद्यालय
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी
एंड एनिमल साइंस

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर भरतपुर
राजस्थान

डॉ. जे.पी.एस. डबास
वरिष्ठ वैज्ञानिक
आई ए आर आई

डॉ.हरी शंकर गौड़
साइंटिस्ट, गलगोटियास
विश्वविद्यालय

दिलीप यादव
विशेषज्ञ, मेरीखेती

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

कृष्ण पाठक
विशेषज्ञ, मेरीखेती

2024 के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रधानमंत्री उम्मीदवार कौन है?

A नरेंद्र मोदी

B राहुल गांधी

C अरविंद केजरीवाल

D अन्य

जानें जेट्रोफा से क्या-क्या बनता है और इसकी खेती कैसे करें

आपकी जानकारी के लिए बतादें कि जेट्रोफा की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय जलवायु की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही इसकी खेती हेतु आपको ऐसे खेत की आवश्यकता पड़ेगी। जहां पानी की निकासी अच्छी हो। यह पौधा शुष्क इलाकों में ज्यादा होता है।

आज तक आपने किसानों को आम पारंपरिक फसलों की खेती करते हुए देखा होगा। वहीं, थोड़े बहुत किसानों को सब्जी की खेती करते हुए देखा होगा। परंतु, फिलहाल आपको किसान डीजल की खेती करते नजर आऐंगे। सामान्यतः इस पौधे का नाम जेट्रोफा है। परंतु, सामान्य बोलचाल की भाषा में इसे डीजल का पौधा कहा जाता है। दरअसल, इस पौधे के बीजों से बायोडीजल निकाला जाता है। किसानों को इसको इसका समुचित भाव मिलता है।

जेट्रोफा की खेती किस प्रकार की जाती है

जेट्रोफा की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय जलवायु की आवश्यकता पड़ती है। साथ ही, जेट्रोफा की खेती के लिए आपको ऐसे खेत की आवश्यकता पड़ेगी जहां पानी की समुचित निकासी की व्यवस्था हो। ये पौधा शुष्क इलाकों में ज्यादा होता है। मतलब कि उत्तर प्रदेश और राजस्थान के इलाकों और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सो में इसकी खेती बेहतरीन ढ़ंग से होती है। जेट्रोफा के पौधे को सीधे तौर पर खेत में नहीं लगाया जाता है।

सबसे पहले इसकी नर्सरी तैयार की जाती है। उसके बाद इसके पौधों को खेत में रोपा जाता है। इसकी खेती के साथ सबसे विशेष बात यह होती है, कि एक बार इसे खेत में लगा दिया जाए तो यह तीन से चार सालों तक फसल प्रदान करती है।

जेट्रोफा के बीजों से किस प्रकार डीजल बनता है

जेट्रोफा के पौधों से डीजल के बनने की प्रक्रिया बेहद सघन है। दरअसल, सबसे पहले जेट्रोफा के पौधे के बीजों को फलों से अलग करना पड़ता है। इसके उपरांत बीजों को काफी बेहद ढ़ंग से साफ किया जाता है। उसके बाद इन्हें एक मशीन के अंदर डाला जाता है। जहां से कि इसका तेल निकलता है। यह प्रक्रिया बिल्कुल उसी तरह की होती है, जैसे कि सरसों से तेल निकालने की प्रक्रिया होती है।

डीजल-पेट्रोल के बढ़ते दामों की वजह से भारत सहित संपूर्ण विश्व में इसकी मांग बढ़ी है। भारत सरकार भी इसकी खेती में किसानों की सहायता कर रही है। इसलिए, यदि भारतीय किसान इसकी बड़े स्तर पर खेती करते हैं, तो यह उन्हें पारंपरिक फसलों की तुलना में अधिक मुनाफा देगी। आज के दौर में किसानों को लीक से हटकर फसलों का उत्पादन करना काफी मुनाफा दिला सकता है। किसानों को जेट्रोफा जैसी फसल भी उगानी चाहिए। किसानों को बाजार में मांग और आपूर्ति के अनुसार फसलों का उत्पादन करना चाहिए।

BRAJDHAM

FARMS & RESORT

Best place to Celebrate Your Day

www.brajdhamfarms.com

करेले की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

हरदोई के किसान का कहना है, कि 1 एकड़ भूमि पर करेले की खेती करने पर तकरीबन ₹30000 तक का खर्चा आता है। किसान को बेहतरीन मुनाफे के साथ करीब ₹300000 प्रति एकड़ का लाभ होता है।

करेले की खेती से किसान शीघ्र अमीर बन सकते है। किसानों की सफलता की यह कहानी, बाकी किसानों को भी करेले की खेती की ओर आकर्षित कर रही है। असल में उत्तर प्रदेश के हरदोई जनपद के किसान करेले की खेती से अच्छा-खासा लाभ अर्जित कर रहे हैं। परंतु, करेले की खेती से फायदा कमाने की कहानी की पटकथा के पीछे खेत तैयार करने की महत्वपूर्ण भूमिका है। आईए जानते हैं, कि करेले की खेती करने वाले किसानों की सफलता की कहानी और उन्होंने किस प्रकार खेत तैयार किए, जिससे करेले की खेती से वह मोटा मुनाफा कमाने में सफल हो पाए।

जाल निर्मित कर करेले की खेती की शुरुआत की

हरदोई जनपद के किसान आजकल खेत में जाल बनाकर करेले की खेती कर रहे हैं, जिससे किसानों को करेले की खेती में लाखों का मुनाफा अर्जित हो रहा है। हरदोई के ऐसे ही एक किसान संदीप वर्मा हैं, जो कि गांव विरुइजोर के निवासी हैं। वह बहुत वर्षों से करेले की खेती करते आ रहे है, उनका कहना है, कि उनके पिताजी भी सब्जियों की खेती किया करते थे। सब्जी की खेती गर्मी एवं बरसात के दिनों में बेहद मुनाफा देती है। साथ ही, यह खेती सप्ताह अथवा 15 दिन में किसान की जेब में रुपए पहुंचाती रहती है।

संदीप की देखी-देखा रिश्तेदारों ने भी की करेले की खेती शुरू

किसान संदीप वर्मा का कहना है, कि करेले की फसल की उत्तम पैदावार के लिए 35 डिग्री तक का तापमान उपयुक्त माना जाता है। साथ ही, बीजों के गुणवत्तापूर्ण जमाव के लिए 30 डिग्री तक का तापमान उपयुक्त होता है। किसान ने बताया है, कि उनकी करेले की खेती की कमाई को देखी देखा फिलहाल उनके रिश्तेदार भी करेले की फसल उगाने लग गए हैं, जिससे उनको भी लाभ होने लगा है।

करेला की खेती में कितनी पैदावार होती है

किसान संदीप वर्मा ने बताया है, कि वह आर्का हरित नामक करेले के बीज को लगभग 2 वर्षों से बो रहे हैं। इस बीज से निकलने वाले पेड़ से प्रत्येक बेल में करीब 50 फल तक अर्जित होते हैं। संदीप का कहना है, कि आर्का हरित करेले के बीज से निकलने वाला करेला बेहद लंबा एवं तकरीबन 100 ग्राम तक का होता है। करेला की 1 एकड़ भूमि में 50 क्विंटल तक की अच्छी पैदावार इससे अर्जित की जा सकती है। विशेष बात यह है, कि इस करेला के फल में अत्यधिक बीज नहीं पाए जाते। इस वजह से इसको सब्जी के लिए बड़े शहरों में ज्यादा पसंद किया जाता है। किसान का कहना है, कि गर्म वातावरण करेले की खेती के लिए बेहद बेहतरीन माना गया है। खेत में समुचित जल निकासी की समुचित व्यवस्था के साथ इसे बलुई दोमट मृदा में आसानी से किया जा सकता है।

करेले की बुवाई इन दिनों में की जानी चाहिए

करेले की बिजाई करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त समय बारिश के दिनों में मई-जुलाई का पहला हफ्ता वहीं सर्दियों में जनवरी-फरवरी माना जाता है। किसान का कहना है, कि खेत की तैयारी करने के दौरान खेत में गोबर की खाद डालने के पश्चात कल्टीवेटर से कटवा कर उसकी बेहतरीन ढ़ंग से जुताई करके मृदा को भुरभुरा बनाते हुए उसमें पाटा लगवा कर एकसार कर लें। बुआई से पूर्व खेत में नालियां तैयार कर लें। साथ ही, इस बात का खास ख्याल रखें कि खेत में जलभराव की स्थिति ना बने मृदा को एकसार बनाते हुए खेत में दोनों ओर की नाली निर्मित की जाती हैं। साथ ही, खरपतवार को भी खेत से बाहर निकाल कर आग लगा दी जाती है अथवा उसको गहरी मृदा में दबा दिया जाता है।

करेले की बिजाई इस तरह करें

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि 1 एकड़ भूमि में करेला की बुवाई हेतु तकरीबन 600 ग्राम बीज पर्याप्त होता है। करेले के बीजों की बुवाई करने के लिए 2 से 3 इंच की गहराई पर बोया जाता है। साथ ही, नाली से नाली का फासला तकरीबन 2 मीटर और पौधों का फासला करीब 70 सेंटीमीटर होता है। बेल निकलने के पश्चात मचान पर उसे सही ढंग से चढ़ा दिया जाता है। करेले की पौध को बिमारियों एवं कीटों से बचाने के लिए किसान विशेषज्ञों से सलाह मशवरा कर के कीटनाशक का इस्तेमाल करते हैं।

किसान कुल खर्चे का 10 गुना मुनाफा उठा रहे हैं

किसान का कहना है, कि 1 एकड़ खेत में तकरीबन ₹30000 तक की लागत आसानी से आ जाती है। साथ ही, किसान को बेहतरीन मुनाफे के साथ करीब ₹300000 प्रति एकड़ का लाभ होता है। हरदोई के जिला उद्यान अधिकारी सुरेश कुमार का कहना है, कि जनपद में किसान करेले की खेती से काफी मोटा मुनाफा कमा रहे हैं। किसानों को खेती के संबंध में समयानुसार उपयोगी जानकारी दी जा रही है। इसके साथ ही किसानों को अच्छे बीज एवं अनुदान भी प्रदान किए जा रहे हैं। किसानों के खेत में पहुँचकर किसानों की फसलों का निरीक्षण भी किया जा रहा है, इससे उनको अच्छे खरपतवार एवं कीट नियंत्रण से जुड़ी जानकारी प्रदान की जा रही है। हरदोई की जिला उद्यान अधिकारी सुरेश कुमार ने बताया कि हरदोई का करेला लखनऊ, कानपुर, शाहजहांपुर के अतिरिक्त दिल्ली, मध्य प्रदेश व बिहार तक पहुँच रहा है। इससे किसान को उसकी करेले की फसल का समुचित भाव अर्जित हो रहा है।

टिंडा की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

बतादें कि टिंडा सब्जी की बुवाई का समय चल रहा है। किसान टिंडा की उन्नत किस्मों की बुवाई करके अच्छी आमदनी कर सकते हैं। अब ऐसी स्थिति में कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिकों और अधिकारियों के द्वारा बताएं गए तरीके अपनाएं जाए तो इसकी खेती करके अच्छा लाभ उठा सकते हैं। आज हम ट्रैक्टर जंक्शन के जरिए से आपको टिंडा सब्जी की खेती की जानकारी प्रदान कर रहे हैं।

टिंडा सब्जी की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु व मृदा

टिंडा की खेती के लिए गर्म एवं आद्र जलवायु उपयुक्त मानी जाती है। बतादें कि शर्द जलवायु इसके लिए बेहतर नहीं मानी जाती है। पाला इसकी फसल के लिए काफी हानिकारक होता है। इस वजह से इसकी खेती गर्मियों के सीजन में ही की जाती है। आप बारिश में भी इसकी खेती कर सकते हैं। परंतु, इस दौरान रोग और कीट लगने की संभावना ज्यादा बढ़ जाती है। अगर इसकी खेती के लिए मिट्टी की बात जाए तो इसकी खेती हर तरह की मृदा में की जा सकती है। अच्छी जलधारण क्षमता वाली जीवांशयुक्त हल्की दोमट मृदा इसकी खेती के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है।

टिंडा की खेती के लिए सही समय क्या है

टिंडा की खेती वर्ष भर में दो बार में की जा सकती है। टिंडा को फरवरी से मार्च और जून से जुलाई तक की समयावधि में बुवाई की जा सकती है।

टिंडा की बेहतरीन किस्में

टिंडा सब्जी की विभिन्न प्रसिद्ध उन्नत किस्में हैं। इनमें टिंडा एस 48, टिंडा लुधियाना, पंजाब टिंडा-1, अर्का टिंडा, अन्नामलाई टिंडा, मायको टिंडा, स्वाती, बीकानेरी ग्रीन, हिसार चयन 1, एस 22 इत्यादि बेहतरीन किस्में मानी जाती हैं। टिंडे की फसल सामान्य तोर पर दो महीने में पककर तैयार हो जाती है।

टिंडा की खेती के लिए खेत की तैयारी

टिंडा सब्जी की बुवाई के लिए सर्वप्रथम खेत की ट्रैक्टर एवं कल्टीवेटर से बेहतरीन ढ़ंग से जुताई करके मृदा को भुरभुरा बना लेना चाहिए। खेत की पहली जुताई मृदा पलटने वाले हल से करनी चाहिए। इसके पश्चात 2-3 बार हैरो अथवा कल्टीवेटर से खेत की जुताई करें। इसके उपरांत सड़े हुए 8-10 टन गोबर की खाद प्रति एकड़ प्रतिकिलो खाद के मुताबिक डालें। अब खेती के लिए बैड तैयार करें। बीजों को गड्ढों एवं डोलियों में बोया जाता है।

बीज की मात्रा एवं बीजोपचार

टिंडा सब्जी के बीजों की बुवाई के लिए एक बीघा में डेढ़ किलो ग्राम बीज पर्याप्त होता है। बुवाई से पूर्व बीजों को उपचारित कर लेना चाहिए। इसके लिए बिजाई से पूर्व बीजों को 12-24 घंटे के लिए बीजों को पानी में भिगा देना चाहिए। इससे उनकी अंकुरण क्षमता में वृद्धि होती है। बीजों को मृदा से होने वाली फंगस से संरक्षण के लिए, कार्बेनडाजिम 2 ग्राम अथवा थीरम 2.5 ग्राम से प्रति किलो बीजों की दर से उपचारित करना उचित होता है। रासायनिक उपचार के बाद, बीजों को ट्राइकोडरमा विराइड 4 ग्राम अथवा स्यूडोमोनास फलूरोसैंस 10 ग्राम से प्रति किलो बीजों का उपचार करें। इसके पश्चात छाया में सुखाकर फिर बीजों की बुवाई करनी चाहिए।

टिंडा की खेती हेतु खाद और उर्वरक

टिंडे की पूरी फसल में नाइट्रोजन 40 किलो (यूरिया 90 किलो), फासफोरस 20 किलो (सिंगल सुपर फासफेट 125 किलो) और पोटाश 20 किलो (म्यूरेट ऑफ पोटाश 35 किलो) प्रति एकड़ के अनुरूप डालनी चाहिए। नाइट्रोजन की 1/3 मात्रा, फासफोरस एवं पोटाश की संपूर्ण मात्रा बिजाई के समय डालें। शेष बची नाइट्रोजन की मात्रा पौधे की आरंभिक उन्नति के दौरान डालें। साथ ही, टिंडे का ज्यादा उत्पादन उठाने के लिए टिंडे के खेत में मैलिक हाइड्रजाइड के 50 पीपीएम का 2 से 4 प्रतिशत मात्रा का पत्तियों पर छिड़काव के प्रभाव से उत्पादन में 50-60 फीसद तक वृद्धि हो सकती है।

टिंडा की खेती की बुवाई की विधि

सामान्य तौर पर टिंडे की बुवाई एकसार क्यारियों में की जाती है। परंतु, डौलियों पर बुवाई करना बेहद फायदेमंद होता है। टिंडा की फसल के लिए 1.5-2 मी. चौड़ी, 15 से.मी. उठी क्यारियां तैयार करनी चाहिए। क्यारियों के बीच एक मीटर चौड़ी नाली छोड़ें। बीज दोनों क्यारियों के किनारों पर 60 से.मी. के फासले पर बुवाई करें। बीजों की गहराई 1.5-2 से.मी. से ज्यादा गहरी ना रखें।

टिंडा की खेती हेतु सिंचाई व्यवस्था

वर्तमान में ग्रीष्मकाल चल रहा है, इसमें टिंडा की फसल की बुवाई की जा सकती है। इसके पश्चात दूसरी बुवाई वर्षाकाल में की जाएगी। ग्रीष्मकालीन टिंडा की खेती के लिए प्रत्येक हफ्ता सिंचाई करनी चाहिए। बारिश में सिंचाई वर्षाजल पर आश्रित होती है।

टिंडा की फसल में खरपतवार की रोकथाम

टिंडा की फसल के साथ अनेक खरपतवार भी उग आते हैं, जो पौधों के विकास और बढ़वार को प्रभावित करने के साथ ही पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इस वजह से इसकी रोकथाम करना बेहद आवश्यक होता है। इसके लिए 2-3 बार निराई-गुड़ाई करके खरपतवार को समाप्त कर देना चाहिए।

टिंडा की कटाई, पैदावार और कीमत

सामान्य तौर पर बुवाई के 40-50 दिनों के पश्चात फलों की तुड़ाई चालू हो जाती है। तुड़ाई में इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, कि जब फल पक जाएं और मध्यम आकार के हो जाएं तब इसकी तुड़ाई की जानी चाहिए। इसके उपरांत तकरीबन 4-5 दिनों के अंतराल में तुड़ाई की जा सकती है। अगर वैज्ञानिक ढ़ंग से इसकी खेती की जाए, तो टिंडा की खेती से एक हैक्टेयर में लगभग 100-125 क्विंटल तक पैदावार अर्जित की जा सकती है। टिंडा की बाजार में कीमत सामान्य तौर पर 20 रुपए से लेकर 40 रुपए किलो तक होती है।

किसान अपनी छत पर इन महंगी सब्जियों को इस माध्यम से उगाऐं

शिमला मिर्च की खेती भी बिल्कुल उसी तरह कर सकते हैं, जैसे बैंगन की करते हैं। हालांकि, इसमें धूप का और पानी का खास ध्यान रखना पड़ता है। प्रयास करें कि शिमला मिर्च के पौधों पर प्रत्यक्ष तौर पर धूप ना पड़े।

बाजार में कुछ दिन पूर्व तक टमाटर की कीमत 350 रुपए प्रतिकिलो थी। दरअसल, सरकार के हस्तक्षेप के उपरांत इनके भाव अब 70 से 80 रुपए किलो तक आ गए हैं। परंतु, क्या आपको जानकारी है, कि बाजार के अंदर विभिन्न ऐसी सब्जियां हैं, जो आज भी 150 के पार चल रही हैं। इन सब्जियों में शिमला मिर्च, बैगन और धनिया शम्मिलित हैं। आइए आपको जानकारी दे दें कि कैसे आप इन सब्जियों को अपनी छत पर सहजता से उगा सकते हैं।

गमले के अंदर बैंगन की खेती

बैंगन को छत पर उगाना सबसे सुगम होता है। बाजार में इसके पौधे मिलते हैं, जिन्हें लाकर आप किसी भी गमले में इसको उगा सकते हैं। इसकी संपूर्ण प्रक्रिया के विषय में बात की जाए तो सबसे पहले आपको एक गमला लेना पड़ेगा। जो थोड़ा बड़ा हो उसके बाद उसमें मिट्टी और जैविक खाद मिला लें। जब इस प्रकार से गमला तैयार हो जाए तो नर्सरी से लाए हुए बैंगन के पौधों की इनमें रोपाई करें। एक गमले में आपको एक से ज्यादा पौधा नहीं रोपना चाहिए। ऐसे करके आप छत पर पांच से सात गमलों में बैंगन का उत्पादन कर सकते हैं। ये पौधे दो महीनों के अंतर्गत बैंगन देने लगेंगे।

गमले के अंदर शिमला मिर्च की खेती

शिमला मिर्च की खेती भी बिल्कुल वैसे ही की जा सकती है, जैसे कि बैंगन की करते हैं। हालांकि, इसमें धूप का और पानी का विशेष ख्याल रखना पड़ता है। प्रयास करें कि शिमला मिर्च के पौधों पर प्रत्यक्ष तौर पर धूप ना पड़े। यदि ऐसा हुआ तो पौधा सूख सकता है। इसी प्रकार से आप हरी मिर्च की भी खेती सहजता से कर सकते हैं। यदि आपका छत बड़ा है, तो आप उस पर बहुत सारे गमले रख के एक छोटा सा वेजिटेबल गार्डेन तैयार कर सकते हैं, जिसमें आप प्रतिदिन बगैर रसायन वाली ताजी-ताजी सब्जियां उगा सकते हैं।

गमले के अंदर धनिया की खेती

संभवतः धनिया की खेती सबसे आसान ढ़ंग से की जाती है। हालांकि, इसके लिए आपको गमला नहीं बल्कि कोई चौड़ी वस्तु जैसे कोई बड़ा सा गहरा ट्रे लेना पड़ेगा। इस ट्रे में पहले आप जैविक खाद और मृदा डाल दें, उसके उपरांत इसमें बाजार से लाए धनिया के बीज छींट दें। फिर उसमें पानी का मध्यम छिड़काव कर दें। दस से बीस दिनों के समयांतराल पर धनिया के पौधे तैयार हो जाएंगे, एक महीने के पश्चात आप इनकी पत्तियों का इस्तेमाल कर पाएंगे।

लोबिया की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

लोबिया की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

खरीफ फसलों की बुवाई का समय चल रहा है। अब ऐसी स्थिति में लोबिया की खेती छोटे किसानों के लिए एक वरदान साबित हो सकती है। यदि आप भी कम भूमि पर खेती-किसानी करते हैं, क्योंकि आज के इस लेख में हम आपको लोबिया की खेती के बारे में बताएंगे।

भारत में छोटे और लघु किसानों की तादात काफी ज्यादा है, जिनके पास काफी कम भूमि है। ऐसे कृषकों के लिए लोबिया की खेती काफी फायदेमंद साबित हो सकती है। लोबिया एक दलहनी फसल की श्रेणी में आने वाली एक फसल है। इसकी खेती खरीफ एवं जायद, दोनों सीजनों में की जाती है। इसकी खेती करने से कृषकों को दो तरह के लाभ हो सकते हैं। एक तो किसान इसे सब्जी के तौर पर इस्तेमाल कर सकते हैं एवं दूसरा इसको पशुओं के चारे में उपयोग किया जा सकता है। लोबिया एक ऐसी फली होती है, जो कि तिलहन की श्रेणी के अंतर्गत आती है। इसे बोड़ा, चौला या चौरा के नाम से भी जाना जाता है। बतादें कि इसका पौधा सफेद रंग का काफी बड़ा होता है। लोबिया की फलियां पतली, लंबी होती हैं। इसे सब्जी बनाने के लिए या फिर पशुओं के चारे के लिए उपयोग किया जाता है।

लोबिया की खेती करने के लिए निम्नलिखित चीजों का ध्यान रखा जाना बहुत जरुरी है

लोबिया की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु एवं मृदा

लोबिया की खेती करने के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु की जरूरत होती है। बतादें, कि इसकी खेती करने लिए 24-27 डिग्री के मध्य के तापमान की आवश्यकता होती है। अत्यधिक कम तापमान होने के स्थिति में इसकी फसल चौपट हो सकती है। इस वजह से लोबिया की फसल को ज्यादा ठंड से बचाना चाहिए।

लोबिया की खेती करने के लिए यदि मृदा की बात की जाए, तो इसे हर तरह की मिट्टी में उत्पादित किया जा सकता है। मगर एक बात का विशेष ख्याल रखें, कि इसके लिए छारीय मृदा बिल्कुल ठीक नहीं होती।

लोबिया की उन्नत प्रजातियाँ

दरअसल, लोबिया की विभिन्न उन्नत किस्में हैं, जो कि काफी अच्छी पैदावार देती हैं। जैसे कि – सी- 152, पूसा फाल्गुनी, अम्बा (वी- 16), स्वर्णा (वी- 38), जी सी- 3, पूसा सम्पदा (वी- 585) और श्रेष्ठा (वी- 37) आदि प्रमुख हैं।

लोबिया की बुवाई कब की जाती है

लोबिया की बुवाई के बारे में बात की जाए, तो बरसात के मौसम में जून माह के अंत व जुलाई की शुरुआत में इसकी बुवाई की जाती है। वहीं, इसे फरवरी से लेकर मार्च तक बोया जाता है।

लोबिया की बुवाई हेतु बीज की मात्रा

लोबिया की बुवाई करने के दौरान बीज की मात्रा ज्यादा ना हो इस बात का विशेष ध्यान रखने की जरूरत है। इसकी बुवाई हेतु सामान्यत: 12-20 कि.ग्रा. बीज/हेक्टेयर की दर से पर्याप्त होता है। इसकी बेल वाली किस्म के लिए बीज की मात्रा थोड़ी कम लगती है और मौसम के अनुरूप बीज की मात्रा का निर्धारण करना ज्यादा उचित होता है।

इस तरह करें लोबिया की बुवाई

लोबिया की बुवाई करते समय आपको यह ध्यान देने की जरूरत है, कि इसके बीज के मध्य का फासला सही होना चाहिए। जिससे कि जब इसका पौधा उगे, तो ठीक ढ़ंग से विकास कर सके। दरअसल, लोबिया की बुवाई के दौरान उसकी किस्म के मुताबिक दूरी तय की जाती है। जैसे कि – झाड़ीदार किस्मों के बीज के लिए एक लाइन से दूसरी लाइन का फासला 45-60 सेमी होना चाहिए। बीज से बीज का फासला 10 सेमी होना चाहिए। साथ ही, इसकी बेलदार प्रजातियों के लिए लाइन से लाइन का फासला 80-90 सेमी रखना सही होता है।

लोबिया की खेती में खाद कितनी मात्रा में देना चाहिए

जैसा कि हम जानते हैं, कि किसी भी फसल की खेती करने के लिए खाद की काफी आवश्यक होती है। इसी प्रकार लोबिया की खेती करने के लिए खाद आवश्यक है। लोबिया की फसल में इस प्रकार से खाद डालें। एक महीने पहले खेत में 20-25 टन गोबर अथवा कम्पोस्ट डालें, 20 किग्रा नाइट्रोजन, फास्फोरस 60 कि.ग्रा. और पोटाश 50 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर के अनुरूप खेत में जुलाई के अंत में ही डाल दें। साथ ही, नाइट्रोजन की 20 कि.ग्रा. की मात्रा फसल में फूल आने के समय देनी चाहिए।

लोबिया की सिंचाई

लोबिया की फसल को खरीफ के सीजन में पानी की ज्यादा आवश्यकता नहीं पड़ती है। इस वजह से खरीफ के सीजन में उतना ही पानी देना चाहिए, जिससे कि मृदा में नमी बनी रहे। साथ ही, अगर हम गर्मी की फसल की बात करें, तो सामान्यतः किसी भी फसल में पानी की अधिक आवश्यकता होती है। लोबिया की फसल में 5 से 6 पानी की आवश्यकता होती है।

लोबिया की कटाई कब की जाती है

लोबिया की हरी फलियों का अगर आप इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो इसकी फलियों को 45 से 90 दिन बाद तोड़ लेना चाहिए। यदि आपने लोबिया की चारे वाली फलियों की फसल की है, तो इसकी फलियों को सामान्य रूप से 40 से 45 दिन में तोड़ लेना चाहिए। साथ ही, यदि आप इसके दाने को अर्जित करना चाहते हैं, तो उसके लिए आपको 90 से 125 दिन के पश्चात ही फलियों को संपूर्ण तौर पर पकने की स्थिति में ही तोड़ना चाहिए।

फल

शरीर हेतु अत्यंत फायदेमंद खजूर की अब राजस्थान में भी पैदावार की जा रही है

देश में बिकने वाला अधिक मात्रा में खजूर खाड़ी देशों से आयात किया जाता है। यदि राजस्थान में जारी खजूर का यह प्रोजेक्ट सफल रहा तो भविष्य में खजूर को आयात करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। कुछ साल पहले तक खजूर की पैदावार राजस्थान में संभव नहीं थी। परंतु, केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान काजरी के वैज्ञानिकों के प्रयास और स्थानीय किसानों के परिश्रम ने रेगिस्तान में बहार ला दी है। बतादें, कि पश्चिमी राजस्थान के चूरू और बीकानेर जैसे क्षेत्रों में लाल खजूर से लदे बहुत सारे बगीचे देखे जा सकते हैं।

खजूर की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

राजस्थान के शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्र की जलवायु खजूर की खेती के लिए उपयुक्त मानी जाती है। पश्चिमी राजस्थान में खजूर की खेती फिलहाल मशहूर हो रही है। खजूर की मौजूदा किस्म अतिशीघ्र पक जाती है। साथ ही, बारिश के मौसम में बाजार में होती है। खजूर की बागवानी करने वाले किसान बेहद प्रशन्न हैं। इस बार भी बेहतरीन उत्पादन है। लाल रंग के मीठे खजूर मुंह मांगी कीमतों पर बिक रहे हैं। भारत में बिकने वाला अधिकांश खजूर खाड़ी देशों से आयात किया जाता है। यदि राजस्थान में चल रहा खजूर का यह प्रोजेक्ट सफल रहा तो आगामी दिनों में खजूर को आयात करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

जानें खजूर की क्या-क्या खासियत होती हैं

राजस्थान के बाग के पके खजूर अपने पौष्टिक गुणों के लिए जाने जाते हैं। विशेष बात यह है, कि इसको किसी शीतगृह अथवा कारखाने में किसी रसायन या तकनीक से नहीं पकाया जाता। यह प्राकृतिक तौर पर पेड़ों पर पककर ही सीधे मंडी तक पहुंचता है। इस वजह से इस खजूर में पौष्टिक तत्वों की भरमार रहती है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि खजूर से दिल, पेट और नर्वस सिस्टम तो अच्छा रहता ही है, शरीर को भी बेहद ऊर्जा मिलती है।

खजूर में विटामिन, मिनरल्स जैसे कई सारे पोषक तत्व मौजूद रहते हैं

खजूर का सेवन करने से रोगों की रोकथाम होती है। खजूर के अंदर गेहूं, चावल जैसे बहुत सारे अनाजों की तुलना में ज्यादा कैलोरी पाई जाती हैं। साथ ही, शर्करा की मात्रा भी काफी ज्यादा होती है। पेट को साफ रखने वाला फाइबर, बहुत सारी विटामिन, मिनरल्स, और भरपूर फोलिक एसिड आपके शरीर को तंदुरुस्त व सेहतमंद बनाए रखता है। खजूर पर नेटवर्क प्रोजेक्ट बीकानेर, जोधपुर और आनन्द में चल रहा है, जिसका परिणाम भी उत्साहजनक है। कृषक भाइयों के लिए इसकी बागवानी अच्छी है। आमदनी भी काफी हो जाती है। भारत के अंदर खजूर फल की अधिक खपत होने से आयात होता है। भारत में इसका क्षेत्रफल और उत्पादन बढ़ता है, तो आयात की जरूरत नहीं पड़ेगी।

खजूर की खेती से किसानों की जिंदगी हुई खुशहाल

खजूर की खेती से किसानों की जिंदगी हुई खुशहाल

खजूर के पेड़ की आयु लगभग 80 वर्ष तक होती है। रेतीली मृदा पर इसका उत्पादन काफी ज्यादा बढ़ जाता है। यदि आप खजूर की खेती करने की योजना बना रहे हैं, तो सर्व प्रथम खेत में जलनिकासी की अच्छी तरह से व्यवस्था कर लें।

राजस्थान एक रेगिस्तानी राज्य है। लोगों का मानना है, कि यहां पर केवल बालू ही बालू होती है। अन्य किसी भी फसल की खेती नहीं होती है। परंतु, ऐसी कोई बात नहीं है। राजस्थान में किसान सरसों, टमाटर, जीरा, गेहूं, मक्का और बाजरा समेत हरी सब्जियों की भी जमकर खेती करते हैं। परंतु, फिलहाल राजस्थान के किसानों ने विदेशी फसलों की भी खेती करनी शुरू कर दी है। इससे किसानों की काफी अच्छी आमदनी हो रही है। विशेष कर जालोर जनपद में किसानों ने अरब देशों का प्रशिद्ध फल खजूर की खेती चालू कर दी है। जनपद में बहुत सारे किसानों के पास खजूर के बाग लहलहा रहे हैं।

जालोर जिला टमाटर और ईसबगोल की खेती के लिए मशहूर है

पहले जालोर जनपद टमाटर और ईसबगोल की खेती के लिए जाना जाता था। लेकिन, वर्तमान में खजूर की खेती यहां की पहली पसंद बन चुकी है। विशेषज्ञों का कहना है कि अरब देशों और राजस्थान की मिट्टी और मौसम एक जैसा होने के चलते किसान टिश्यू कल्चर से खजूर की खेती कर रहे हैं। जालोर जिले के नादिया, वाटेरा और मोरसीम समेत कई गांवों में किसान खजूर की खेती कर रहे हैं।

खजूर का पेड़ कितने साल तक चलता है

खजूर के पेड़ की उम्र तकरीबन 80 साल होती है। बतादें कि रेतीली मृदा में इसका उत्पादन काफी बढ़ जाता है। यदि आप खजूर की खेती करने की योजना तैयार कर रहे हैं, आपको सबसे पहले खेत से जलनिकासी की उत्तम व्यवस्था कर लेनी चाहिए। अगर आपके खेत में जलभराव की स्थिति हो गई है, तो पैदावार प्रभावित हो सकती है। साथ ही, खजूर के पौधे एक-एक मीटर के फासले पर ही रोपे जाऐं। रोपाई करने से पहले गड्ढे खोद लें और गड्ढे में खाद के तौर पर गोबर ड़ाल दें।

खजूर के एक पेड़ से किसान कितनी पैदावार ले सकता है

एक एकड़ में 70 के आसपास खजूर के पौधों की रोपाई की जा सकती है। रोपाई करने के 3 साल पश्चात इसके पेड़ों पर फल आने चालू हो जाते हैं। कुछ वर्षों के पश्चात आप एक पेड़ से 100 किलो तक खजूर तोड़ सकते हैं। फिलहाल, मार्केट में खजूर 300 रुपये से लेकर 800 रुपये किलो तक बिक रहा है। इस प्रकार 7000 किलो खजूर बेचकर लाखों रुपए की आमदनी कर सकते हैं।

इस राज्य में कटहल, आंवला और जामुन की खेती करने पर मिलेगा 50 प्रतिशत अनुदान

बिहार सरकार आए दिन किसानों के हित में नई नई योजनाऐं जारी कर रही है। बिहार सरकार द्वारा बागवानी क्षेत्र का विस्तार किया जा रहा है। राज्य में इसके लिए बागवानी विकास मिशन योजना एवं सूक्ष्म सिंचाई योजना समेत विभिन्न योजना चलाई जा रही है।
बिहार राज्य में किसान वर्तमान में पारंपरिक खेती करने की जगह बागवानी फसलों में अधिक रूचि ले रहे हैं। नालंदा, नवादा, पटना, मधुबनी, दरभंगा, सीतामढ़ी सहित तकरीबन समस्त जनपद में किसान आंवला, कटहल, आम, अमरूद और जामुन की खेती कर रहे हैं। इससे इन जिलों में हरियाली तो बढ़ गई है, साथ में किसानों की आमदनी में भी इजाफा हुआ है।

सूक्ष्म सिंचाई आधारित शुष्क बागवानी योजना के अंतर्गत अनुदान दिया जा रहा है

ऐसी स्थिति में भी बिहार सरकार राज्यों में बागवानी क्षेत्र का विस्तार कर रही है। इसके लिए मुख्यमंत्री बागवानी मिशन योजना, एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना एवं सुक्ष्म सिंचाई आधारित शुष्क बागवानी योजना समेत कई योजना चला रही है। इन योजनाओं के माध्यम से किसानों को बंपर अनुदान दिया जा रहा है। फिलहाल, उद्यान निदेशालय ने सूक्ष्म सिंचाई आधारित शुष्क बागवानी योजना के अंतर्गत किसानों को फल की खेती करने पर मोटा अनुदान देने का निर्णय किया है। योजना का लाभ लेने के लिए किसानों को उद्यान निदेशालय की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर आवेदन करना होगा।

इन बागवानी फसलों पर 50 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा

सुक्ष्म सिंचाई आधारित शुष्क बागवानी योजना के अंतर्गत बिहार सरकार नींबू, जामुन, बेर, आंवला और कटहल की खेती करने वाले किसानों को 50 प्रतिशत अनुदान दे रही है। विशेष बात यह है, कि अनुदान की धनराशि प्रत्यक्ष तौर पर किसानों के खातों में हस्तांतरित की जाएगी। इस योजना का प्रमुख उदेश्य किसानों की आमदनी में इजाफा और उनकी आर्थिक हालत में सुधार लाना है। साथ ही प्रदेश में हरियाली भी बढ़ानी है।

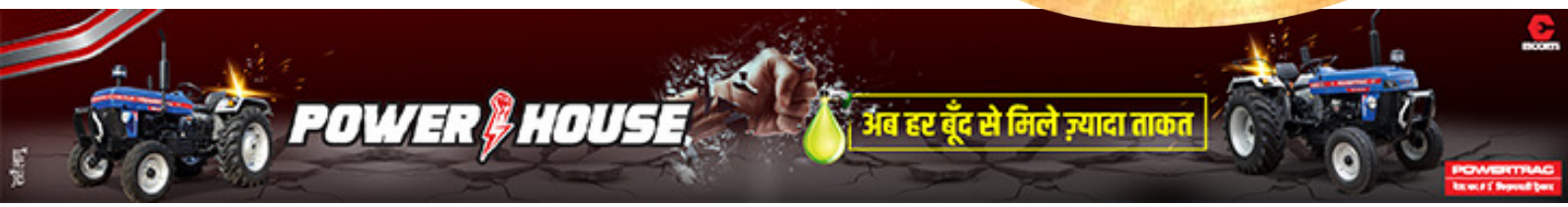

फूल

कार्नेशन के फूल की खेती कर किसान कुछ ही दिनों के अंदर बन जाएंगे अमीर

किसान भाई फूलों की खेती करके अच्छी खासी आमदनी कर सकते हैं। बतादें, कि जब कार्नेशन के फूल समयानुसार बड़े हो जाते हैं व अच्छी तरह से खिल जाते हैं तो इनकी कटाई करने हेतु चाकू और कैंची का उपयोग होता है। इन फूलों को काटने के लिए बेहद सावधानी पूर्वक काम करना होता है। फूलों की खेती के लिए किसानों को सरकार की तरफ से अच्छा खासा अनुदान प्रदान किया जाता है।

बिहार के किसान आमदनी के लिए पारंपरिक खेती के अतिरिक्त अन्य आमदनी के विकल्प भी खोज रहे हैं। इनमें अब कार्नेशन की खेती भी शम्मिलित हो गई है। दरअसल, कार्नेशन एक लोकप्रिय फूल है, जिसकी खेती इस समय बिहार सहित संपूर्ण भारत में की जा रही है। हालांकि, बिहार के किसान इसकी खेती बाकी क्षेत्रों की तुलना में अधिक कर रहे हैं।

आखिर किस वजह से कार्नेशन की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है

बिहार राज्य में इस फूल की इतनी ज्यादा खेती इसलिए हो रही है, क्योंकि ये लोकल मार्केट के साथ साथ विदेशी बाजार के अंदर भी अच्छी कीमतों पर बिकता है। इस फूल का सबसे अधिक इस्तेमाल सजावट एवं गुलदस्तों में होता है। हालांकि, इसकी खेती करना इतना सुगम भी नहीं होता है।

इसके लिए आपको 15 से 25 डिग्री सेल्सियस का तापमान और 6.0 और 7.0 के मध्य पीएच स्तर वाली मिट्टी की जरूरत होती है।

कार्नेशन की खेती कब की जाती है

बिहार राज्य में इस फूल की खेती अक्टूबर से नवंबर के मध्य होती है। हालांकि, कुछ किसान इसकी खेजी जून से जुलाई के मध्य भी करते हैं। इस फूल की बहुत सारी किस्में बिहार सहित संपूर्ण भारत में उगाई जाती हैं। इसमें स्टैंडर्ड कार्नेशंस, स्प्रे कार्नेशंस और मिनिएचर कार्नेशंस शम्मिलित हैं। जब आप इसकी खेती कर रहे हों तो आपको कुछ बातों का विशेष ख्याल रखना पड़ता है। जैसे इनके पौधों के मध्य 25 से 30 सेंटीमीटर का फासला होना चाहिए।

सालभर कार्नेशन फूलों की मांग बनी रहती है

जैसा कि हम जानते हैं फूलों की जरूरत हर एक कार्यक्रम में होती है। अब चाहे वह किसी की शादी हो या किसी का जन्मदिन। यहां तक कि बहुत सारे लोग आज कल प्रेम का इजहार करने के लिए फूल का इस्तेमाल करते हैं। फूल को अधिकांश अच्छे कार्यक्रमों में इस्तेमाल किया जाता है। फूल की मांग पूरे बारह महीने सालभर बनी रहती है।

कार्नेशन के फूलों की कटाई कैसे की जाती है

जब यह फूल बड़े हो जाते हैं और अच्छे खासे तरीके से खिल जाते हैं, तो इनकी कटाई के लिए चाकू और कैंची का उपयोग होता है। इनके फूलों को काटने के लिए बेहद सावधानी पूर्वक काम करना पड़ता है। क्योंकि इन फूलों की जितनी गुणवत्ता अच्छी होगी, बाजार में इनके फूलों की मांग उतनी ही अधिक होगी। ये फूल दिखने में गुलाब की तरह होते हैं, इसलिए अधिकांश लोग इनको गुलाब के स्थान पर सजाते हैं। हल्के गुलाबी रंग के भरे भरे यह फूल जहां लगते हैं, वहां की शोभा बढ़ा देते हैं। यदि आप भी पारंपरिक खेती से हट कर कुछ करना चाहते हैं, तो आपके लिए कार्नेशन के फूलों की खेती एक अच्छा विकल्प हो सकती है। इनकी सहायता से आप वार्षिक अच्छी आमदनी कर सकते हैं। किसानों को फूलों की खेती के लिए सरकार की ओर से अच्छा-खासा अनुदान भी प्रदान किया जाता है। भारत के विभिन्न राज्यों में फूल की खेती अच्छे खासे पैमाने पर की जाती है।

जानिए बारिश के दिनों में उगाए जाने वाले इन 10 फूलों के बारे में

जानिए बारिश के दिनों में उगाए जाने वाले इन 10 फूलों के बारे में

बारिश का मौसम आने पर हमारे आसपास के परिवेश में हरियाली छा जाती है। साथ ही, बहुत सारे लोग अपने घर एवं बगीचे में पौधे लगाते हैं। फूलों के पौधे घरों में हरियाली के लिए एवं ताजगी के लिए लगाए जाते हैं। वर्षा के दिनों पेड़ और पौधों में रौनक सी आ जाती है। बारिश का मौसम पेड़ और पौधों के लिए काफी ज्यादा फायदेमंद भी होता है। इस लेख में हम आपको ऐसे 10 फूलों के पौधों के विषय में बताएंगे, जिनको हम आसानी से अपने घर में लगा सकते हैं।

गुल मेहँदी

गुल मेहँदी के पौधे खुशबूदार एवं सदाबहार होते हैं। इसकी लम्बाई 20-60 सेंटीमीटर तक ऊंची होती है। साथ ही, गुलमेहंदी के पत्ते सुई के आकार के होते हैं। इसके फूल सर्दी अथवा वर्षा ऋतु में खिलते हैं, जिनका रंग बैंगनी, गुलाबी, नीला अथवा सफेद होता है।

गेंदे का फूल

बाजार में रंग-बिरंगे तथा छोटे-बड़े समस्त प्रकार के फूलों के पौधे उपलब्ध हैं। इनमें गेंदे का पौधा काफी ज्यादा आकर्षक एवं खूबसूरत होता है। भारत में गेंदे का पौधा सर्वाधिक लगाए जाने वाले पौधों में से एक है। गेंदे के फूल 50 तरह से भी ज्यादा होते हैं, जिसमें सबसे ज्यादा पाए जाने वाले गेंदे के फूल सिंग्नेट मेरीगोल्ड, इंग्लिश मेरीगोल्ड, अमेरिकन मेरीगोल्ड और फ्रेंच मेरीगोल्ड के होते हैं. इनमें से अमेरिकन और फ्रेंच मेरीगोल्ड की सुगंध बहुत लुभावन होती है|

कॉसमॉस

कॉसमॉस का पौधा हल्का सा नाजुक होता है। यह गेंदे के फूल जैसा ही नजर आता है। इसमें गुलाबी, बैंगनी एवं सफेद आदि रंग के फूल लगते हैं। इसका पौधा 6-7 फिट लम्बा होता है।

सूरजमुखी

सूरजमुखी फूल की सबसे बड़ी खासियत यह है, कि यह फूल सूरज के चारो तरफ घुमता है। यानि जिस-जिस ओर सूर्य घुमता है, इसलिए इसका नाम सूरजमुखी है. सुरजमुखी का फूल देखने में बहुत आकर्षक होता है।

जिन्निया

एक खूबसूरत फूल है जो अक्सर बाग बगीचों में देखा जा सकता है। यह एक तेजी से बढ़ने वाला फूल है, जिसकी बागवानी बहुतायत से की जाती है। जिन्निया के फूलों का रंग उसकी किस्म के अनुरूप भिन्न भिन्न होता है। जिन्निया फूल बेंगनी, नारंगी, पीले, सफेद और लाल आदि रंग में होते हैं। कुछ जिन्निया किस्म के पौधों पर बहुरंगी फूल भी आते हैं।

क्लियोम

विभिन्न स्थानों पर क्लियोम पौधे को मकड़ी के फूल, मकड़ी के पौधे अथवा मधुमक्खी के पौधे के नाम से भी जाना जाता है। क्योंकि यह फूलों के गुच्छों वाला एक लंबा कांटेदार पौधा है। इस पौधे पर गुलाबी एवं हल्के बैंगनी रंग के सुगंधित फूल खिलते हैं। इसके अतिरिक्त इसे सब्जी के बगीचे में लगाने के बेहद फायदे हैं, क्योंकि यह फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले खराब कीड़ों को दूर भगाने में सहायक है।

साल्विया

इस फूल के पौधे लम्बे, बौने एवं झाड़ीदार होते हैं। छोटे आकार के इस पौधे में कटीले पर हर तरफ ढेर सारे फूल निकलते हैं, जो कई दिन तक बने रहते हैं।

पोर्टूलाका

उत्तर भारत मे इसे लक्ष्मण बूटी भी कहा जाता है। यह प्रातः काल धूप निकलने के साथ खिलता है एवं शाम को सूर्यास्त के लगभग मुरझा जाता है। इस पौधे के फूल के रंग शानदार होते हैं। साथ ही, यह सफेद, बैंगनी, पीले, लाल और नारंगी रंगों में मौजूद होते हैं।

एग्रेटम

एग्रेटम हौस्टोनियानम, मेक्सिको में सबसे ज्यादा लगाए जाने वाले एग्रेटम किस्मों में से एक है। एग्रेटम नीले, गुलाबी अथवा सफेद रंग के विभिन्न रंगों में नरम, गोल फूल पेश करते हैं। नीले एग्रेटम फूल की 60 से ज्यादा किस्में उपलब्ध हैं, जो अक्सर पूर्णतय विकसित होने पर केवल 6 से 8 इंच तक ही पहुंचती हैं।

किसान जुलाई-अगस्त में इन फूलों की पैदावार कर अच्छा मुनाफा उठा सकते हैं

बतादें कि चंपा का पौधा आप किसी भी मौसम में लगा सकते हैं। परंतु, बरसात में इसके पौधों का विकास काफी अच्छा होता है। इसकी बुवाई करने के 5 वर्ष उपरांत पौधों पर फूल आने शुरू हो जाते हैं। लोगों का मानना है, कि बरसात में किसान खरीफ फसलों में केवल धान की ही खेती करते हैं। परंतु, इस तरह की कोई बात नहीं है। मानसून के समय किसान भाई बाजरा, मक्का और साग- सब्जियों की भी खेती करते हैं। इससे किसानों को धान की तुलना में अच्छी-खासी आमदनी होती है। परंतु, आज हम किसानों को बताएंगे, कि वह बरसात के मौसम में फूलों का भी उत्पादन कर सकते हैं। फूलों की विभिन्न ऐसी प्रजातियां हैं, जिसकी रोपाई जुलाई-अगस्त के माह में की जा सकती है।

किसान जुलाई अगस्त में करें फूलों की बागवानी

धान-गेंहू की भांति फूलों को भी सिंचाई की आवश्यकता होती है। अगर आप जुलाई- अगस्त महीने में फूलों की बागवानी करते हैं, तो पौधों को समुचित मात्रा में जल मिल जाता है। इससे फूलों के पौधों का अच्छा विकास होता है। साथ ही, उत्पादन भी बेहतरीन होता है। यदि आप चाहें, तो बरसात में घर के अंदर गमले के अंदर भी फूल लगा सकते हैं।

गुड़हल के फूल

किसान भाई बरसात के मौसम में गुड़हल के फूल भी उगा सकते हैं। यह फूल बरसात होने पर खूब खिलता है। इस फूल का सर्वाधिक इस्तेमाल पूजा में किया जाता है। विशेष कर देवी माता की पूजा गुड़हल के फूल से ही की जाती है। इसके अतिरिक्त गुड़हल के फूल का उपयोग ज्योतिस शास्त्र एवं तंत्र विद्या की साधना करने में भी किया जाता है।

कनेर के फूल

कनेर के फूल का उत्पादन बरसात के दौरान बढ़ जाता है। ऐसा कहा जाता है, कि शिवलिंग पर कनेर के फूल चढ़ाने से शंकर भगवान अत्यधिक खुश होते हैं।हालांकि, कनेर के फूल का इस्तेमाल देवी- देवताओं की पूजा करने के लिए भी किया जाता है। साथ ही ऐसी मान्यताएं हैं, कि घर के अंदर कनेर का पौधा लगाने से समस्त समस्याएं दूर भाग जाती हैं। इस वजह से आप घर में कनेर के पौधे लगा सकते हैं।

चंपा के फूल

दरअसल, चंपा का पौधा आप किसी भी मौसम में उगा सकते हैं। परंतु, बरसात में चंपा का पौधा लगाने पर पौधों का विकास अच्छा होता है। इसकी रोपाई करने के 5 साल पश्चात पौधों पर फूल आने शुरू हो जाते हैं। बाजार में चंपा का फूल काफी ज्यादा महंगा बिकता है। इससे बहुत सारी आयुर्वेदिक औषधियां निर्मित की जाती हैं। चंपा का रस आंखों में डालने से बहुत सारी बीमारियां और रोग खत्म हो जाते हैं।

FLAMING TRACTOR: जानिए फ्लेमिंग सर्च ट्रैक्टर की अद्भुत विशेषता के बारे में

हम आपको इस लेख में भारत के किसान भाइयों के लिए एक खास तकनीक का सर्च ट्रैक्टर के बारे बताने जा रहे हैं। दरअसल, यह खेत की फसल के लिए काफी ज्यादा फायदेमंद हैं। किसान भाइयों आज हम आपके लिए ऐसा उत्तम सर्च ट्रैक्टर लेकर आए हैं, जो कि शायद ही आपने कभी देखा होगा। बतादें कि हम जिस ट्रैक्टर के विषय में चर्चा कर रहे हैं, वह दिखने में जितना भिन्न है, उतने ही उसके अलग हटकर फायदे हैं।

फ्लेमिंग ट्रैक्टर को आज के समय का बेहतरीन उपकरण माना जाता है

किसानों के लिए ट्रैक्टर एक अहम भूमिका निभाता है। दरअसल, इस अद्भुत और शानदार ट्रैक्टर का नाम फ्लेमिंग ट्रैक्टर है, जो आज के आधुनिक दौर का सबसे अच्छा कृषि उपकरण माना जा रहा है। वैसे देखा जाए तो कृषि क्षेत्र में इस ट्रैक्टर का काम बेहद ही ज्यादा विशेष होता है। आइए इस अद्भुत ट्रैक्टर के विषय में जानने का प्रयास करते हैं, कि यह कैसे काम करता है। साथ ही, बाजार में फ्लेमिंग सर्च ट्रैक्टर की कीमत कितनी होती है।

फ्लेमिंग ट्रैक्टर आखिर होता क्या है

यह ट्रैक्टर अन्य समस्त ट्रैक्टरों से बिल्कुल अलग होता है। क्योंकि, जब आप इसको खेत में काम करते हुए देखेंगे, तो इसमें आपको आग निकलती हुई दिखाई पड़ेगी, जो खेत को फसल हेतु तैयार कर रही होती है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि फ्लेमिंग सर्च ट्रैक्टर में से निकलने वाली अग्नि खेत को नवीन फसल रोपने के लिए तैयार करने में किसानों की सहायता करती है। इसके उपयोग से खेत की मृदा में उपस्थित गंदगी और फसल को हानि पहुंचाने वाले रोग आदि बीमारियों का उपचार किया जाता है।

फ्लेमिंग ट्रैक्टर चलाने से पहले किस बात का ख्याल रखें

यदि आप भी अपने खेत में नवीन फसल लगाने के लिए इस सर्च ट्रैक्टर का उपयोग करने जा रहे हैं, तो आपको कुछ महत्वपूर्ण बातों का भी विशेष ख्याल रखना पड़ेगा। जैसे कि सर्वप्रथम आपको अपने खेत को इसके लिए तैयार करना पड़ेगा।

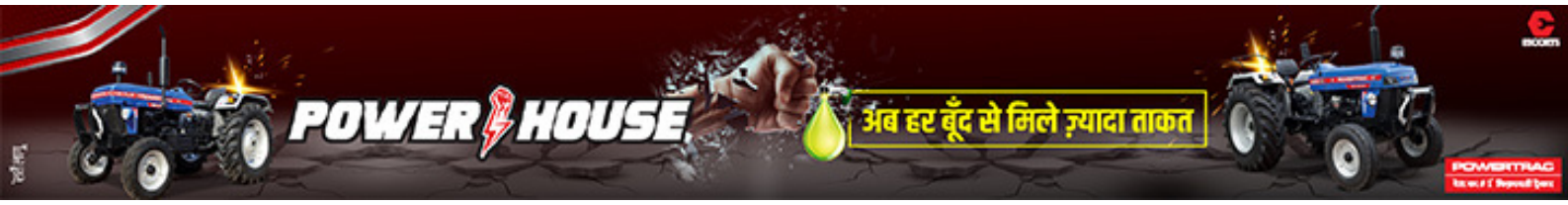

अगर हम आसान और सरल भाषा में कहें तो पहले आपको खेत को कल्टीवेशन या जुताई के लिए बेहतरीन ढ़ंग से तैयार करना होगा। उसके उपरांत खेत में स्थित पुरानी फसल के अवशेषों को भी हटाना पड़ता है। उसके बाद उनको खेत के अंदर ही नष्ट करना होता है। जिससे कि जब आप अपने खेत में फ्लेमिंग सर्च ट्रैक्टर को चलाएं, तो प्रदूषण बिल्कुल ना के बराबर हो और खेत भी सुरक्षित रह पाऐ।

फ्लेमिंग ट्रैक्टर से क्या-क्या फायदे होते हैं

बतादें, कि फ्लेमिंग सर्च ट्रैक्टर में बहुत सारी नोजिश लगी होती है, जिसमें से एक साथ आग निकलती है, जो कि खेत की मृदा को नई फसल के लिए कुछ ही मिनटों में तैयार करने के लिए बना देती है। इस फ्लेमिंग सर्च ट्रैक्टर में आप देखेंगे की इसके पीछे एक बहुत बड़ा CNG गैस सिलेंडर दिया गया है। उसकी सहायता से इनके नोजिश से आग बाहर निकलती है।

फ्लेमिंग ट्रैक्टर की कीमत कितनी है

भारतीय बाजार में इस फ्लेमिंग सर्च ट्रैक्टर की कीमत किसान भाइयों के लिए अत्यंत किफायती होती है। बाजार में इसकी कीमत 10 लाख से चालू होकर 15 लाख रुपए तक बताई जा रही है। इसकी कीमत की बात की जाए तो अलग-अलग राज्यों में इसकी कीमतों में थोड़ा बहुत अंतराल देखने को मिल सकता है।

VISHVAS TRACTORS LTD.

किसान की आस ट्रैक्टर विश्वास

विशेषताएं

दमदार इंजन

कम डीजल खपत

आकर्षक डिज़ाइन

उच्च क़्वालिटी

Add: Panchwati Colony Agra Chowk,
Palwal, Haryana 121102

www.vishvastractor.com

डीलरशिप लेने के लिए संपर्क करें: +91 7015431478

1800 833 2533

इस किसान की सिंचाई करने की तकनीक के बारे में जानकर आपके होश उड़ जाऐंगे

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (WORLD ECONOMIC FORUM) की रिपोर्ट के अनुसार, इस कमाल के मशीन को बनाने में हरजिंदर सिंह का हाथ है। उन्होंने इस मशीन पर सोलर पैनल लगा कर इसे पोर्टेबल बना दिया है। इस पूरी मशीन पर 24 सोलर पैनल लगे हुए हैं।

भारत में किसान अब आधुनिक मशीनों की मदद से कृषि करने लगे हैं। इनमें बहुत सारे किसान ऐसे भी हैं, जो खेती के लिए आधुनिक मशीने विदेश से मंगाते हैं। तो वहीं बहुत से किसान भाई ऐसे भी हैं जो जुगाड़ से ऐसी आधुनिक मशीने बना लेते हैं, जिनके बारे में बड़े बड़े इंजीनियर भी नहीं सोच पाते। तो चलिए आज आपको एक ऐसी ही मशीन के बारे में बताते हैं जिसकी मदद से आप जहां चाहें वहां अपने खेत की सिंचाई कर सकते हैं।

मोबाइल सोलर प्लांट

मोबाइल सोलर प्लांट एक ऐसी मशीन है, जिसकी मदद से किसान भाई अपने खेतों में सहजता से सिंचाई कर सकते हैं। जो किसान पानी की पहुंच से दूर हैं अथवा फिर जहां ट्यबवेल की सुविधा उपलब्ध नहीं है। इस मशीन को चलाने हेतु अलग से बिजली की आवश्यकता नहीं पड़ती। क्योंकि, इस मशीन में सोलर पैनल लगे हुए होते हैं, जो सूरज की रौशनी से बिजली उत्पन्न करते हैं, जिससे ये मशीन चलती है।

इस अद्भुत कमाल को करने वाला शख्स कौन है

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की रिपोर्ट के अनुसार, इस कमाल की मशीन को बनाने में हरजिंदर सिंह का हाथ है। उन्होंने इस मशीन पर सोलर पैनल लगा कर इसे पोर्टेबल बना दिया है। इस पूरे मशीन पर 24 सोलर पैनल लगे हुए हैं। सबसे विशेष बात यह है, कि इस मशीन को ट्रैक्टर के सहारे कहीं भी ले जाया जा सकता है। इस मशीन को सेट करने में केवल कुछ ही मिनट का वक्त लगता है। ये सिंचाई के लिए तैयार हो जाती है। इस मशीन के माध्यम से किसान दो हजार से पांच हजार लीटर पानी तक की सिंचाई बड़ी ही सुगमता से कर सकते हैं।

इस तकनीक का इस्तेमाल सिर्फ भारत नहीं जर्मनी तक होता है

हालाँकि, ऐसा नहीं है कि इस तरह की तकनीक का उपयोग सिर्फ भारत के किसान कर रहे हैं। जर्मनी में भी फलों की खेती करने वाले किसान इस तरह की तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं। सोलर पैनल की सहायता से किसान ना केवल खेतों में सिंचाई कर रहे हैं, बल्कि पूरे खेत के लिए वो इन्हीं सोलर पैनलों से बिजली भी बना रहे हैं। धीरे-धीरे विश्वभर के किसान इस तरफ कदम बढ़ा रहे हैं। साथ ही, नई-नई तकनीक की सहायता से अपनी खेती को बेहतर कर रहे हैं।

किसान ने बिना डीजल-पेट्रोल और बिजली के उपयोग से चलने वाला ट्रैक्टर तैयार किया

किसान ने बिना डीजल-पेट्रोल और बिजली के उपयोग से चलने वाला ट्रैक्टर तैयार किया

भारत में हम बचपन से एक शब्द सुनते आ रहे हैं, जिसका नाम है जुगाड़। भारतीय लोग जुगाड़ करने के मामले में सबसे ज्यादा माहिर होते हैं। इसी कड़ी में एक किसान ने जुगाड़ करके एक ऐसा ट्रेक्टर बनाया है, जो कि आजकल चर्चा में है। इस ट्रेक्टर का नाम HE ट्रेक्टर है। बतादें कि यह ट्रेक्टर किसान भाइयों के बजट से में आता है। वहीं, इसको चलाना काफी सरल और सहज होता है।

जैसा कि हम जानते हैं, कि आज के समय में ट्रेक्टर किसानों के लिए किसी मित्र से कम नहीं है। यह खेत के हर तरह के कार्य को बड़ी ही सुगमता से पूरा करने की शक्ति रखता है। परंतु, आज भी भारत में बहुत सारे ऐसे किसान भी हैं, जो कि एक उत्तम खेती करने के लिए पर्याप्त धन तक नहीं जुटा पा रहे हैं। अब ऐसे में वह खेती-किसानी के लिए ट्रेक्टर कैसे खरीद सकते हैं।

संजीत ने जुगाड़ के जरिए बनाया अद्भुत ट्रेक्टर

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि आर्थिक तौर पर कमजोर किसान भाइयों की सहायता करने लिए बिहार के पश्चिम चंपारण के नौतन ब्लॉक के धुसवां गांव के 28 वर्षीय किसान संजीत ने देसी जुगाड़ के जरिए एक बेहतरीन ट्रेक्टर का निर्माण किया है। इससे किसानों की विभिन्न प्रकार की समस्याओं को मिनटों में दूर किया जा सकता है। अब आप यह सोच रहें होंगे कि इसकी कीमत और लागत भी बाजार में मिलने वाले ट्रैक्टर की भाँति ही होगी। परंतु, ऐसी कोई बात नहीं है। यह ट्रैक्टर किसानों के बजट में आता है। साथ ही, इसको बनाने के लिए आपको ज्यादा खर्चा भी नहीं करना पड़ता। दरअसल, यह ट्रैक्टर संजीत ने कबाड़ के इस्तेमाल से तैयार किया है, जिसे चलाने के लिए डीजल-पेट्रोल और बिजली कुछ भी नहीं लगती है। आपको यह केवल साइकिल की भांति ही चलाना होता है।

संजीत ने इस ट्रेक्टर का नाम HE रखा है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि संजीत द्वारा स्वयं के इस कबाड़ से निर्मित ट्रेक्टर का नाम HE रखा है। HE का अर्थ ह्यूमन एनर्जी ट्रेक्टर होता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, संजीत ने अपने इस ट्रेक्टर को निर्मित करने हेतु संजीत को लगभग 1 माह का वक्त लगा। फिलहाल, वह इसको किसानों की मदद के लिए उपयोग कर रहे हैं। बतादें कि संजीत के इस आविष्कार के लिए उन्हें अवार्ड भी प्राप्त हो चुका है।

HE ट्रेक्टर की विशेषताएं

- किसान द्वारा इसमें विभिन्न प्रकार की विशेषताएं दी गई हैं। जो इसको एक बेहतर ट्रेक्टर बनाती हैं।
- इस ट्रेक्टर के एलईडी बल्बों के लिए 5000 एमएएच पावर की एक चार्जेबल बैटरी की व्यवस्था की गई है।
- इसके अतिरिक्त इसमें 4 फॉरवर्ड एवं 1 रिवर्स गियर भी होता है। जो इसको खेत के साथ-साथ सड़कों पर भी आसानी से चलाया जा सकता है।
- इस ट्रेक्टर को कुछ इस प्रकार से तैयार किया गया है, कि यह ट्रैक्टर करीब 600 किलोग्राम तक का वजन आसानी से उठा सकता है।

HE ट्रेक्टर की खासियत

- HE ट्रैक्टर की सबसे अच्छी खासियत यह है, कि इसको चलाने के लिए आपको पेट्रोल-डीजल अथवा बिजली की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इसके लिए आपको अपनी खुद की शक्ति लगानी है, जैसे कि आप साइकिल चलाते समय लगाते हैं।
- यह ट्रैक्टर तकरीबन 5 से 10 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से दौड़ सकता है।
- यह HE ट्रैक्टर सहजता से खेत में 2.5 से 3 इंच गहराई तक मृदा की जुताई करने हेतु समर्थ है।

ट्रैक्टर की कीमत क्या है ?

सोनालिका सिकंदर 745 III ट्रैक्टर की कीमत 6.95 – 7.32 लाख रुपये सीमा के तहत उपलब्ध है। कई स्थानों पर ट्रैक्टर की कीमत में थोड़ा फरक भी देखने को मिलता है

हमारे इस लेख में आपने SONALIKA DI 745 III सिकंदर ट्रैक्टर के नए मॉडल के बारे में जाना। अगर आप खेतीबाड़ी से जुडी जानकारी प्राप्त करना चाहते है तो हमारी वेबसाइट मेरीखेत डॉट कॉम पर जा कर देख सकते है, हमारी साइट पर खेतीबाड़ी और पशुपालन से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारीआपको मिलेंगी। अगर आप इससे जुड़ी वीडियोस देखना चाहते है तो हमारे यूट्यब चैनल मेरीखेती पर जा के देख सकते है।

मौसमी व अन्य कृषि सुझाव

हजारों साल पहले से भारत से वियतनाम पहुँचता रहा है मसाला

शोध रिपोर्ट में शोधकर्ताओं ने कहा है, कि ओसी ईओ में पाए जाने वाले समस्त मसालों की खेती यहां पर नहीं होती होगी। क्योंकि यहां की जलवायु इन मसालों के लिए उपयुक्त नहीं है।

मसालों के बिना हम स्वादिष्ट व्यंजनों की कल्पना तक भी नहीं कर सकते हैं। ये ऐसे खाद्य उत्पाद हैं, जो खाने को स्वादिष्ट और लजीज बनाते हैं। ऐसे भी दुनिया में सबसे ज्यादा मसालों का उत्पादन भारत में होता है। भारत से पूरी दुनिया में मसालों की आपूर्ति होती है। खास बात यह है, कि भारत से विदेशों में मसालों का निर्यात कोई हाल के वर्षों में आरंभ नहीं हुआ। यह सैंकड़ों साल पहले से चलता आ रहा है। साथ ही, अब एक नए शोध से ज्ञात हुआ है, कि मसालों का व्यापार तकरीबन 2,000 साल प्राचीन है।

करी बनाने के लिए मसाला इस्तेमाल किया जाता था

साइंस एडवांसेज में प्रकाशित एक रिपोर्ट में इस बात का प्रसार हुआ है। इस रिपोर्ट में दक्षिण पूर्व एशिया की सबसे पुरानी ज्ञात करी के इस्तेमाल के प्रमाण मिले हैं। विशेष बात यह है, कि भारत के बाहर मसालों के इस्तेमाल का यह सबसे पुराणा साक्ष्य है। शोधार्थियों ने दक्षिणी वियतनाम में खुदाई में निकले मसालों के ऊपर शोध किया है। ये मसालों दक्षिणी वियतनाम स्थित ओसी ईओ पुरातात्विक परिसर में खुदाई के चलते निकले थे। यहां पर आठ अन्य मसालों के इस्तेमाल के भी सुबूत मिले हैं। कहा जा रहा है, कि इन मसालों का इस्तेमाल करी बनाने में किया जाता होगा।

पहले से ही संग्रहालय में उपस्थित थी

शोधकर्ताओं की टीम का शोध प्रारंभ में करी पर केंद्रित नहीं था। इस वजह से टीम ने पत्थर से बने उन यंत्रों का भी विश्लेषण किया, जिनका इस्तेमाल कभी मसाले को पीसने के लिए किया जाता था। विशेष बात यह है, कि ये सारे उपकरण ओसी ईओ साइट से खुदाई में ही निकले हैं। साल 2017 से 2019 तक चली खुदाई के चलते ज्यादातर उपकरण निकले थे। जबकि, कुछ पहले से ही संग्रहालय में उपस्थिति थे।

लगभग 40 उपकरणों का किया विश्लेषण

शोधकर्ताओं की टीम ने ओसीईओ पुरातात्विक परिसर में स्टार्च के दाने की कोशिकाओं के अंतर्गत पाई जाने वाली छोटी संरचनाओं पर भी अध्यन किया। यहां पर टीम ने 40 उपकरणों का विश्लेषण किया, जिसमें फिंगररूट, गैलंगल, जायफल, लौंग, दालचीनी, हल्दी, रेत और अदरक समेत विभिन्न प्रकार के मसाले के अवशेष शम्मिलित हैं। यह समस्त मसाले खुदाई के अंतर्गत ही निकले थे। इससे यह साबित होता है, कि ओसी ईओ पुरातात्विक परिसर में रहने वाले लोग भोजन में मसालों का इस्तेमाल करते होंगे।

मसाले 2000 साल पहले वैश्विक स्तर पर आदान प्रदान की जाने वाली कीमती खाद्य सामग्री थी

साथ ही, शोध रिपोर्ट में शोधकर्ताओं ने बताया है कि ओसी ईओ में पाए जाने वाले समस्त मसालों की खेती यहां पर नहीं होती होगी। क्योंकि यहां की जलवायु इन मसालों के उपयुक्त नहीं है। ऐसी स्थिति में भारत अथवा चीन से इन मसालों का निर्यात हुआ होगा। तब प्रशांत महासागर अथवा हिन्द महासागर को पार कर के ही व्यापारी दक्षिणी वियतनाम पहुंचें होंगे। इससे यह स्पष्ट हो जाता है, कि 2000 साल पहले मसाले वैश्विक स्तर पर आदान-प्रदान की जाने वाली सबसे कीमती खाद्य सामाग्री थी। विशेष बात यह है, कि ओसीईओ में पाए जाने वाले समस्त मसाले इस क्षेत्र में प्राकृतिक तौर पर उपलब्ध नहीं रहे होंगे।

चावल की बेहतरीन पैदावार के लिए इस प्रकार करें बुवाई

धान की बेहतरीन पैदावार के लिए जुताई के दौरान प्रति हेक्टेयर एक से डेढ़ क्विंटल गोबर की खाद खेत में मिश्रित करनी है। आज कल देश के विभिन्न क्षेत्रों में धान की रोपाई की वजह खेत पानी से डूबे हुए नजर आ रहे हैं। किसान भाई यदि रोपाई के दौरान कुछ विशेष बातों का ध्यान रखें तो उन्हें धान की अधिक और अच्छी गुणवत्ता वाली पैदावार मिल सकती है।

अमूमन धान की रोपाई जून के दूसरे-तीसरे सप्ताह से जुलाई के तीसरे-चौथे सप्ताह के मध्य की जाती है। रोपाई के लिए पंक्तियों के मध्य का फासला 20 सेंटीमीटर और पौध की दूरी 10 सेंटीमीटर होनी चाहिए। एक स्थान पर दो से तीन पौधे रोपने चाहिए। धान की फसल के लिए तापमान 20 डिग्री से 37 डिग्री के मध्य रहना चाहिए। इसके लिए दोमट मिट्टी काफी बेहतर मानी जाती है। धान की फसल के लिए पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से और 2 से तीन जुताई कल्टीवेटर से करके खेत को तैयार करना चाहिए। साथ ही, खेत की सुद्रण मेड़बंदी करनी चाहिए, जिससे बारिश का पानी ज्यादा समय तक संचित रह सके।

धान शोधन कराकर खेत में बीज डालें

धान की बुवाई के लिए 40 से 50 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर के अनुसार बिजाई करनी चाहिए। साथ ही, एक हेक्टेयर रोपाई करने के लिए 30 से 40 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। हालांकि, इससे पहले बीज का शोधन करना आवश्यक होता है।

खाद और उर्वरकों का इस्तेमाल किया जाता है

धान की बेहतरीन उपज के लिए जुताई के दौरान प्रति हेक्टेयर एक से डेढ़ क्विंटल गोबर की खाद खेत में मिलाते हैं। उर्वरक के रूप में नाइट्रोजन, पोटाश और फास्फोरस का इस्तेमाल करते हैं।

बेहतर सिंचाई प्रबंधन किस प्रकार की जाए

धान की फसल को सबसे ज्यादा पानी की आवश्यकता होती है। रोपाई के उपरांत 8 से 10 दिनों तक खेत में पानी का बना रहना आवश्यक है। कड़ी धूप होने पर खेत से पानी निकाल देना चाहिए। जिससे कि पौध में गलन न हो, सिंचाई दोपहर के समय करनी चाहिए, जिससे रातभर में खेत पानी सोख सके।

कीट नियंत्रण किस प्रकार किया जाता है

धान की फसल में कीट नियंत्रण के लिए जुताई, मेंड़ों की छंटाई और घास आदि की साफ सफाई करनी चाहिए। फसल को खरपतवारों से सुरक्षित रखना चाहिए। 10 दिन की समयावधि पर पौध पर कीटनाशक और फंफूदीनाशक का ध्यान से छिड़काव करना चाहिए।

IFFCO

पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

किसानों की खुशहाली की पहचान

इफको नैनो डीएपी तरल

50 किलो डीएपी का दम अब सिर्फ आधा लीटर की बोतल में

लौकी की खेती कैसे की जाती है जानिए सम्पूर्ण जानकारी के बारे में

लौकी भारत में सब्जी के रूप में बड़े पैमाने पर उगाई जाती है और इसके फल साल भर उपलब्ध रहते हैं। लौकी नाम फल के बोतल जैसे आकार और अतीत में कंटेनर के रूप में इसके उपयोग के कारण पड़ा। नरम अवस्था में फलों का उपयोग पकी हुई सब्जी के रूप में और मिठाइयाँ बनाने के लिए किया जाता है। परिपक्व फलों के कठोर छिलकों का उपयोग पानी के जग, घरेलू बर्तन, मछली पकड़ने के लिए जाल के रूप में किया जाता है। सब्जी के रूप में यह आसानी से पचने योग्य है। इसकी तासीर ठंडी होती है और कार्डियोटोनिक गुण के कारण मूत्रवर्धक होता है।

लोकि से कई रोग जैसे की कब्ज, रतौंधी और खांसी को नियंत्रित किया जा सकता है। पीलिया के इलाज के लिए पत्ते का काढ़ा बनाकर सेवन किया जाता है। इसके बीजों का उपयोग जलोदर रोग में किया जाता है।

लौकी की फसल के लिए उपयुक्त जलवायु

लौकी एक सामान्य गर्म मौसम की सब्जी है। खरबूजा और तरबूज की तुलना में लोकि की फसल ठंडी जलवायु को बेहतर सहन करती है। लोकि की फसल पाले को बर्दाश्त नहीं कर सकती। अच्छी जल निकास वाली उपजाऊ गाद दोमट होती है।

इसकी खेती के लिए गर्म और नम जलवायु अनुकूल होती है। रात का तापमान 18- 22°C और दिन का तापमान 30-35 इसकी उचित वृद्धि और उच्च फल के लिए इष्टतम होता है।

खेत की तैयारी

फसल की बुवाई से पहले खेत को तैयार किया जाता है। खेत को प्लॉव से एक बार गहरी जुताई करके तैयार करें उसके बाद इसके बाद 2 बार हैरो की मदद से खेत को अच्छी तरह से जोते।

आखरी जुताई के समय खेत में 4 टन प्रति एकड़ की दर से गोबर की खाद या कम्पोस्ट को अच्छी तरह मिट्टी में मिला दें।

बीज की बुवाई

यदि आप चाहे तो सीधे बीजो को खेत में लगाकर भी इसकी खेती कर सकते है | इसके लिए आपको तैयार की गयी नालियों में बीजो को लगाना होता है| बीजो की रोपाई से पहले तैयार की गयी नालियों में पानी को लगा देना चाहिए उसके बाद उसमे बीज रोपाई करना चाहिए।

लौकी की जल्दी और अधिक पैदावार के लिए इसके पौधों को नर्सरी में तैयार कर ले फिर सीधे खेत में लगा दे। पौधों को बुवाई के लगभग 20 से 25 दिन पहले तैयार कर लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त बीजो को रोग मुक्त करने के लिए बीज रोपाई से पहले उन्हें गोमूत्र या बाविस्टीन से उपचारित कर लेना चाहिए। इससे बीजो में लगने वाले रोगो का खतरा कम हो जाता है, तथा पैदावार भी अधिक होती है।

रोपाई का समय और तरीका

बारिश के मौसम में इसकी खेती करने के लिए बीजो की जून के महीने में रोपाई कर देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त पहाड़ी क्षेत्रों में इसकी रोपाई को मार्च या अप्रैल के महीने में करना चाहिए।

समतल भूमि में की गयी लौकी की खेती को किसी सहारे की जरूरत नहीं होती है | ऐसी स्थिति में इसकी बेल जमीन में फैलती है, किन्तु जमीन से ऊपर इसकी खेती करने में इसे सहारे की जरूरत होती है। इसके लिए खेत में 10 फ़ीट की दूरी पर बासो को गाड़कर जल बनाकर तैयार कर लिया जाता है, जिसमे पौधों को चढ़ाया जाता है। इस विधि को अधिकतर बारिश के मौसम में अपनाया जाता है।

फसल में खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार नियंत्रण करने के लिए फसल में समय समय पर निराई गुड़ाई करते रहे ताकि फसल को खरपतवार मुक्त रखा जा सकें।

रासायनिक तरीके से खरपतवार पर नियंत्रण के लिए ब्यूटाक्लोर का छिड़काव जमीन में बीज रोपाई से पहले तथा बीज रोपाई के तुरंत बाद करनी चाहिए| खरपतवार के नियंत्रण से पौधे अच्छे से वृद्धि करते है, तथा पैदावार भी अच्छी होती है |

फसल में उर्वरक और पोषक तत्व प्रबंधन

फसल से उचित उपज प्राप्त करने के लिए 40 किलोग्राम नाइट्रोजन, 15 – 20 किलोग्राम फॉस्फोरस और 20 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ की दर से खेत में डालें।

लौकी के प्रमुख रोग और उनका नियंत्रण

- लौकी (घीया) एक प्रमुख फलीय सब्जी है जो भारतीय खाद्य पदार्थों में आमतौर पर प्रयोग होती है। यह कई प्रमुख रोगों के प्रभावित हो सकती है, जिनमें से कुछ मुख्य हैं:
- लौकी मोजैक्यूलर वायरस रोग (LUFFA MOSAIC VIRUS DISEASE):
- इस रोग में पत्तियों पर पीले या हरे रंग के पट्टे दिखाई देते हैं। यह रोग पौधों की वृद्धि और उत्पादन पर असर डालता है।
- नियंत्रण के लिए, स्वस्थ बीजों का उपयोग करें और बीमार पौधों को नष्ट करें।
- लौकी मॉसेक वायरस रोग (LUFFA MOSAIC VIRUS DISEASE):
- इस रोग में पत्तियों पर सफेद या हरे रंग के दाग दिखाई देते हैं। यह पौधों की वृद्धि पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।
- नियंत्रण के लिए, स्वस्थ बीजों का उपयोग करें और संक्रमित पौधों को नष्ट करें।
- दाग रोग (POWDERY MILDEW): यह रोग पात्र प्रभावित करके पौधों पर धूल की तरह सफेद दाग उत्पन्न करता है। इसके नियंत्रण के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाएं:
- दाग रोग से प्रभावित पौधों को हटाएं और उन्हें जला दें।
- पौधों की पर्यावरण संगठना को सुधारें, उचित वेंटिलेशन प्रदान करें और पानी की आपूर्ति को नियमित रखें।
- दाग रोग के लिए केमिकल फंगिसाइड का उपयोग करें, जैसे कि सल्फर युक्त फंगिसाइड।
-

लौकी के फल की तुड़ाई और पैदावार

फसल की बुवाई और रोपाई के लगभग 50 दिन बाद लौकी उड़ाई के लिए तैयार हो जाती है। जब लौकी सही आकर की दिखने लगे तब उसकी तुड़ाई कर ले। तुड़ाई करते समय किसी धारदार चाकू या दराती का इस्तेमाल करें। लौकी को तोड़ते समय फल के ऊपर थोड़ा सा डंठल छोड़ दें जिससे फल कुछ समय तक फल ताजा रहें। लौकी की तुड़ाई के तुरंत बाद पैक कर बाजार में बेचने के लिए भेज देना चाहिए | फलो की तुड़ाई शाम या सुबह दोनों ही समय की जा सकती है। एक एकड़ भूमि से लगभग 200 क्विंटल का उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

चाहिए संतुलित पोषण और खाद
बस यारा को रखना याद

टमाटर, अदरक के साथ साथ इन सब्जियों के भी बढ़ गए दोगुने दाम

टमाटर, अदरक के साथ साथ इन सब्जियों के भी बढ़ गए दोगुने दाम

भारत की राजधानी दिल्ली में टमाटर अब 200 से भी ज्यादा हो गया है। इसी प्रकार अदरक, भिंडी एवं शिमला मिर्च की कीमतें भी बढ़ चुकी हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं, कि मानसून के दस्तक देते ही महंगाई रॉकेट की गति से बढ़ गई है। बतादें कि टमाटर के पश्चात वर्तमान में अदरक, प्याज और लहसुन समेत विभिन्न सब्जियां काफी महंगी हो गई हैं। इसकी वजह से आम जन मानस की थाली से विटामिन्स से भरपूर डिशेज विलुप्त हो गई हैं। महंगाई का कहर यहां तक है, कि 30 से 40 रुपए में उपलब्ध होने वाली हरी-सब्जियां ही खरीदना बंद कर दिया है। अब उसके स्थान पर वह चना सोयाबीन और आलू की सब्जियाँ खाकर अपने पेट का भरण पोषण करते हैं।

टमाटर की कीमतें 200 से भी ऊपर हुई

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में टमाटर 200 रुपये किलो से भी अधिक महंगा हो गया है। अदरक की तो चर्चा करना ही छोड़ दीजिए। यह 320 रुपये किलो हो गया है। जनता भाव सुनकर ही सब्जियों की दुकान से दूरियां बना ले रहे हैं। विशेष बात यह है, कि दिल्ली में इतनी महंगी सब्जियां तब है, जबकि यहां पर उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब और उत्तराखंड से खाद्य पदार्थों की आपूर्ति होती है।

धनिया हुआ 100 के भाव

ओखला सब्जी मंडी में टमाटर के अतिरिक्त बाकी सब्जियों की कीमतों में दोगुना से ज्यादा की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। अगर हम बात दिल्ली के रिटेल मार्केट की करें, तो यहां पर सब्जियों की कीमत सांतवें आसमान पर पहुंच गई है। टमाटर 220 रुपए तो शिमला मिर्च 100 से 110 रुपए किलो बिक रही है। यही स्थिति धनिया के साथ भी है। 40 से 50 रुपये किलो खुदरा मार्केट में बिकने वाले धनिया की कीमत 100 रुपए तक पहुँच चुकी है।

इन सब्जियों की बढ़ी कीमत

इसी प्रकार खीरे की कीमत में भी आग लग चुकी है। जो खीरा एक महीने पहले तक 20 रुपये किलो था, अब इसकी कीमत में दोगुना से भी ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। लोगों को एक किलो खीरा खरीदने पर 40 से 50 रुपये खर्च करने पड़ रहे हैं। इसी प्रकार भिंडी भी 50 रुपये किलो हो गई है। विशेष बात यह है, कि फूलगोभी तीन गुना महंगा हो गया है। जानकारी के लिए बतादें, कि 30 से 35 दिन पहले तक फूलगोभी 40 रुपये किलो था। वर्तमान में फूलगोभी कीमत 120 रुपये किलो हो गई है। इस कड़ी में 80 रुपये किलो नींबू 100 रुपये किलो हरी मिर्च और 60 रुपये किलो करेला बिक रहा है।

किसान भाई खरीफ सीजन में इस तरह करें मूंग की खेती

मूँग एक प्रमुख दलहनी फसल होने की वजह से यह एक उत्तम आय का माध्यम है। साथ ही, मूँग की फसल को पोषण के मामले में काफी ज्यादा अच्छा माना जाता है। भारत के अंदर खेती करने के लिये तीन फसल चक्र अपनाये जाते हैं, जिसमें रबी की फसल, खरीफ की फसल और जायद की फसल शम्मिलित हैं। किसान भाइयों ने रबी फसल की कटाई कर ली है एवं खरीफ फसल के लिये खेतों की तैयारी का काम चल रहा है। जो भी किसान भाई खरीफ सीजन में अच्छा मुनाफा अर्जित करना चाहते हैं, वे अपने खेतों में पलेवा, बीजों का चुनाव, सिंचाई की व्यस्था और खेतों में बाड़बंदी की तैयारी कर लें।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निर्देशानुसार यह समय मूंग की खेती करने के लिये काफी ज्यादा अनुकूल है। मूंग एक प्रमुख दलहनी फसल है, जिसकी खेती कर्नाटक, उड़ीसा, तमिलनाडु, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में की जाती है। प्रमुख दलहनी फसल होने की वजह मूंग की फसल एक बेहतरीन कमाई का जरिया तो है ही, साथ में पोषण के मामले में मूंग की फसल को काफी महत्वपूर्ण माना जाता है।

मूंग की फसल हेतु खेत की तैयारी

अगर किसान इस खरीफ सीजन में मूंग की फसल लगाना चाह रहे हैं, तो वो खेतों में 2-3 बार बारिश होने पर गहरी जुताई का कार्य कर लें। इससे मृदा में छिपे कीड़े निकल जाते हैं और खरपतवार भी खत्म हो जाते हैं। गहरी जुताई से फसल की पैदावार बढ़ती है और स्वस्थ फसल लेने में भी सहायता मिलती है। किसान ध्यान रखें, कि गहरी जुताई करने के पश्चात खेत में पाटा चलाकर उसे एकसार कर लें। इसके पश्चात खेत में गोबर की खाद और आवश्यक पोषक तत्व भी मिला लें, जिससे बेहतरीन पैदावार प्राप्त हो सके।

मूंग की फसल हेतु बीजों का चयन

जून के अंतिम सप्ताह से लेकर जुलाई के प्रथम सप्ताह तक किसान खरीफ मूंग की बुवाई कर सकते हैं।

बुवाई के लिये किसानों को बेहतरीन गुणवत्ता वाले उपयुक्त बीजों का ही चयन करना चाहिये, इससे मूंग की फसल में कीड़े एवं बीमारियां लगने की संभावना काफी कम रहती है।

मूंग की फसल की बुवाई

खेत में मूंग के बीज की बुवाई करने से पहले उनका बीजशोधन अवश्य करना चाहिए। बतादें कि इससे स्वस्थ और रोगमुक्त फसल लेने में विशेष सहायता मिलती है। मूंग के बीजों को कतारों में ही बोयें, जिससे निराई-गुड़ाई करने में काफी सुगमता रहे और खरपतवार भी आसानी से निकाले जा सकें।

मूंग की फसल में सिंचाई की व्यवस्था

हालांकि, मूंग की फसल के लिये अत्यधिक जल की आवश्यकता नहीं पड़ती है। 2 से 3 बरसातों में ही फसल को अच्छी खासी नमी मिल जाती है। परंतु, फिर भी फलियां बनने के दौरान खेतों में हल्की सिंचाई कर देनी चहिये। शाम के वक्त हल्की सिंचाई करने पर मिट्टी को नमी मिल जाती है। इस बात का खास ख्याल रखें कि फसल पकने के 15 दिन पहले ही सिंचाई का काम बंद कर दें।

मूंग की फसल में कीटनाशक और खरपतवार नियंत्रण

दूसरी फसलों की तरफ मूंग की फसल में भी कीट-रोग लगने की संभावना बनी रहती है। इस वजह से समय-समय पर निराई-गुड़ाई का भी कार्य करते रहें। खेतों में उगे खरपतवारों को उखाड़कर जमीन के अंदर दबा दें। साथ ही, रोगों से भी फसल की निगरानी करते रहें।

मूंग की फसल की कटाई-गहाई

खरीफ मूंग की फसल कम समय में पकने वाली फसल है। यह सामान्य तौर पर 65-70 दिनों के अंदर पककर तैयार हो जाती है। जून-जुलाई के मध्य बोई गई फसल सितंबर-अक्टूबर के मध्य पककर तैयार हो जाती है। मूंग की फलियां हरे रंग से भूरे रंग की होने लग जाऐं तो कटाई-गहाई का कार्य वक्त रहते कर लेना चाहिये।

इस देश में सबसे ज्यादा वर्टिकल फार्मिंग की जा रही है

इस देश में सबसे ज्यादा वर्टिकल फार्मिंग (VERTICAL FARMING) की जा रही है

आजकल लोग फसल खेत में उगाने के साथ साथ दीवारों पर भी खेती करने लग गए हैं। जी हाँ इस प्रकार की खेती को विज्ञान की भाषा में वर्टिकल फार्मिंग (VERTICAL FARMING) बोलते हैं। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि इस तरह की खेती इजराइल में ग्रीनवॉल नाम की कंपनी काफी बड़े पैमाने पर करती है। दरअसल, ग्रीनवॉल के अलावा भी विश्व भर में विभिन्न कंपनी इस तरह की वर्टिकल फार्मिंग से जुड़ रही हैं।

सामान्य तौर पर हम सबने हमेशा जमीन के ऊपर ही किसानों को खेती करते हुए देखा है। लेकिन हां, कुछ लोग अपनी बालकनी और छत पर गमलों के सहारे सब्जियों की खेती करते जरूर देखे हैं। हालांकि, वो भी एकसार जमीन पर ही होती है। परंतु, अगर हम कहें की विश्व में बहुत सारी जगह लोग दीवारों पर खेती कर रहे हैं, तो क्या आप मानोगे? सबसे खास बात यह है, कि ये लोग दीवारों पर हर प्रकार की फसल पैदा कर रहे हैं। इसमें सब्जियों से लेकर गेहूं और धान तक शम्मिलित हैं। चलिए आपको बताते हैं, कि ऐसा कैसे और क्यों हो रहा है।

इजराइल ने दीवारों पर शुरू की खेती

दीवारों पर इजराइल ने खेती शुरू की है। विश्व में एकमात्र यहूदी देश इजरायल के विषय में सब जानते हैं, कि वो तकनीक के संबंध में सबसे आगे है। वहां पर इस प्रकार से चीजों को विकसित किया जाता है, जो दशकों उपरांत इंसानों की आवश्यकता बन जाते हैं। दरअसल, उन्होंने दीवारों पर खेती जमीन के अभाव की वजह से चालू की थी। जिस प्रकार से दुनिया की जनसँख्या बढ़ रही है, उसे देख कर लगता है, कि आगामी समय में इंसानों के लिए धरती की जमीन इतनी कम हो जाएगी कि खेती के लिए जगह बचेगी ही नहीं।

इस तरह की खेती किसने शुरू की है

दीवारों पर की जाने वाली खेती को विज्ञान की भाषा में वर्टिकल फार्मिंग (Vertical farming) कहा जाता है। इजरायल में वर्टिकल फार्मिंग (Vertical farming) बड़े पैमाने पर ग्रीनवॉल नाम की एक कंपनी करती है। इस कंपनी का कहना है, कि उसके इस प्रोजेक्ट में विश्वभर की बड़ी-बड़ी कंपनियां जुड़ रही हैं। यहां तक की गूगल और फेसबुक जैसी कंपनियां भी अब इस कारोबार में लग चुकी हैं।

दीवारों पर वर्टिकल फार्मिंग कैसे की जाती है

दरअसल, वर्टिकल फार्मिंग (Vertical farming) करने के लिए सबसे पहले छोटे-छोटे यूनिट्स में पौधो को लगाया जाता है। उसके बाद उन्हें वर्टिकल तरीके से दीवारों पर स्थापित कर दिया जाता है। बहुत बारी ये खेती पहले से बनी दीवारों पर होती है तो कई बारी इसके लिए अलग से दीवारें निर्मित की जाती हैं। तैयार की गई इन सभी दीवारों को जमीन पर इस हिसाब से सेट किया जाता है कि यह क्षतिग्रस्त ना हों। इनकी सिंचाई का प्रबंधन भी अलग ढ़ंग से किया जाता है, इसके लिए पाइपलाइन्स की भी सहायता ली जाती है। बतादें, कि आजकल इजरायल के साथ-साथ वर्टिकल फार्मिंग (Vertical farming) की सहायता से खेती चीन, यूरोप और अमेरिका में भी हो रही है।

सरकारी नीतियां

केंद्र सरकार द्वारा नॉन बासमती चावल के निर्यात पर बैन लगाने से अमेरिका में हलचल

केंद्र सरकार द्वारा भारत की जनता को सहूलियत प्रदान करने के लिए विगत सप्ताह एक निर्णय लिया गया। वर्तमान में इस निर्णय का प्रभाव अमेरिका के सुपरमार्केट्स में दिखना चालू हो चुका है। केंद्र सरकार ने चावल की कीमतों में आ रहे उछाल पर रोक लगाने के उद्देश्य से विगत सप्ताह नॉन बासमती चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया। अब सरकार के इस निर्णय का प्रभाव अमेरिका में दिखना चालू हो गया। दरअसल, चावल निर्यात प्रतिबंधित होने से विश्वभर के बहुत सारे देशों में किल्लत उत्पन्न हो सकती है। लिहाजा इनकी कीमतें भी बढ़ जाऐंगी। ऐसी स्थिति में अमेरिका के लोग चावल खरीदने के लिए सुपरमार्केट्स के बाहर कतार लगाकर खड़े हो रहे हैं।

अमेरिका के सुपरमार्केट में चावल खरीदने के लिए भीड़ जुट रही है। भारत चावल का सबसे बड़ा निर्यातक देश माना जाता है। वर्तमान में भारत सरकार ने देश के अंदर चावल की कीमतें कम करने के लिए यह फैसला लिया है। अब इस फैसले का असर अमेरिका ही नहीं बल्कि विश्व के विभिन्न देशों में देखने को मिल सकता है।

भारत सबसे ज्यादा इन देशों में चावल का निर्यात करता है

भारत नॉन बासमती चावल का निर्यात बहुत सारे देशों में करता है। इनमें अमेरिका के अतिरिक्त नेपाल, फिलीपींस और कैमरुन जैसे देश भी शम्मिलित हैं।

एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की आधी जनसंख्या का मुख्य भोजन चावल को ही माना जाता है। वर्तमान में सामान्य बात यह है, कि एक्सपोर्ट न होने की स्थिति में इन देशों में चावल की कमी होगी। माँग एवं आपूर्ति के खेल के चक्कर में इनके भाव बढ़ने निश्चित हैं।

भारत ने नॉन बासमती चावल के निर्यात पर बैन लगा रखा है

अमेरिका में काफी बड़ी संख्या में भारतीय लोग रहते हैं। विगत सप्ताह में भारत ने जब नॉन बासमती चावल के निर्यात पर बैन लगाने का फैसला किया था, तो अमेरिका के सुपरमार्केट्स में चावल की कमी दर्ज हो गई थी। दरअसल, लोग अधिक से अधिक मात्रा में चावल खरीदने के लिए काफी ज्यादा भीड़ लगा रहे हैं।

यह बहुत ही आम बात है, कि जब विश्व का सबसे ज्यादा राइस एक्सपोर्टर देश चावल के निर्यात को रोक देगा तो मांग और आपूर्ति निश्चित रूप से प्रभावित होगी। इससे चावल की विदेशो में कीमतें काफी बढ़ जाऐंगी।

अमेरिका में किस वजह से मचा हड़कंप

अमेरिका के अंदर काफी बड़ी तादाद में भारतीय रहते हैं। पिछले हफ्ते भारत सरकार ने जब ये फैसला किया तो अमेरिकी की कुछ जगहों पर नॉन बासमती चावल की आपूर्ति में कमी आने लगी। लिहाजा लोग ज्यादा से ज्यादा चावल खरीदने के लिए अमेरिका के सुपरमार्केट्स पर भीड़ लगाने लग रह हैं। इन्हें पता है, कि अब चावल की कीमतें अभी और बढ़ जाऐंगी। यहां के सुपरमार्केट्स में लोगों के मध्य चावल खरीदने की होड़ सी लग चुकी है।

भारत सरकार ने यह फैसला क्यों लिया है

भारत में बीते कुछ दिनों से टमाटर, अदरक जैसी सब्जियों की कीमतों में निरंतर बढ़ोत्तरी हुई है। टमाटर और सब्जियों के उपरांत चावल के भाव भी निरंतर बढना चालू हो गए हैं। विशेष रूप से नॉन बासमती चावल के भाव में 10 से 18 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी देखने को मिली है। ऐसे में सरकार ने यह निर्धारित किया है, कि इसके निर्यात पर प्रतिबंध लगाया जाए जिससे कि कीमतों में और इजाफा ना हो सके।

यह राज्य सरकार बाढ़ पीड़ित किसानों को 15 हजार प्रति एकड़ मुआवजा प्रदान करेगी

बाढ़ में किसानों के फसल को होने वाले नुकसान के लिए राज्य सरकारें मुआवजा दे रही हैं, ताकि उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर हो सके। भारत में विगत कई दिनों से भारी बारिश की वजह फसलों को काफी क्षति पहुंची है। ऐसे में विभिन्न राज्य सरकारें अपने किसानों के फायदे के लिए कोई ना कोई कदम उठा रही हैं।

हरियाणा राज्य की सरकार ने भी एक ऐसा ही कदम उठाया है। सरकार के अनुसार, इस भारी बारिश से उत्पन्न हुई बाढ़ में यदि किसी किसान की फसल 100 प्रतिशत तक खराब हो गई है, तो उसे 15000 रुपये प्रति एकड़ की दर से मुआवजा प्रदान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त कम एकड़ में बर्बाद हुई फसलों को उसके अनुसार मुआवजा प्रदान किया जाएगा।

हजारों एकड़ में किसानों की फसल बर्बाद

हरियाणा सरकार द्वारा जारी किए गए आंकड़े के अनुसार, राज्य में बाढ़ से अब तक तकरीबन 18000 से अधिक एकड़ की फसल बर्बाद हो चुकी है। राज्य के लगभग 1353 गांवों में जलभराव हो गया और अब तक कुल 35 से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। राज्य सरकार के अनुसार, जिन जगहों पर फसलों को दोबारा लगाने की गुंजाइश है, वहां के किसानों के लिए भी अलग से मुआवजे का इंतजाम किया गया है। सरकार का यह भी कहना है, कि इस बाढ़ के चलते जिसके घर के किसी भी व्यक्ति की जान गई है तो उनके परिजनों को 4 लाख रुपये के मुआवजे का भी इंतजाम किया जायेगा।

मुआवजा प्राप्त करने के लिए इस तरह क्लेम करें

अगर आपकी फसल को इस बाढ़ से काफी क्षति पहुंची है, तो मुआवजे के लिए आप राज्य सरकार द्वारा जारी किए गए ई-क्षतिपूर्ति पोर्टल पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। आपके आवेदन के उपरांत दिए गए विवरण का प्रमाणीकरण किया जाएगा और फिर एक वेरिफिकेशन के बाद ही मुआवजे की धनराशि आपके बैंक खाते में हस्तांतरित कर दी जाएगी। इसके अतिरिक्त सरकार ने डिजास्टर मैनेजमेंट फंड से बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के जानवरों के रख-रखाव के लिए भी मुआवजा देने का निर्णय लिया है। पशुओं को इस बरसात के सीजन में कोई बीमारी ना लग पाए इसके लिए 50 लाख पशुओं के टीकाकरण का भी इंतजाम किया जा रहा है।

भारत सरकार बंजर जमीन पर अंजीर की खेती के लिए 50 प्रतिशत अनुदान प्रदान कर रही है

किसानों के हित में केंद्र और राज्य सरकार अपने अपने स्तर से किसानो की मदद करती रहती हैं। इसी कड़ी में भारत सरकार की तरफ से अंजीर की खेती को प्रोत्साहन देने के लिए 50 प्रतिशत तक का अनुदान प्रदान कर रही है। आप भी इसका लाभ उठा सकते हैं। भारत सरकार किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृण बनाने के लिए सदैव प्रयासरत रहती है। सरकार किसान भाइयों को परंपरागत फसलों की पैदावार के साथ-साथ व्यापारिक फसलों की खेती के लिए भी प्रोत्साहित करती रहती है। इसी को देखते हुए भारत सरकार द्वारा भारत में अंजीर की पैदावार को बढ़ाने के लिए इसकी खेती को महत्व दे रही है। इससे भारत में अंजीर की पैदावार तो बढ़ेगी ही इसके साथ-साथ किसानों की आर्थिक स्थिति भी अच्छी होगी।

अंजीर की खेती से किसानों को कितना मुनाफा हो रहा है

अंजीर की खेती कर किसान भाई अच्छा-खासा मुनाफा अर्जित कर सकते हैं। बतादें, कि एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के खेत में 300 से अधिक अंजीर के पौधे लगाए जाते हैं। इस दौरान बाजार में एक किलो अंजीर का भाव 600 से 900 रुपए प्रति किलोग्राम तक है। इससे किसान भाई सुगमता से साल भर में 20 से 22 लाख रुपए तक की आमदनी कर सकते हैं।

अंजीर की खेती करने का तरीका क्या होता है

अंजीर की खेती जुलाई एवं अगस्त माह में की जाती है। इसकी रोपाई के लिए कम पानी की आवश्यकता पड़ती है। इसके पौधों के मध्य का फासला 15 से 20 सेंटीमीटर तक रहता है। आप इसकी देशी खाद एवं उर्वरक के उपयोग से अच्छी पैदावार कर सकते हैं। इसके पौधे को रोपाई के एक से दो हफ्ते के उपरांत सिंचाई की जरूरत पड़ती है।

जानें सरकार इसके लिए कितना अनुदान मुहैय्या करा रही है

केंद्र सरकार राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अंतर्गत किसानों का अंजीर की खेती में आने वाले खर्चे पर 50 प्रतिशत का अनुदान प्रदान कर रही है। राज्य सरकारें अपने प्रदेश की भूमि, जलवायु और मौसम के आधार पर किसानों को इसकी खेती पर 50 प्रतिशत अथवा उससे ज्यादा की धनराशि का अनुदान मुहैय्या करा रही है।

इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश सरकार राज्य की बंजर पड़ी जमीनों को पुनः खेती के लायक बनाने का निर्णय लिया है। सरकार किसानों को बंजर पड़ी इन जमीनों पर अंजीर की खेती करने वाले किसानों को उनकी लागत का 50 फीसद से ज्यादा का अनुदान देने का निर्णय लिया गया है। प्रदेश में बंजर पड़ी भूमि का क्षेत्रफल काफी अधिक बढ़ता जा रहा है। ऐसी स्थिति में राज्य सरकार का यह निर्णय खेती योग्य भूमि का रकबा बढ़ाऐगा। भारत में अंजीर की खेती कर्नाटक, महाराष्ट्र, राजस्थान, हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात और उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में की जाती है।

योगी सरकार ने मुख्यमंत्री खेत सुरक्षा योजना के लिए 75 से 350 करोड़ का बजट तय किया

लोकसभा चुनाव से पूर्व उत्तर प्रदेश के किसानों के लिए योगी सरकार ने महत्वपूर्ण योजना लागू की है। यह योजना किसानों की एक बड़ी समस्या का समाधान करेगी। योगी सरकार अभी तक बुंदेलखंड में लागू सोलर फेंसिंग योजना को संपूर्ण राज्य में मुख्यमंत्री खेत सुरक्षा योजना के रूप में लागू करने की तैयारी कर रही है।

गौरतलब कि निराश्रित पशुओं की समस्या को लेकर विपक्ष समय-समय पर सरकार पर हमले करता रहा है। पिछले विधानसभा चुनाव में भी यह मुद्दा बना था। तब भाजपा के लिए प्रचार करने आए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनावी मंच से यह आश्वासन दिया था कि राज्य सरकार इस समस्या से निपटने का इंतजाम करेगी।

यूपी में सोलर फेंसिंग योजना जारी है

बुंदेलखंड में निराश्रित पशुओं की समस्या को देखते हुए वहां बुंदेलखंड पैकेज के अंतर्गत सोलर फेंसिंग योजना लागू की गई है। सोलर फेंसिंग में किसानों की फसल को पशुओं से सुरक्षित रखने के लिए खेतों को बाड़ से घेरा जाता है। बाड़ में सौर ऊर्जा के जरिए से 12 वोल्ट का करेंट प्रवाहित होता है। इससे केवल पशुओं को झटका लगता है, उन्हें कोई हानि नहीं पहुंचती है। पशु के बाड़ से टकराने पर हल्के करंट के साथ सायरन की आवाज भी होती है। इससे मवेशी और जंगली जानवर जैसे कि नीलगाय, सुअर, बंदर आदि खेत मे खड़ी फसल को क्षति नहीं पहुंचा पाऐंगे।

योजना का बजट 350 करोड़ रुपये है

मुख्यमंत्री खेत सुरक्षा योजना को संपूर्ण प्रदेश में राज्य सरकार की योजना के तौर पर लागू करने की तैयारी है। योजना के लिए प्रस्तावित बजट 75 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 350 करोड़ रुपये कर दिया गया है। इसके लिए सरकार लघु-सीमांत किसानों को प्रति हेक्टेयर खर्चा का 60 प्रतिशत अथवा 1.43 लाख रुपये का अनुदान भी देगी। कृषि विभाग इस योजना का ड्राफ्ट तैयार कर चुका है। जल्दी ही इस योजना को कैबिनेट से स्वीकृति दिलाने की तैयारी है। कैबिनेट की मंजूरी के पश्चात इसे पूरे प्रदेश में लागू किया जाएगा।

चारागाहों को कब्जों से मुक्त कराने हेतु भी अभियान चल रहा है

पशु खेत में खड़ी फसल का नुकसान तब ज्यादा करते हैं, जब उनको अपने आसपास खाने के लिए कुछ नहीं मिलता है। अगर चारागाह हों तो मवेशी खेतों की ओर नहीं जाएंगे। चरागाहों को कब्जों से मुक्त कराने हेतु पशुपालन और दुग्ध विकास विभाग 11 जुलाई से अभियान संचालित कर रहा है, तो 25 अगस्त तक चलेगा।

सरकार अब 70 रुपए किलो बेचेगी टमाटर

सरकार अब 70 रुपए किलो बेचेगी टमाटर

भारत की राजधानी दिल्ली समेत विभिन्न राज्यों में टमाटर का भाव 200 रुपये से 250 रुपये किलो तक पहुँच गया है। साथ ही, चंडीगढ़ में लोगों को एक किलो टमाटर खरीदने के लिए 300 रुपये से भी ज्यादा खर्च करने पड़ रहे हैं।

भारत में महंगाई के चलते आम से लेकर खास लोगों तक की रसोई का बजट बिगड़ गया है। बतादें कि करैला, धनिया, हरी मिर्च, शिमला मिर्च, भिंडी और लौकी समेत समस्त प्रकार की हरी सब्जियां महंगी हो गई हैं। परंतु, सबसे अधिक टमाटर की कीमत में आग लगी हुई है। महंगाई का कहर इतना है, कि टमाटर का भाव 250 रुपये किलो से भी ऊपर चला गया है। दिल्ली- एनसीआर सहित विभिन्न राज्यों में टमाटर की कीमत 200 रुपये से 250 रुपये किलो पर पहुँच चुकी है। साथ ही, चंडीगढ़ में लोगों को एक किलो टमाटर खरीदने के लिए 300 रुपये से भी ज्यादा रुपये का खर्चा करना पड़ रहा है। यहां पर टमाटर 350 रुपये किलो तक बिक रहा है।

अब से 70 रूपए किलो बिकेगा टमाटर

हालांकि, महंगाई पर लगाम लगाने के लिए केंद्र सरकार के समेत राज्य सरकारें भी पूरा प्रयास कर रही हैं। लेकिन कीमतों में गिरावट आने की कोई आशा नजर नहीं दिखाई दे रही है। ऐसी स्थिति में केंद्र सरकार की एजेंसी नाफेड ने खुद ही दिल्ली, नोएडा और लखनऊ समेत भारत की बहुत सारे शहरों में 80 रुपये किलो टमाटर बेचना चालू कर दिया है। परंतु, वर्तमान में लोग 80 रुपये किलो से भी कम भाव पर सरकारी स्टॉल से टमाटर खरीद सकेंगे। नाफेड ने घोषणा की है, कि वह 20 जुलाई से 70 रुपये किलो के रेट से टमाटर बेचेगा। जिससे कि महंगाई पर रोकथाम लगाई जा सके।

टमाटर के बढ़ते भाव पर लगेगी रोक

जानकारों का कहना है, कि केंद्र सरकार ने यह ऐलान टमाटर के भाव में आ रही कमी के ट्रेंड को देखते हुए किया है। गुरुवार से भारत के विभिन्न शहरों में नाफेड 70 रुपये किलो तक टमाटर बेचेगा। मुख्य बात यह है, कि सस्ती दर पर टमाटर बिक्री के लिए केंद्र सरकार के डिपार्टमेंट ऑफ कंज्यूमर अफेयर्स कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश से टमाटर की खरीदारी करेगा। सरकार का मानना है कि ऐसा करने से उत्तर भारत के राज्यों में टमाटर की बढ़ती कीमतों पर ब्रेक लगेगा।

नाफेड अब 70 रुपये किलो बेचेगा टमाटर

बता दें कि केंद्र सरकार की एजेंसी नाफेड ने पहले दिल्ली-एनसीआर में विभिन्न स्थानों पर मोबाइल वैन के माध्यम से 90 रुपये किलो टमाटर बेचना चालू किया था। इसके पश्चात 16 जुलाई को नाफेड ने 10 रुपये किलो टमाटर सस्ता कर दिया और 80 रुपये किलो बेकना शुरू कर दिया। फिलहाल, नाफेड लखनऊ और पटना में विभिन्न स्थानों पर 80 रुपये किलो टमाटर बेक रहा है। नाफेड कल से 70 रुपये किलो टमाटर बेचेगा।

MASSEY FERGUSON
7250 DI
46
HP
MASSEY FERGUSON 7250 DI
46

केंद्र सरकार ये कदम उठाकर चावल की कीमतों को कम करने की योजना बना रही है

दुनिया के कुल एक्सपोर्ट का 40 फीसदी हिस्सा भारत के पास है। साथ ही, दुनिया का सबसे सस्ता चावल भी भारत की एक्सपोर्ट करता है। भारत, संपूर्ण विश्व को झटका देते हुए चावल की ज्यादातर किस्मों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने पर विचार कर रहा है। भारत सरकार के इस कदम से ग्लोबल मार्केट में चावल की कीमतों में और अधिक बढ़ोत्तरी देखने को मिल सकती है। साथ ही, भारत के अंदर चावल की कीमतों में कटौती देखने को मिल सकती है। दरअसल, अलनीनो की वजह से चावल के उत्पादन पर पहले से ही काफी प्रभाव देखने को मिला है। साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में चावल की कीमतें पहले ही 11 साल के हाई स्तर पर पहुंच गई हैं। भारत की तरफ से यह कदम लोकल स्तर पर चावल की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए उठाया जा रहा है। भारत के विभिन्न इलाकों में चावल की कीमतों में 20 प्रतिशत से अधिक तक की बढ़ोत्तरी हो चुकी है।

भारत सरकार गैर बासमती चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगाएगी

मीडिया एजेंसियों की रिपोर्ट के मुताबिक मामले से परिचित लोगों के अनुसार, सरकार समस्त नॉन-बासमती चावल के निर्यात पर रोकथाम लगाने की योजना पर विचार विमर्श कर रही है। मीडिया को मिले सूत्रों के अनुसार, सरकार विधानसभा चुनाव और उसके उपरांत आम चुनावों से पूर्व भारत में महंगाई के जोखिम से बचना चाहती है। सरकार इस कारण से चावल की नॉन बासमती वैरायटी पर प्रतिबंध लगाने के विषय में सोच रही है।

भारत सरकार ने चावल की एमएसपी में 7% प्रतिशत की वृद्धि की थी

विशेष बात तो यह है, कि विश्व के कुल निर्यात का 40 प्रतिशत भाग भारत के पास है। साथ ही, भारत विश्व के अंदर सबसे सस्ता चावल भी निर्यात करता है। ऐसे में भारत यदि सस्ते चावल के निर्यात पर प्रतिबंध लगाता है, तो दुनिया में चावलों के दाम में और भी इजाफा देखने को मिल सकता है। वहीं, दूसरी तरफ भारतीय चावल के निर्यात की कीमत में 9 प्रतिशत की वृद्धि देखने को मिल चुकी है। विगत महीने ही सरकार ने चावल के एमएसपी में 7 % प्रतिशत की बढ़ोत्तरी की थी।

भारत में इस बार धान की बुवाई 26 प्रतिशत कम हुई है

गर्मियों में मानसून के आरंभ में बारिश कम होने की वजह से संपूर्ण भारत में बुवाई कम देखने को मिली है। विगत हफ्ते के आंकड़ों पर प्रकाश डालें तो समर में बोये जाने वाला चावल विगत वर्ष की तुलना में 26 प्रतिशत कम है। इसकी वजह अलनीनो को ठहराया जा रहा है, जिसका प्रभाव सिर्फ भारत पर ही देखने को नहीं मिल रहा बल्कि थाईलैंड में भी देखने को मिल रहा है। जहां पर सामान्य से 26 प्रतिशत कम बरसात होने की वजह एक ही फसल उगाने को कहा गया है।

राजस्थान सरकार किसानों को फल और मसालों की खेती के लिए प्रोत्साहन राशि दे रही है।

राजस्थान सरकार राष्ट्रीय बागवानी मिशन और कृषि विकास योजना के अंतर्गत किसानों को अनुदान प्रदान करेगी। दरअसल, राज्य में किसानों को पारंपरिक फसलें जैसे कि मक्का, गेहूं और सरसों आदि की खेती से अच्छी आमदनी नहीं हो पा रही है।

राजस्थान में किसान अब बागवानी और मसालों की खेती करेंगे। इसके लिए किसानों को राज्य सरकार की तरफ से अच्छी खासी सब्सिडी मुहैय्या कराई जाएगी। मुख्य बात यह है, कि सब्सिडी पाने के लिए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की सरकार द्वारा करोड़ों रुपये की धनराशि स्वीकृत कर दी है। अगर राजस्थान के किसान फल और मसालों की खेती करते हैं, तो उन्हें 40 प्रतिशत तक अनुदान मिलेगा। इसके लिए उन्हें राजकिसान साथी पोर्टल पर जाकर आवेदन करना पड़ेगा।

राजस्थान के किसानों को पारंपरिक फसलों से कोई लाभ नहीं मिला

राजस्थान सरकार राष्ट्रीय बागवानी मिशन और कृषि विकास योजना के अंतर्गत किसानों को अनुदान देगी। दरअसल, राज्य सरकार का यह मानना है, कि प्रदेश में किसान भाइयों को गेहूं, सरसों एवं मक्का जैसी पारंपरिक फसलों की खेती से अच्छी आय नहीं हो पा रही है। अगर प्रदेश के किसान आधुनिक विधि से बागवानी और मसालों की खेती करते हैं, तो किसानों की आमदनी में काफी बढ़ोतरी हो सकती है। यही कारण है, कि राज्य के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने बागवानी और मसाले के क्षेत्रफल में विस्तार करने के लिए 23.79 करोड़ रुपये की मंजूरी दी है।

राजस्थान सरकार 7609 हेक्टेयर में फल के बगीचे तैयार कर रही है

सरकारी अधिकारियों के अनुसार, राजस्थान सरकार ने वर्ष 2023-24 में 7609 हेक्टेयर भूमि में फल के बगीचे तैयार करने की योजना तैयार की है। इसके ऊपर सरकार सब्सिडी के तौर पर 22.40 करोड़ रुपये खर्च करेगी। साथ ही, मसाले के रकबे के विस्तार पर अनुदान धनराशि के रूप में 1.39 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। मुख्यमंत्री कार्यालय के अनुसार, सीएम गहलोत द्वारा मंजूर किए गए 23.79 करोड़ रुपये में से 17.24 करोड़ रुपये की धनराशि राजस्थान कृषक कल्याण कोष में से प्रदान की जाएगी। साथ ही, 6.55 करोड़ रुपये राष्ट्रीय बागवानी मिशन एवं राष्ट्रीय कृषि विकास योजना से खर्च किए जाएंगे।

राजस्थान सरकार कितना अनुदान प्रदान कर रही है

मुख्य बात यह है, कि राजस्थान में सरकार पूर्व से ही मसालों की खेती पर अनुदान मुहैय्या कर रही है। साथ ही, किसानों को आधुनिक विधि से मसालों की खेती करने के लिए प्रशिक्षण भी दिया जाता है। लेकिन, इस योजना के अंतर्गत ज्यादा से ज्यादा 4 हेक्टेयर एवं कम से कम 0.50 हेक्टेयर में मसालों की खेती करने वाले किसान अनुदान का फायदा उठा सकते हैं। किसानों को 40 प्रतिशत अनुदानित धनराशि दी जाएगी। मतलब कि उन्हें प्रति हेक्टेयर 5500 रुपये अनुदान के रूप में मिलेंगे।

अनुदान का फायदा लेने के लिए आवश्यक दस्तावेज

अगर किसान भाई अनुदान का फायदा उठाना चाहते हैं, तो नजदीकी ई-मित्र केंद्र अथवा राजकिसान साथी पोर्टल पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। आवेदन करते समय किसान के पास खुद की खेत की जमाबंदी, आधार कार्ड, खेती योग्य जमीन, इलेक्ट्रिसिटी बिल, बैंक पासबुक की कॉपी और स्थानीय आवासीय प्रमाण पत्र होना काफी अनिवार्य है।

किसान समाचार

जानें रबी और खरीफ सीजन में कटाई के आधार पर क्या अंतर है

रबी की फसल सर्दियों के सीजन में अक्टूबर से दिसंबर के बीच लगाई जाती है। रबी की फसलों में गेंहू, आलू, मटर, चना, अलसी, सरसो एवं जौं प्रमुख तौर पर शामिल हैं। खरीफ की फसलों में सोयाबीन, कपास, चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, मूंग, मूंगफली और गन्ना समेत अन्य शामिल हैं।

भारत में अनेक फसलों का उत्पादन होता है। यहां की ज्यादातर आबादी कृषि क्षेत्र से ही जुड़ी हुई है। इस वजह से ही भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है। भारत में ऋतुओं पर आधारित रबी एवं खरीफ फसलें दो तरह की फसलें हैं। प्रत्येक फसल के उत्पादन का एक खास मौसम होता है। इस लेख के अंदर हम आपको रबी और खरीफ की फसल में अंतराल बता रहे हैं।

रबी की फसल

रबी की फसल सर्दियों के मौसम में अक्टूबर से दिसंबर तक बोई जाती है। रबी की फसलों में चना, अलसी, सरसो, जौं, गेंहू, आलू और मटर विशेष रूप से शम्मिलित हैं। इस मौसम में गेंहू की सबसे ज्यादा खेती की जाती है। अक्टूबर-नवंबर के महीने में इस फसल के बीजों की बिजाई के लिए मिट्टी में डाल दिया जाता है। इन फसलों को कम तापमान के साथ खुश्क वातावरण की जरूरत पड़ती है। मानसून समाप्त होने के उपरांत मिट्टी में पानी की भरपूर मात्रा होती है। ऐसी स्थिति में पूरी सर्दियों में इस फसल को पैदा करने के लिए अच्छी मात्रा में पानी उपलब्ध रहता है। हालांकि, नवंबर और दिसंबर में होने वाली वर्षा से इस फसल को बेहद क्षति पहुंचती है

रबी की फसल की कटाई कब की जाती है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि रबी की फसल की कटाई फरवरी माह के आखिरी सप्ताह से लेकर मार्च के आखिरी सप्ताह तक की जाती है। दरअसल, इस मौसम में परिवर्तन होना प्रारंभ हो जाता है। साथ ही, तापमान में भी बढ़ोत्तरी होने लगती है। फसल की कटाई के पश्चात इसको बेहतर ढ़ंग से सुखाया जाता है। उसके उपरांत इस फसल की हाथ से मड़ाई की जाती है।

खरीफ फसल की कटाई कब की जाती है

खरीफ की फसलों में मूंग, मूंगफली, गन्ना, सोयाबीन, कपास, चावल, ज्वार, बाजरा और मक्का समेत अन्य शम्मिलित हैं। इन फसलों को ज्यादा तापमान के साथ आद्रता और शुष्क वातावरण की जरूरत होती है। इन फसलों को जून-जुलाई में बोया जाता है। खरीफ की फसल अक्टूबर माह तक पककर तैयार हो जाती है। सर्दियां आरंभ होने से पहले अक्टूबर तक इन फसलों की कटाई चालू हो जाती है।

सब्जियों के साथ-साथ मसालों के बढ़ते दामों से लोगों की रसोई का बिगड़ा बजट

बेमौसम बारिश के चलते राजस्थान और गुजरात में जीरे की फसल को काफी क्षति पहुंची थी। ऐसी स्थिति में पैदावार प्रभावित होने से इसकी कीमतों में निरंतर वृद्धि हो रही है। भारत में महंगाई से हड़कंप मचा हुआ है। हरी सब्जियों से लगाकर खाने- पीने के ज्यादातर चीजें महंगाई की चरम सीमा पर हैं। परंतु, लोगों की निगाह सिर्फ टमाटर पर ही अटकी हुई है। आम जनता को को ऐसा लग रहा है, कि केवल टमाटर ही महंगा हुआ है। अन्य खाद्य पदार्थ पहले के भाव पर ही बिक रहे हैं। परंतु, इस तरह की कोई बात नहीं है। टमाटर के अलावा भी बहुत सारे ऐसे खाद्य पदार्थ हैं, जिनकी कीमतों में अच्छी खासी बढ़ोत्तरी हुई है। ये खाद्य पदार्थ ऐसे हैं, जिसके बिना स्वादिष्ट एवं लजीज व्यंजन बन ही नहीं सकते हैं। अर्थात भोजन स्वादहीन हो जाएगा।

अदरक, टमाटर और हरी मिर्च के बढ़ते दामों से लोग परेशान

दरअसल, हम मसालों की बात कर रहे हैं। अदरक, टमाटर और हरी मिर्च के बढ़ते दामों की वजह से महंगे हो रहे मसालों पर किसी का ध्यान ही नहीं जा रहा है। जबकि, मसालों के भाव में भी काफी ज्यादा वृद्धि होने से रसोई का बजट ड़गमगा गया है। विशेष बात यह है, कि मसालों के अंतर्गत सर्वाधिक जीरा महंगा हो गया है। इसकी कीमत थोक भाव से लेकर रिटेल बाजार में भी महंगी हो गई है। इससे सब्जी एवं दाल में तड़का लगाने वालों का बजट ड़गमगा गया है।

लोगों ने सब्जी व दाल में जीरे का तड़का लगाना तक बंद कर दिया है

हालांकि, जीरे के अतिरिक्त अजवाइन एवं सौंफ की कीमतें भी बढ़ गई हैं। ऐसी स्थिति में लोग इनकी खरीदारी करने से पूर्व एक बार भाव जरूर पूछ रहे हैं। वहीं, महंगाई की वजह से कई लोगों ने सब्जी और दाल में जीरे का तड़का लगाना भी बंद कर दिया है। जानकारों ने बताया है, कि विगत मार्च माह में हुई बेमौसम बारिश के चलते राजस्थान और गुजरात में जीरे की फसल को हानि पहुंची था। अब ऐसी स्थिति में पैदावार प्रभावित होने से इसकी कीमतों में निरंतर वृद्धि हो रही है। इसके अतिरिक्त काजू और बादाम भी काफी महंगे हो गए हैं।

मसाले कितने महंगे हो गए हैं

बतादें, कि पहले जीरे की कीमत 500 से 600 रुपये किलो थी। जो अब बढ़कर 700 से 750 रुपये हो गया है। इसी प्रकार अजवाइन 250 से 300 रुपये किलो बिकता था। लेकिन, फिलहाल इसकी कीमत 400 रुपये तक पहुँच गई है। साथ ही, सौंफ भी 100 रुपये तक महंगा हो गया है। अब एक किलो सौंफ का भाव 360 रुपये किलो तक पहुँच गया है, जो कि पहले 250 रुपये था।

प्रचंड बारिश और भयावय बाढ़ से पीड़ित किसानों ने फसल बर्बादी को लेकर सरकार से क्या मांग की

किसानों के अनुसार सबसे ज्यादा धान की फसल क्षतिग्रस्त हुई है। किसान का एक एकड़ धान पर अब तक 20-25 हजार रुपये खर्च आ चुका है। मूसलाधार बारिश और बाढ़ के चलते बहुत से खेतों में किसानों को एक भी दाने की उम्मीद नहीं है। किसानों की यह मांग है, कि प्रति एकड़ कम से कम 60 हजार रुपये का मुआवजा दिया जाए। क्योंकि, एक एकड़ से लगभग 30 क्विंटल धान की बर्बादी हुई है।

निरंतर बारिश और बाढ़ ने जनपद में भयंकर तबाही मचाई है। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अनुसार 24 हजार हेक्टेयर फसल को अत्यंत क्षति पहुँची है। संबंधित रिपोर्ट सरकार के लिए भेज दी गई है, जिन किसानों के खेतों में जलभराव है, उनकी ज्यादा समस्याएं बढ़ गई हैं। फसल पर प्रति एकड़ हजारों रुपये खर्च किए जाने के बावजूद किसानों के हाथ खाली हैं। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि पीड़ित किसान मुआवजे की ओर टकटकी लगाए बैठे हैं। धान की फसल सबसे ज्यादा क्षतिग्रस्त हुई है। 19 हजार 578 हेक्टेयर में खड़ी धान की फसल पूर्णतय बर्बाद हो चुकी है। इसके अतिरिक्त गन्ना, मक्का व बाकी फसलों को भी हानि हुई है। किसान संगठनों ने 60 हजार एकड़ के हिसाब से मुआवजे की गुहार की है।

किसान धान पर प्रति एकड़ हजारों की लागत लगा बैठा है

किसानों ने कहा है, कि सबसे अधिक नुकसान धान की फसल में देखा गया है। एक एकड़ भूमि पर अब तक 20-25 हजार रुपये का खर्च आ चुका है। इतना ही नहीं कुछ खेत ऐसे भी हैं, जहां किसानों को एक भी दाने की आशा नहीं रही है। किसानों की मांग है, कि प्रति एकड़ कम से कम 60 हजार रुपये मुआवजा प्रदान किया जाए। क्योंकि, एक एकड़ से लगभग 30 क्विंटल धान की क्षति हुई है। किसानों की मांग है, कि सरकार अतिशीघ्र प्रभावित इलाकों की गिरदावरी करवा कर पीड़ित किसानों का मुआवजा उपलब्ध कराया जाए।

किसानों ने अपनी दुखभरी दास्ताँ की जाहिर

पूर्णगढ़ के किसान मांगे राम का कहना है, कि उनकी पांच एकड़ धान की फसल पूर्णतय खत्म हो चुकी है। खेतों में जलभराव की स्थिति पैदा हो गई है। बारिश व बाढ़ के पानी ने फसलों को बर्बाद करके रख दिया है। खेत की तरफ देखकर केवल मायूसी हाथ लग रही है। अगली फसल की बुवाई समय पर हो पाएगी इसकी भी कोई उम्मीद नहीं है।

किसान को प्रति एकड़ हजारों खर्च करने पर भी निराशा हाथ लगी

किसान विनोद कुमार ने बताया है, कि फसल की अच्छी पैदावार की आशा पर किसान भविष्य की योजना तय करता है। अगर फसल ही बर्बाद हो गई तो किसान के पास कुछ भी नहीं बचता है। किसान भाई अब तक प्रति एकड़ धान पर हजारों रुपये खर्च कर चुके हैं। इसके बावजूद भी किसान के हाथ खाली हैं। किसानों का बजट पूर्णतय बिगड़ चुका है। सरकार को आर्थिक सहायता के लिए आगे आना चाहिए।

फसलों की ऐसी दयनीय स्थिति कभी नहीं देखी

किसान चूहड़ सिंह का कहना है, कि फसलों की ऐसी दयनीय स्थिति आज तक नहीं देखी। हालांकि, बाढ़ विगत समय में भी आती रही हैं। परंतु, इतनी फसलीय बर्बादी कभी भी नहीं हुई, इस बार तो ज्यादा हद हो गई। उनकी 12 एकड़ के आसपास फसल पूर्णतय बर्बादी की कगार पर है। लाखों रुपये की हानि हो चुकी है। बजट पूर्णतय ड़गमगा चुका है। खेतों की तरफ देखकर कलेजा मुह को आता है।
कृषि उपमंडल अधिकारी डॉ. राकेश पोरिया का कहना है, कि बाढ़ व बारिश की वजह से जिले के प्रत्येक खंड में हानि हुई है। सबसे अधिक हानि धान की फसल में हुई है। हमने रिपोर्ट तैयार करके सरकार को भेज दी है। किसानों से परस्पर संपर्क साधा जा रहा है। विभाग की टीम खेतों में जाकर लगातार हानि का मुआयना कर रही है। प्रभावित फसलों का मुआवजा निर्धारित करना सरकार के कार्यक्षेत्र के अंतर्गत आता है।

अधिक उपज और उच्च गुणवत्ता के लिए प्रयोग करें

www.sunagrochemicals.com

+91 78953 12653

बासमती चावल ने अन्य चावलों को बाजार से बिल्कुल गायब कर दिया है

बतादें, कि आजकल लोग बासमती चावलों की सुगंध से मोहित हो जाते हैं। यदि उन्होंने एक बार भी गोविन्द भोग चावलों की सुगंध सूंघ ली तो दंग हो जाएंगे। यदि आज आप भारत में किसी से जानकारी लेंगे कि कौन सा चावल सबसे अच्छा होता है, तो सामने वाला व्यक्ति बिना वक्त लिए सोचकर बोल देगा बासमती। परंतु क्या ये सत्य है? क्या केवल बासमती ही एक ऐसा चावल है जो सबसे अच्छा है? शायद नहीं क्योंकि, भारत में एक वक्त में ऐसी कई सारी चावल की प्रजातियां थीं, जो अपने स्वाद एवं सुगंध के लिए संपूर्ण विश्व में मशहूर थीं।

गोविन्द भोग चावल की सुगंध अच्छी होती है

जो लोग आज बासमती चावलों की खुशबू से मोहित हो जाते हैं, अगर उन्होंने एक बार भी गोविन्द भोग चावलों की खुशबू सूंघ ली तो हैरान हो जाऐंगे। इस चावल की सुगंध ऐसी होती है, कि यदि ये किसी के घर में पक रहा हो तो सारे मोहल्ले को भनक पड़ जाती है, कि किसी के यहां गोविन्द भोग चावल पक रहा है। यह चावल पश्चिम बंगाल के पूर्वी जनपद में बहने वाली नदी दक्षिण बेसिन के किनारे वाले इलाकों में पैदा की जाती है। वर्तमान में भारत के अंदर यह चावल पश्चिम बंगाल के हुगली, बांकुरा, पुरुलिया और बीरभूम में पैदा किया जाता है। साथ ही, बिहार के कैमूर एवं छत्तीसगढ़ के सरगुजा में भी इस चावल की खेती की जाती है।

सुगंध के मामले में काला नमक चावल को कोई टक्कर नहीं दे सकता

वर्तमान दौर में यदि किसी भारतीय से काला नमक कहा जाए तो वो नमक वाला काला नमक समझेगा। परंतु, एक वक्त पर काला नमक चावल की किस्म संपूर्ण भारत में लोकप्रिय थी। इस चावल को किसी विशेष अवसर पर ही पकाया जाता था। क्योंकि, ये बेहद महंगा होता है।

ऐसा कहा जाता है, कि गोविन्द भोग चावल की सुगंध को किसी चावल की सुगंध मात दे सकती है तो वो काला नमक ही है। ये चावल विशेष रूप से नेपाल के कपिलवस्तु और उसके समीपवर्ती पूर्वी उत्तर प्रदेश के तराई वाले क्षेत्रों में पैदा किया जाता है। इस चावल की प्रसिद्धि एक वक्त पर इतनी थी, कि इसे संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य और कृषि संगठन ने संसार के विशिष्ट मतलब कि खास चावलों की सूची में स्थान दिया है।

काले चावल का बुद्ध से क्या संबंध है

ऐसा कहा जाता है, कि यह चावल स्वयं महात्मा बुद्ध ने किसानों को दिया था। बतादें कि इसके पीछे एक कहानी है, कि एक बार जब महात्मा बुद्ध लुम्बिनी के जंगलों से गुजर रहे थे, तो उन्होंने वहां के ग्रामीणों को काला नमक चावल के बीज देते हुए कहा था, कि इन बीजों से पैदा होने वाले चावल की सुगंध तुम्हें मेरी स्मृति दिलाती रहेगी। आप विचार करिए कि अभी तो हमने आपको केवल दो चावल की किस्मों के विषय में बताया है। हालाँकि, इस प्रकार की विभिन्न प्रजातियां भारत में पैदा की जाती थीं। फिलहाल, यह आहिस्ते-आहिस्ते बासमती की वजह से विलुप्त होती जा रही हैं।

सरकार टमाटर की तरह नही बढ़ने देगी प्याज के दाम

आजकल टमाटर और अदरक के भाव बढ़ने से लोगों को लगता है, कि प्याज की कीमतों में भी इजाफा होगा। उपभोक्ता मामलों के सचिव रोहित कुमार सिंह ने रविवार को बताया है, कि सरकार ने 3 लाख टन प्याज खरीदा है, जो पिछले साल के बफर स्टॉक से 20 प्रतिशत ज्यादा है। प्याज की लाइफ बढ़ाने के लिए भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी) के साथ प्याज पर रेडिएशन का परीक्षण भी किया जा रहा है।

गगनचुंबी टमाटर की कीमतों ने संपूर्ण भारत को हिलाकर रख दिया है। ऐसे में प्याज को लेकर अभी से तैयारी करनी चालू कर दी है, जिससे आने वाले दिनों में प्याज की कीमतों में कोई बदलाव देखने को नहीं मिले। उपभोक्ता मामलों के सचिव रोहित कुमार सिंह ने रविवार को बताया है, कि सरकार ने 3 लाख टन प्याज खरीदी है, जो कि विगत वर्ष के बफर स्टॉक से 20 प्रतिशत ज्यादा है। साथ ही, प्याज की निजी जिंदगी बढ़ाने के लिए भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी) के साथ प्याज पर रेडिएशन का परीक्षण भी किया जा रहा है। वित्त वर्ष 2022-23 में सरकार ने बफर स्टॉक के रूप में 2.51 लाख टन प्याज रखा था।

प्याज का 3 लाख टन का भरपूर भंडारण

अगर कम आपूर्ति वाले मौसम में कीमतें बेहद बढ़ जाती हैं, तो किसी भी आपात परिस्थिति को पूरा करने के लिए प्राइस स्टेबलाइजेशन फंड (पीएसएफ) के अंतर्गत बफर स्टॉक तैयार किया जाता है। रोहित सिंह का कहना है, कि त्योहारों के मौसम में किसी भी हालात से जूझने के लिए, सरकार ने इस वर्ष 3 लाख टन तक का मजबूत भंडारण विकसित किया है। प्याज को लेकर कोई परेशानी नहीं है। भरपूर भंडारण हेतु जो प्याज खरीदा गया है, वह वर्तमान में समाप्त हुए रबी सीजन का है।

खरीफ सीजन में प्याज की बुवाई

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि भारत के विभिन्न इलाकों में प्याज की बुवाई शुरू हो चुकी है। जिसकी फसल की आवक अक्टूबर माह में आनी चालू हो जाएगी। वर्तमान दौर में प्याज की खरीद हाल ही में निकले रबी सीजन से की जा रही है। वर्तमान में खरीफ प्याज की बिजाई चल रही है। बतादें, कि अक्टूबर में इसकी आवक चालू हो जाएगी। सचिव ने बताया है, कि सामान्य तौर पर खुदरा बाजारों में प्याज का भाव 20 दिनों अथवा उसके समीपवर्ती दबाव में रहती हैं। जब तक कि ताजा खरीफ फसल बाजार में नहीं आ जाती। परंतु, इस बार कोई दिक्कत नहीं होगी।

इस तरह बढ़ जाएगी प्याज की जीवनावधि

परमाणु ऊर्जा विभाग एवं भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के साथ मिलकर उपभोक्ता मामलों का मंत्रालय इस मध्य प्याज भंडारण के लिए एक तकनीक का परीक्षण कर रहा है। रोहित सिंह ने बताया है, कि पायलट बेस पर हम महाराष्ट्र के लासलगांव में कोबाल्ट-60 से गामा रेडिएशन के साथ 150 टन प्याज पर इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे प्याज की जीवनावधि बढ़ जाएगी। 2022-23 में सरकार ने पीएसएफ के अंतर्गत रबी-2022 फसल से रिकॉर्ड 2.51 लाख मीट्रिक टन प्याज की खरीद की थी। वहीं, इसे सितंबर 2022 और जनवरी 2023 के दौरान प्रमुख उपभोक्ता केंद्रों में जारी किया था।

भारत में सबसे सस्ता प्याज मिलता है

भारत का 65 प्रतिशत प्याज उत्पादन अप्रैल-जून के दौरान काटी गई रबी प्याज से होता है। यह अक्टूबर-नवंबर में खरीफ फसल की कटाई होने तक उपभोक्ताओं की मांग को पूर्ण करता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, 15 जुलाई को देश में सबसे सस्ता प्याज 10 रुपये प्रति किलोग्राम के साथ नीमच में मिल रहा था। साथ ही, नगालैंड के शेमेटर शहर में सबसे मंहगा प्याज 65 रुपये किलो पर मिल रहा है। भारत में प्याज का औसत भाव 26.79 रुपये प्रति किलोग्राम देखने को मिला था।

वैज्ञानिकों द्वारा खोजी गई कटहल की इस नई किस्म से किसानों को होगा लाभ

आईआईएचआर-बेंगलुरु के वैज्ञानिकों को यह कटहल हाल ही में बेंगलुरु के ही बाहरी क्षेत्रों के एक किसान नागराज के खेत में ही मिला। ये फसल अपने असाधारण स्वाद एवं पोषण मूल्यों के लिए जाना जाता है।

भारत में किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए यहां के कृषि वैज्ञानिक दिन-रात कड़ा परिश्रम करते हैं। दरअसल, भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहां की अधिकांश आबादी आज भी खेती किसानी पर निर्भर रहती है। इसके चलते सरकार भी इस फिराक में रहती है, कि किसानों को किसी भी स्थिति में इतनी सहायता पहुंचाई जा सके, जिससे कि उनकी रोजी रोटी सहजता से चलती रहे। यही वजह है, कि वैज्ञानिकों ने अब एक नए किस्म के कटहल की खोज की है, आइए आज हम आपको इसके लाभ बताते हैं। बतादें कि कृषि वैज्ञानिकों की वजह से ही आज खेती किसानी काफी विकासित हुई है।

वैज्ञानिकों को मिला कटहल कैसा दिखता है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई यह नई कटहल भी किसी सामान्य कटहल की तरह खाने वाला कटहल ही है। परंतु, ये नया कटहल व्यावसायिक प्रसंस्करण के लिए अत्यंत ज्यादा अनुकूल है। इस नए कटहल को सिद्दू और शंकरा कहा जाता है। इसे मिलाकर अब तक वैज्ञानिकों ने कटहल की तीन किस्मों की खोज कर ली है। ये तीनों किस्में भारत के अंदर पाई जाती हैं। सबसे मुख्य बात यह है, कि अब तक व्यावसायिक तौर पर केवल दो किस्मों का ही उत्पादन होता था। परंतु, नई किस्म मिलने के उपरांत अब तीन किस्मों की पैदावार की जा सकेगी।

वैज्ञानिकों को यह नए किस्म का कटहल कहाँ मिला है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि आईआईएचआर-बेंगलुरु के वैज्ञानिकों को ये कटहल हाल ही में बेंगलुरु के ही बाहरी इलाके के एक किसान नागराज के खेत में मिला। वैज्ञानिकों के अनुसार, यह फसल अपने असाधारण स्वाद के साथ-साथ पोषण मूल्यों के लिए भी जानी जाती है। इस नई किस्म के साथ सबसे उत्तम बात यह है, कि इसकी पैदावार अन्य किस्मों से कहीं अधिक होती है।

सबसे विशेष बात यह है, कि इस नए किस्म की एक कटहल का वजन तकरीबन 25 से 32 किलोग्राम तक होता है। अर्थात यदि आप कटहल की खेती कर के उससे मुनाफा कमाना चाहते हैं, तो ये नई किस्म आपके लिए सर्वाधिक अनुकूल है। वैज्ञानिकों का कहना है, कि वह किसान नागराज के साथ एक समझौता कर रहे हैं। साथ ही, कटहल की इस नवीन किस्म को और बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। यदि सब कुछ अच्छा रहा तो कुछ वर्षों में ही यह नया कटहल पूरे भारत में लगने लगेगा और प्रति वर्ष किसानों को मोटा मुनाफा प्रदान करेगा।

टमाटर ने इन 2 किसानों का कराया लाखों का फायदा

टमाटर की बढ़ती कीमतों का बहुत सारे किसानों को किसी तरह का लाभ नहीं मिल पा रहा तो वहीं कर्नाटक के किसान टमाटर बेचकर लाखों का मुनाफा कमा रहे हैं। भारत में महंगाई चरम सीमा पर है। विशेष रूप से टमाटर की बात की जाए तो इसकी कीमतें कम होने का नाम ही नहीं ले रही हैं। सरकारी आंकड़ों की बात की जाए तो जून में खुदरा मंहगाई दर 4.81 प्रतिशत रही। महंगाई बढ़ने की एक वजह टमाटर भी है। आम जनता के किचन से टमाटर लापता हो चुका है। हर तरफ खबरें आ रही है, कि किसानों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। लेकिन आज आपको कुछ ऐसे किसानों के संबंध में बताऐंगे जो कि टमाटर बेचकर लखपति बन चुके हैं।

इन किसान परिवारों ने टमाटर बेचकर 1000, 2000 नहीं बल्कि पूरे 38 लाख रुपए कमा लिए हैं। अब आप यह सोच रहे होंगे कि ये सब कैसे हुआ है। आइए आपको बताते हैं इन किसानों की पूरी कहानी।

किसान को कैसे मिली 38 लाख की रकम

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, विगत एक माह में टमाटर की कीमतों में 326 प्रतिशत का उछाल देखा गया है। इकोनॉमिक्स टाइम्स की एक खबर के अनुसार, कर्नाटक के एक किसान परिवार ने टमाटर बेचकर पूरे 38 लाख रुपए की बड़ी रकम कमा डाली। दरअसल, इस किसान परिवार ने टमाटर के 2000 बॉक्स बेचे, जिससे उन्हें पूरे 38 लाख रुपए मिले हैं।

इन किसानों की लाखों में हुई आय

कर्नाटक के इस किसान के अतिरिक्त एक ओर किसान जिनका नाम वेंकटरमण है। चिंतामणि तालुका के इस किसान ने टमाटर के एक बॉक्स को 2200 रुपए में बेचा है। कोलार के मंडी में जब वो टमाटर बेचने गए तो उनके पास समकुल 54 बॉक्स थे। एक बॉक्स के अंदर 15 किलो टमाटर होता है। इस प्रकार से 54 में 26 बक्सों को 2200 रुपए प्रति बॉक्स के हिसाब से बेचा। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि बाकी बक्सों के लिए उन्हें 1800 रुपए की ही कीमत मिली।इस तरह 54 बक्सों को बेचकर उन्हें 17 लाख से ज्यादा की रकम मिली।

इस मंडी से किसान बने लखपति

उपर जिन दो किसानों की कहानी बताई गई है। ये दोनों कर्नाटक के कोलार मंडी में टमाटर बेचकर लखपति बन रहे है। दरअसल, कोलार मंडी में टमाटर की कीमतें सातवें आसमान पर पहुँच गई है। यहां 15 किलो के डब्बे की कीमत 1900 रुपए से 2200 रुपए तक पहुँच गया है। बतादें, कि इससे किसानों की अच्छी-खासी आमदनी हो रही है।

इस राज्य में वन विभाग ने जंगलों में हर्बल प्लांटेशन करने की तैयारी की

बरसात के दिनों में हमीरपुर के जंगलों में 70 हजार पौधे लगाए जाएंगे। इसके लिए प्रत्येक फॉरेस्ट रेंज में हर्बल वन तैयार किया जाएगा। इस हर्बल प्लांट के कमर्शियल लाभ भी होंगे।

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर फॉरेस्ट डिविजन के अंतर्गत बरसात के इस सीजन में जनपद की समस्त पांचों वन रेंजो में लगभग 70 हजार भिन्न-भिन्न किस्म के पौधे जंगलों में लगाए जाएंगे। वन विभाग ने इसी महीने से इनको लगाने की पूरी तैयारियां कर ली हैं। बरसात ने भी फिलहाल दस्तक दे दी है। अब ऐसी स्थिति में फिलहाल प्लांटेशन का कार्य चालू होने जा रहा है।

इतने हेक्टेयर भूमि में पौधरोपण किया जाएगा

डीएफओ हमीरपुर राकेश कुमार का कहना है, कि वन विभाग ने एक रोडमैप बनाया है, जिसके अंतर्गत हर वन रेंज में पहली बार हर्बल वन तैयार किए जाएंगे। साथ ही, 157 हेक्टेयर वन रकबे में पौधरोपण किया जाएगा। उनका कहना है, कि हर्बल वन से जहां किसानों एवं आम जनता को हर्बल प्लांट के प्रति जागरूक किया जाएगा। वहीं, इस पौधरोपण को कमर्शियल स्तर आमदनी का माध्यम भी बनाया जा सकता है।

जंगलो में नए पौधरोपण की तैयारी

मॉनसून सीजन के दस्तक देते ही वन विभाग ने जंगलों के अंदर नवीन पौधरोपण की प्रक्रिया चालू कर दी है। इसको लेकर वन विभाग की समस्त सरकारी नर्सरियों में इन पोधों को पहले ही तैयार कर लिया गया है। फिलहाल, इनको जंगलों में लगाने के लिए रेंज स्तर पर मुहैय्या करवाया जाएगा। इस बार 157 हेक्टेयर वन इलाके में पौधरोपण किया जाएगा। जिसमें से 49 हेक्टेयर नॉर्मल स्तर के पौधे लगाए जाएंगे, वहीं 108 हेक्टेयर में चौड़े पत्तेदार पौधे लगाए जाऐंगे।

हर्बल प्लांट बनेगा आमदनी का बेहतरीन जरिया

वन विभाग ने एक रोडमैप तैयार किया है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वन रेंज में पहली बार हर्बल वन निर्मित किए जाएंगे। जिसमें हरड़ बहेड़ा एवं आंवले के पौधे रोपे जाऐंगे। इनको लगाने से दो लाभ होते हैं। पहला इससे किसानों एवं आम लोगों को हर्बल प्लांट के प्रति जागरूक किया जाएगा। वहीं दूसरा यह कि इन इन हर्बल पौधों को लगाकर इनको कमर्शियल स्तर पर आमदनी का जरिया कैसे बनाया जाए, इस बात पर बल दिया जाएगा। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि हमीरपुर जनपद की जलवायु एवं वातावरण हरड़ बहेड़ा और आंवला के पौधे लगाने के लिए अनुकूल माना जाता है। इसको कमर्शियल स्तर पर लोग अपनाएं इस पर काफी जोर दिया जाएगा।

हरड़ बहेड़ा में 70 हजार पौधरोपण किया जाएगा

वन विभाग के डीएफओ राकेश कुमार ने बताया है, कि विभाग बरसात के इस सीजन में लगभग 70 हजार पौधरोपण करेगा। पोधरोपण में भिन्न-भिन्न किस्मों के पोधे शम्मिलित होंगे। उन्होंने कहा है, कि वन विभाग हमीरपुर द्वारा इस बार हर फॉरेस्ट रेंज में एक हर्बल वन लगाए जाने का निर्णय लिया गया है, जिसके अंतर्गत एक चिन्हित इलाके में हरड़ बहेड़ा एवं आंवला के पौधे भी रोपे जाऐंगे। उन्होंने कहा है, कि हर्बल स्थापित करने से जहां किसानों को हर्बल पौधारोपण करने के प्रति जागरूक किया जाएगा। वहीं, दूसरी तरफ इन पौधों के फलों से विभाग को आमदनी होने की भी संभावना होगी।

वर्टिकल यानी लंबवत खेती से कम जगह और कम समय में पैदावार ली जा सकती है

वर्टिकल फार्मिंग के लिए किसानों को केवल अपनी समझ और बुद्धिमता लगाने की आवश्यकता है। वर्टिकल फार्मिंग को लंबवत खेती भी कहा जाता है। यह एक आधुनिक और नवीन विधि है। जिसके अंतर्गत उच्च ऊंचाई अथवा अन्य लंबवत तरीके से उत्पादन किया जाता है। दरअसल, वर्टिकल खेती में फसलों को सेंसरी प्रोजेक्शन की तकनीकों का इस्तेमाल करके बड़े पैमाने पर विकसित किया जाता है। जैसे कि रिपोर्ट लाइटिंग, हीड्रोपोनिक्स और कंट्रोलड पर्यावरण।

वर्टिकल फार्मिंग (VERTICAL FARMING) से उत्पादन अच्छा होता है

यह प्रणाली बेहतरीन कार्य क्षमता, समस्याओं का कम होना, वक्त और स्थान की बचत, प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल में गिरावट और पर्यावरणीय फायदों के साथ कृषि पैदावार को प्रोत्साहन देने की क्षमता प्रदान करती है। वर्टिकल फार्मिंग (VERTICAL FARMING) में फसलों को जरूरी ऊर्जा, पानी, प्रकाश और पोषक तत्वों के लिए उचित वातावरण में रखा जाता है। बेहतर ढंग से विकास के लिए विशेष तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है, जैसे कि LED लाइटिंग वाले उपकरण, ऊर्जा को एकत्र करने की तकनीक, फ्री सीडलिंग उत्पादन एवं स्वच्छ जल की उचित व्यवस्था। वर्टिकल फार्मिंग करने से बहुत सारे लाभ होते हैं।

लंबवत खेती कई सकारात्मक संभावनाएं प्रदान करती है

वर्टिकल फार्मिंग प्रणाली बेहद संभावनाएं प्रदान करती है। जैसे कि चुनौतियों को कम करना, वितरण और संचार को बेहतर करने में मदद करना। वाणिज्यिक एवं शहरी क्षेत्रों में खेती की नवीन संभावित जगहों को इस्तेमाल में लाने लायक बनाती है। साथ ही, पौधों की उन्नति और उत्पादन में भी काफी सुधार लाती है। इसके अलावा, इस प्रणाली में खाद्य सुरक्षा और पर्यावरणीय संतुलन को स्थिर बनाए रखने की संभावना भी रहती है।

वर्टिकल यानी लंबवत खेती के प्रमुख लाभ

-
- तकरीबन तीन से पांच गुना ज्यादा उत्पादन
- कम समय में ज्यादा उत्पादन
- कम जगह पर ज्यादा उत्पादन
- पेशेवर संचालन और नियंत्रण
- वर्षभर उत्पादन
- पेशेवर संवर्धन एवं नकदी प्रवाह
- बारिश, मौसम एवं भूमिगत समस्याओं से छुटकारा
- पर्यावरणीय संतुलन को नियंत्रित रखना
- वर्टिकल फार्मिंग यानी लंबवत खेती का महत्त्व

वित्तीय व्यवहार्यता

वर्टिकल फार्मिंग में लगने वाली प्रारंभिक पूंजी लागत सामान्यतः ज्यादा होती है। परंतु, संपूर्ण फसल उत्पादन की परिकल्पना जरूरत के मुताबिक सही ढंग से की जाए तो यह प्रक्रिया पूर्णतः लाभ प्रदान करने वाली बन जाती है। पूरे वर्ष या किसी विशिष्ट अवधि के दौरान एक विशेष फसल को ऊर्ध्वाधर खेती के माध्यम से उगाने, उसकी कटाई करने तथा उत्पादन करने से वित्तीय तौर पर व्यवहार्यता हो सकती है।

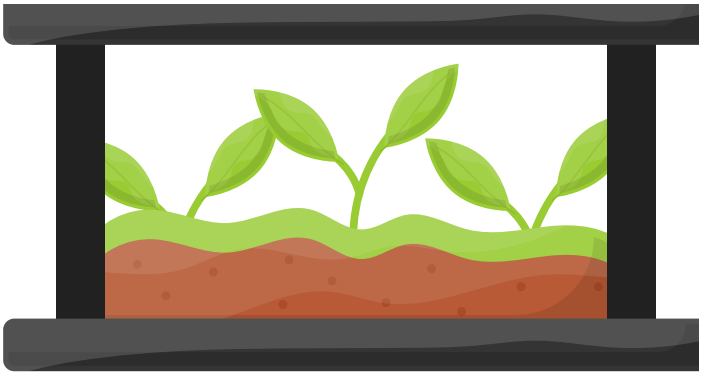

ज्यादा जल कुशल

पारंपरिक कृषि पद्धतियों के जरिए से उत्पादित की जाने वाली फसलों की तुलना में वर्टिकल फार्मिंग (Vertical farming) विधि के जरिए से उगाई जाने वाली समस्त फसलें आमतौर पर 95% प्रतिशत से ज्यादा जल कुशल होती हैं।

जल की बचत

वर्टिकल फार्मिंग (Vertical farming) से किसान काफी हद तक जल की खपत को कम कर सकते हैं। क्योंकि वर्टिकल फार्मिंग (Vertical farming) के अंतर्गत उपयोग होने वाली तकनीकों के माध्यम से कम जल उपयोग से अच्छी-खासी पैदावार ली जा सकती है।

बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य व सेहत

बतादें, कि ज्यादातर फसलें "कीटनाशकों के उपयोग के बिना" उगाई जाती हैं। जो कि "समय के साथ-साथ बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य की दिशा में सकारात्मक योगदान" प्रदान करता है। इसी वजह से उपभोक्ता शून्य-कीटनाशक उत्पादन की आशा कर सकते हैं, जो घर के लिये स्वस्थ, ताज़ा और टिकाऊ भी है।

रोजगार के अवसर

आखिर में इस बात पर बल देना काफी आवश्यक है, कि संरक्षित खेती के अंदर हमारे देश के कृषि छात्रों के लिये नए रोज़गार, कौशल सेट एवं आर्थिक अवसर उत्पन्न करने की क्षमता है। जो सीखने की अवस्था के अनुरूप होने के साथ तीव्रता से आगे बढ़ने में सक्षम है।

जानिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड क्या है और इससे किसानों को क्या फायदा होता है

किसानों के खेत की मृदा जांच के लिए हर जगह प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं। इन प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिकों द्वारा जांच के पश्चात मिट्टी के गुण-दोष की सूची तैयार की जाती है। जैसा कि हम जानते हैं, प्रत्येक राज्य सरकार अपने अपने स्तर से किसानों की आमदनी बढ़ाने की हर संभव मदद करती है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना भी इसी प्रकार की एक योजना है। इस योजना के अंतर्गत किसान अपनी मिट्टी की जांच कराते हैं और फिर रिपोर्ट के आधार पर खेती किया करते हैं। ऐसा करने से खेती में उनका खर्च भी कम लगता है। साथ ही, उत्पादन भी पहले की तुलना में बढ़ जाती है। ऐसा इस वजह से क्योंकि जब आपकी मिट्टी की जांच होती है, तो यह पता चल जाता है कि आखिर मृदा में कमी क्या है और इसे किस तरह सही करना है। इसके साथ-साथ ये भी पता चल जाता है, कि आखिर इस मृदा में कौन सी फसल बेहतर होगी।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड कब बनता है

इस कार्ड को बनवाने हेतु आपको योजना की ऑफिशियल वेबसाइट SOILHEALTH.DAC.GOV.IN पर जाना पड़ेगा। इसके पश्चात होम पेज पर मांगी गई जानकारी भरकर LOGIN के विकल्प पर क्लिक करना होगा। पेज खुलने पर अपना राज्य चुनें और CONTINUE के बटन पर क्लिक करना होगा। अगर पहली बार आवेदन कर रहे हैं, तो नीचे REGISTER NEW USER पर क्लिक करें और रजिस्ट्रेशन फॉर्म भर दें। आपको इस रजिस्ट्रेशन फॉर्म में USER ORGANIZATION DETAILS, LANGUAGE, USER DETAILS, USER LOGIN ACCOUNT DETAILS की जानकारी भरनी पड़ेगी। फिर फॉर्म में समस्त जानकारी सही-सही भरकर अंत में सबमिट के बटन पर क्लिक करना होगा। ऐसा करने के उपरांत लॉगिन करके मृदा की जांच हेतु आवेदन कर सकते हैं। आप यदि चाहें तो हेल्पलाइन नंबर 011-24305591 और 011-24305948 पर भी कॉल कर संपर्क साध सकते हैं। उसके उपरांत आप HELPDESK-SOIL@GOV.IN पर ई-मेल भी कर सकते हैं।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड से क्या फायदा होता है

मृदा स्वास्थ्य कार्ड (soil health card) योजना के अंतर्गत भारत का कोई भी किसान भाई मृदा की जाँच करा सकता है। इस कार्ड की मदद से कृषक सहजता से जान सकता है, कि मृदा में किन पोषक तत्वों की कमी है। जल कितना उपयोग करना है और किस फसल का उत्पादन करने से उन्हें लाभ हांसिल होगा। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि कार्ड बनने के उपरांत किसानों को मिट्टी में नमी का स्तर, मृदा की सेहत, उत्पादक क्षमता, क्वालिटी एवं मिट्टी की कमजोरियों को सुधारने के तरीकों के संबंध में बताया जाता है।

हर जगह प्रयोगशालाएं भी लगवाई गई हैं

किसानों के खेत की मृदा जांच के लिए हर जगह प्रयोगशालाएं लगवाई गई हैं। दरअसल, इन प्रयोगशालाओं में वैज्ञानिकों द्वारा जांच के पश्चात मृदा के गुण-दोष की सूची तैयार की जाती है। इसके साथ ही इस सूची में मृदा से संबंधित जानकारी और सही सलाह उपस्थित होती है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड के मुताबिक, खेती करने से फसल की पैदावार क्षमता और किसानों की आमदनी में काफी वृद्धि होती है। इसके साथ-साथ खाद का इस्तेमाल एवं मृदा का संतुलन बिठाने में भी सहायता मिलती है।

सॉयल हैल्थ कार्ड
स्वस्थ धरा, खेत हरा

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना

इन राज्यों में 200 रुपए किलो के टमाटर को राज्य सरकार की मदद से 60 रुपए किलो में बेचा जा रहा है

भारत भर में टमाटरों की निरंतर कीमतों में वृद्धि से लोगों को सहूलियत पहुँचाने के लिए कुछ राज्य सरकारें मंडियों में सस्ती कीमतों पर टमाटर बेच रही हैं। इसमें उत्तर प्रदेश भी शामिल है।

टमाटर के भाव इस समय पूरे देश में सातवें आसमान पर हैं। भारत की राजधानी दिल्ली और उसके आसपास के राज्यों में तो टमाटर 200 रुपये प्रति किलो तक बेचा जा रहा है। हालांकि, फिलहाल आप 200 रुपये वाले इन्हीं टमाटरों को 60 रुपये किलो में खरीद पाएंगे। बतादें, कि आपको इसके लिए प्रतिदिन प्रातः 9 बजे से पूर्व ही उठना होगा।

किस प्रकार सस्ता टमाटर बेचने की व्यवस्था की गई है

भारत भर में निरंतर महंगे हो रहे टमाटरों से लोगों को सहूलियत पहुँचाने के लिए कुछ राज्य सरकारें मंडियों में सस्ती कीमतों पर टमाटर विक्रय कर रही हैं। जैसे कि तमिलनाडु में स्टालिन सरकार सब्जी मंडियों में लोगों को सस्ती कीमतों पर लोगों को टमाटर मुहैया करा रही है। अब ऐसा ही कुछ उत्तर प्रदेश में भी हो रहा है। दरअसल, उत्तर प्रदेश की विभिन्न मंडियों में राज्य कृषि उत्पादन मंडी परिषद और मंडी सचिव की मदद से लगाई गई दुकानों पर आम ग्राहकों के लिए सस्ते टमाटरों की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। हालांकि, यहां आपको टमाटर प्रातः 9 बजे से दोपहर के 2 बजे तक ही मिलेगा।

अगर आप सस्ते टमाटर खरीदना चाहते हो तो सबसे पहले ये काम करें

दरअसल, फिलहाल यह समाचार साहिबाबाद मंडी से सामने आया है। परंतु, आशा है कि शीघ्र ही यह सुविधा संपूर्ण राज्य में मिलने लगेगी। विभिन्न सब्जी मंडियों में तो यह चालू हो गया है। इसलिए आप अपने शहर के समीप मंडी में जाकर यह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, कि क्या वहां भी यह योजना चल रही है या नहीं।

टमाटर और कितने समय तक महँगा रहेगा

टमाटर की महंगाई को लेकर विशेषज्ञों का मानना है, कि आगामी कुछ दिनों में इसकी कीमतों में गिरावट आएगी। ऐसा इसलिए क्योंकि जैसे ही बरसात कम होगी, टमाटर बाजार में आने शुरू हो जाऐंगे और जैसे ही एक साथ ढेर सारा टमाटर बाजार में आया, उसकी आपूर्ति अधिक हो जाएगी और मांग कम हो जाएगी। इसकी वजह से टमाटर की कीमतें धड़ाम से नीचे गिर जाऐंगी। हालांकि, जब तक कीमतें गिर नहीं जाती आम आदमी की थाली से टमाटर की चटनी तो गायब ही रहेगी। विभिन्न घरों में तो विगत कई दिनों से टमाटर नहीं आया है।

मूसलाधार मानसूनी बारिश से बागवानी फसलों को भारी नुकसान

भारत के कई राज्यों में अत्यधिक मानसूनी बारिश ने किसानों की फसलों को हानि पहुंचाई है। मानसूनी बारिश के चलते हिमाचल प्रदेश के किसानों की फसलों को भी काफी प्रभावित किया है। बतादें, कि सोलन जनपद में कई हैक्टेयर में लगी सब्जियों की फसल चौपट हो गई है।

सावन के दस्तक देते ही भारत के विभिन्न राज्यों में अच्छी खासी बारिश ने हाजिरी दे दी है। बतादें, कि भारत की राजधानी समेत विभिन्न राज्यों में विगत कई दिनों से मूसलाधार बरसात हो रही है। इसके चलते विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में नदी नाले उफान पर आ चुके हैं। साथ ही, खेतों में जलभराव की स्थिति पैदा हो चुकी है। वहीं, मूसलाधार बारिश होने की वजह से धान की खेती करने वाले किसान बेहद खुश हैं, तो बागवानी एवं सब्जी उगाने वाले किसानों के लिए यह बरसात मुसीबत बन चुकी है। निरंतर हो रही इस बारिश की वजह से शिमला मिर्च, हरी मिर्च, फूलगोभी और टमाटर समेत विभिन्न प्रकार की हरी सब्जियों को भारी हानि पहुंची है। इससे किसान भाइयों को आर्थिक तौर पर हानि उठानी पड़ी है।

मुरादाबाद में किसानों को भारी नुकसान

यदि हम बात उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद की करें तो यहां पर बारिश के चलते हरी सब्जियों की खेती करने वाले किसान काफी दुखी नजर आ रहे हैं। खेत में पानी भर जाने की वजह से भिंड़ी, लौकी और खीरा समेत विभिन्न प्रकार की फसल बर्बाद हो गई। परंतु, सबसे ज्यादा हानि हरी मिर्च की खेती करने वाले किसानों को वहन करनी पड़ी है। किसानों का कहना है, कि इस साल हरी मिर्ची की फसल अच्छी हुई थी। ऐसे में उनको आशा थी कि हरी मिर्च बेचकर उन्हें अच्छी खासी आमदनी होगी। परंतु, बारिश ने उनके सारे सपनों चकनाचूर कर दिया।

बागवानी फसलों को काफी हानि पहुंची है

यह कहा जा रहा है, कि जिले के मिर्च उत्पादक किसानों को बरसात की वजह से काफी हानि वहन करनी पड़ी है। वर्तमान में किसान फसल बर्बादी से हताश होकर सरकार के आगे मुआवजे की मांग कर रहे हैं। मुरादाबाद के देवापर के सैनी वाली मिलक में बारिश होने की वजह से कृषकों की कई लाख रूपए की हरी मिर्च की फसल चौपट हो गई है। इसी प्रकार शामली जनपद में भी बारिश के चलते टमाटर, लौकी, तोरी और हरी मिर्च की फसल चौपट हो गई है।

अधिकारियों को हानि का आँकलन करने के निर्देश दिए गए हैं

हिमाचल प्रदेश में भी मूसलाधार बारिश से किसानों को काफी ज्यादा नुकसान हुआ है। सोलन जनपद में कई हेक्टेयर में लगी सब्जियों की फसल बर्बाद हो गई। इससे सैकड़ों किसानों को लाखों रुपये की आर्थिक क्षति उठानी पड़ी है। ज्यादा बारिश से टमाटर और शिमला मिर्च की फसल खेतों में तैर गईं। साथ ही, पानी में निरंतर भिंगने के चलते टमाटर और शिमला मिर्च सड़ने भी लगे हैं। किसानों का कहना है, कि बारिश से जनपद में 30% फसल बर्बाद हो चुकी है। इसी कड़ी में किसानों की मांग पर नुकसान का आकलन करने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं।

किसानों को वर्ष भर में करोड़ों की हानि

बतादें, कि सोलन जनपद में 5800 हेक्टेयर में किसान टमाटर की खेती करते हैं। सोलन जनपद में टमाटर से वार्षिक 80 करोड़ रुपये का व्यवसाय होता है। उधर, इसी तरह यहां के किसान वर्ष में 26290 क्विंटल शिमला मिर्च की पैदावार करते हैं, जिसे बेचकर 41.20 करोड़ रुपये की आमदनी होती है। यदि बारिश से 30 प्रतिशत फसल बर्बाद हो जाती है, तो किसानों को करोड़ों रुपये की हानि हो सकती है।

औषधीय खेती

औषधीय गुणों वाली इस फसल की खेती कर किसान अच्छी आय कर सकते हैं

किसानों को खेती किसानी में थोड़ा लीक से हटकर चलने की जरूरत है। बतादें, कि सोमलता काफी चर्चित औषधीय पौधों में से एक है। इससे लोगों के स्वास्थ्य को विभिन्न प्रकार से लाभ होते हैं।

जब औषधीय पौधों की बात की जाए तो सोमलता का नाम भी सबसे ऊपर आता है। इसे अंग्रेजी में सिडा कॉर्डिफोलिया (SIDA CORDIFOLIA) के नाम से भी जाना जाता है। यह औषधीय पौधा विशेष तौर पर भारत में पाया जाता है। ऐसा कहा जाता है, कि प्राचीन काल में सोमरस भी इसी से बनाया जाता था। सोम लताएं प्रमुख तौर पर पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती हैं। इस पौधे की जड़ों एवं पत्तियों का इस्तेमाल औषधीय कार्यों के लिए किया जाता है। इसकी सहायता से बहुत सारी बड़ी-बड़ी औषधियाँ बनती हैं। जो शरीर को खतरनाक रोगों से निजात दिलाने में सहायक भूमिका निभाती हैं। आइये जानें सोमलता कैसे है स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद।

सोमलता से बनी औषधी से कई रोग दूर हो जाते हैं

डॉक्टर सोनाली बताती हैं, कि इस पौधे के बहुत सारे चिकित्सीय फायदे हैं। इसे ताकत और शक्ति बढ़ाने वाले टॉनिक को तैयार करने में इस्तेमाल किया जाता है। इससे बनी औषधियों का इस्तेमाल सूजन को कम करने, गठिया एवं अन्य सूजन संबंधी स्थितियों से जुड़े दर्द को कम करने में भी होता है।

श्वसन संबंधी समस्याओं से दिलाए निजात

सोमलता का इस्तेमाल सामान्य तौर पर अस्थमा, ब्रोंकाइटिस, सर्दी और खांसी जैसी श्वसन संबंधी समस्याओं से निजात दिलाने के लिए भी किया जाता है। ऐसा माना जाता है, कि यह वायुमार्ग को साफ करने में सहायता करता है।

सोमलता ऊर्जा और सहनशक्ति को भी बढाती है

यह पौधा शरीर को तनाव से दूर रखने और सहनशक्ति बढ़ाने में भी काफी सहयोग कर सकता है। बहुत सारे डॉक्टर्स नियमित तौर पर इससे निर्मित औषधियों का सेवन करने की सलाह देते हैं। हालांकि, डॉक्टर की सलाह के बगैर इसका सेवन करना सेहत के लिए काफी खतरनाक भी साबित हो सकता है।

सोमलता से पाचन तंत्र भी काफी अच्छा रहता है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि सोमलता का इस्तेमाल पाचन में सुधार और अपच से निजात दिलाने के लिए भी किया जाता है। बहुत सारी औषधी कंपनियां इस पौधों को चूर्ण एवं सीरप बनाने में भी इस्तेमाल करती हैं।

किसान इस खांसी, सर्दी और जुकाम जैसे रोगों से निजात दिलाने वाले औषधीय पौधे से अच्छी आय कर सकते हैं

बनफशा बहुत सारी खतरनाक बीमारियों को जड़ से समाप्त करने की क्षमता रखता है। आइए इस पौधे के विषय में विस्तार पूर्वक जानते हैं। क्या आपने कभी बनफशा के विषय में सुना है ? बहुत सारे लोग यह नाम शायद पहली बार सुन रहे होंगे। दरअसल, यह एक औषधीय पौधा होता है। जो मेडिकल लाइन में काफी प्रसिद्ध है। इसका इस्तेमाल उन औषधियों को तैयार करने में किया जाता है। जो कि जुकाम, सर्दी और खांसी आदि में काम आते हैं। बनफशा बेहद सुगंधित पौधा होता है, जो फूलों के जरिए से पहचाना जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम VIOLA ODORATA है। यह पौधा सामान्य तौर पर भारत, दक्षिण एशिया, यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका में पाया जाता है। इसके पत्ते छोटे एवं हरे रंग के होते हैं, जबकि इसके फूल लवंगी अथवा नीले रंग के होते हैं।

बनफशा का इस्तेमाल सर्वाधिक यहां होता है

बनफशा के पत्तों, फूलों और गुच्छों का इस्तेमाल आयुर्वेदिक चिकित्सा में किया जाता है। इसको प्रमुख तौर पर मांसपेशियों को शक्ति प्रदान करने के लिए जाना जाता है। यह सांस की समस्याओं को कम करने और श्वसन तंत्र को सुधारने में काफी ज्यादा सहयोग कर सकता है। यह अपच और आंत्र-संबंधित समस्याओं में उपयोगी भूमिका अदा कर सकता है।

जुकाम और साइनस संक्रमण

बनफशा के पानी को जुकाम और साइनस संक्रमण को खत्म करने के लिए उपयोग किया जाता है। इसके द्वारा नाक से संक्रमण और जुकाम के लक्षणों को कम किया जा सकता है।

शांतिदायक गुण

बनफशा की शांतिदायक गुणों की वजह से भी प्रशंसा की जाती है। इसका इस्तेमाल तनाव, चिंता, अस्थायी नींद जैसी समस्याओं एवं मानसिक तनाव को कम करने में किया जाता है।

त्वचा समस्याओं का समाधान

बनफशा का तेल त्वचा की देखभाल के लिए उपयोग किया जाता है। यह त्वचा को मुलायम एवं चमकदार बनाने में काफी सहायता कर सकता है। साथ ही, त्वचा संबंधी समस्याओं, जैसे कि खुजली, छाले, दाग-धब्बे आदि को कम करने में भी सहयोग कर सकता है। हालांकि, बीमारियों को दूर भगाने के लिए कितनी मात्रा में बनफशा का इस्तेमाल किया जाता है। इस सन्दर्भ में सिर्फ डॉक्टर ही बता सकते हैं। डॉक्टर संदीप का कहना है, कि बनफशा को दवा बनाने वाली कई कंपनियां इस्तेमाल करती हैं। वनफशा को काफी महंगी कीमत पर खरीदा जाता है।

वैसे तो बनफशा प्रमुख तौर पर दक्षिण एशिया, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में पाया जाता है। परंतु, भारत में भी इसकी कुछ किस्में पाई जाती हैं। भारत में बनफशा प्राकृतिक तौर पर कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है। कुल मिलाकर बनफशा के पौधे गर्म तापमान को सहन नहीं कर सकते। इनके लिए ठंडा तापमान सबसे सही होता है।

NAND BABA MISSION: योगी सरकार देसी गाय पालने के लिए 40 हजार रुपये की आर्थिक सहायता देगी

योगी सरकार की तरफ से दुग्ध उत्पादन की बढ़ाने के लिए एक कवायद शुरू की गई है। यदि कोई किसान पंजाब से साहिवाल, राजस्थान से थारपारकर गाय, गुजरात से गिर गाय खरीदना चाहे तो सरकार की तरफ से उसको सहायता प्रदान की जाएगी।

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार किसानों एवं पशुपालकों के लिए अच्छी खबर लेकर आई है। जानकरी के लिए बतादें, कि योगी सरकार ने एक ऐसी योजना शुरू की है, जिसके अंतर्गत देसी गायों को पालने वाले पशुपालकों को तकरीबन 40000 रुपये का लाभ हो सकता है। हालांकि, गाय पाल कर उसका दूध बेच कर किसान ऐसे ही अच्छी आमदनी कर सकते हैं। परंतु, वर्तमान में योगी सरकार ने जो निर्णय लिया है, उसको देख कर कहा जा सकता है कि इससे किसानों को काफी सहायता मिलने वाली है।

नंद बाबा मिशन योजना

बतादें, कि उत्तर प्रदेश की योगी सरकार द्वारा प्रदेश में पशुपालकों का सहयोग करने के लिए एवं डेयरी उद्योग को प्रोत्साहन देने के लिए नंद बाबा मिशन की शुरुआत की है। इस **नन्द बाबा दुग्ध मिशन** के अंतर्गत जो भी पशुपालक कोई देसी गाय खरीदता है, तो उसको गौ संवर्धन योजना के अंतर्गत 40 हजार रुपये की सहायता धनराशि दी जाएगी।

आप इसको ऐसे भी समझ सकते हैं, कि यदि कोई किसान गुजरात से गिर गाय, पंजाब से साहिवाल, राजस्थान से थारपारकर गाय खरीदना चाहता है, तो सरकार की तरफ से उसको इन गायों पर 40 हजार का अनुदान प्रदान किया जाएगा। वास्तव में इन तीनों प्रजातियों की गायें काफी महंगी होती हैं, इस वजह से सरकार ने निर्णय लिया है, कि इनकी खरीद पर किसानों को 40 हजार की सहायता प्रदान की जाएगी।

मुख्यमंत्री प्रगतिशील पशुपालक प्रोत्साहन योजना

दरअसल, उत्तर प्रदेश में फिलहाल मुख्यमंत्री प्रगतिशील पशुपालक प्रोत्साहन योजना पहले से चल रही है। इस योजना के अंतर्गत किसानों और पशुपालकों को 2 गाय रखने पर सरकार की तरफ से 10 से 20 हजार रुपये की प्रोत्साहन धनराशि दी जाती है। यदि आप गाय पालते हैं अथवा गाय पालने के इच्छुक हैं तो इन दोनों योजनाओं का फायदा उठा सकते हैं। इसके लिए आपको अपने आसपास के पशुपालन विभाग में जाकर अधिकारियों से संपर्क करना पड़ेगा। इसके साथ ही इस योजना की जानकारी आप ऑनलाइन भी प्राप्त कर सकते हैं।

असम सरकार ने दूध उत्पादन बढ़ाने और आवारा पशुओं को कम करने की योजना तैयार की

आज हम आपको बताने वाले हैं, सेक्स्ड सॉर्टेड सीमन के बारे में जो कि एक ऐसा प्रोसेस है, जिसके अंतर्गत लैब में शुक्राणुओं से उसके Y गुणों को अलग कर दिया जाता है। इसके उपरांत इन शुक्राणुओं को गायों और भैसों के गर्भ में डाल दिया जाता है। जैसा भारत में किसान कृषि समेत अपना और अपने परिवार का भरण पोषण करने के लिए पशुपालन भी किया करते हैं।

देश में लाखों की तादात में ऐसे कृषक हैं, जो दूध और दूध से निर्मित उत्पादों को बेचकर अपनी आजीविका चला रहे हैं। इन किसानों की हमेशा यही कामना रहती है, कि उनकी गाय- भैंस सदैव बछिया ही पैदा करें। जिससे कि उन्हें कभी भी दूधारू पशुओं को नहीं खरीदना पड़े। घर की बछिया ही बड़ी होकर दूध प्रदान करने लगे। परंतु, हमारे चाहने से ऐसा नहीं होता है। गाय- भैंस बछिया के साथ- साथ बछड़े को भी पैदा करती हैं। हालाँकि, वर्तमान में किसानों को बछिया के जन्म को लेकर चिंतित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। वैज्ञानिकों ने एक ऐसी तकनीक को खोज निकाला है, जिससे केवल बछिया ही पैदा होंगी।

दूध उत्पादन बढ़ाने और आवारा पशुओं को कम करने की पहल

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि केवल बछिया को जन्म देने के लिए असम की सरकार द्वारा सेक्स्ड सॉर्टेड सीमन की शुरुआत की है। असम सरकार का यह कहना है, कि इस मिशन से प्रदेश में दूध की पैदावार में इजाफा होगा। साथ ही, निराश्रित जानवरों की तादात में गिरावट आएगी। दरअसल, वर्तमान में सारे देश में ट्रैक्टर के माध्यम से खेती हो रही है। इस वजह से बछड़े को बैल नहीं बनाया जा रहा है। इस वजह से ये बछड़े बड़े होकर सड़कों पर छुट्टा आवारा घूमते हैं। इसकी वजह से बहुत बारी सड़कों पर दुर्घटना भी हो जाती है। साथ ही, ये सांड फसलों को भी चौपट कर देते हैं। अब ऐसी स्थिति में सरकार के मिशन से केवल बछिया पैदा होने से दूध का उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ सड़कों पर आवारा मवेशियों की तादात में भी गिरावट आएगी।

असम सरकार 1.16 लाख सेक्स्ड सॉर्टेड सीमन खरीदेगी

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा शर्मा की सरकार द्वारा राज्य में मादा बछड़ों की तादात बढ़ाने के लिए 1.16 लाख सेक्स्ड सॉर्टेड सीमन खरीदने की योजना तैयार की है। मुख्य बात यह है, कि CM हिमंत ने स्वयं ट्वीट कर के इसकी जानकारी साझा की है। उन्होंने कहा है, कि सरकार प्रदेश में गाय और भैसों के लिए कृत्रिम गर्भाधान की प्रक्रिया चालू करेगी।

सेक्स्ड सॉर्टेड सीमन प्रक्रिया

सेक्स्ड सॉर्टेड सीमन एक ऐसी प्रक्रिया होती है, जिसके अंतर्गत लैब के अंदर शुक्राणुओं से उसके Y गुणों को अलग कर दिया जाता है। इसके पश्चात इन शुक्राणुओं को गायों एवं भैसों के गर्भ में डाल दिया जाता है। ऐसा करने से गाय एवं भैसों से पैदा होने वाले बच्चे में बछिया के जन्म की संभावना तकरीबन 90% प्रतिशत तक बढ़ जाती है।

ESCORTS

THE POWERTRAC EURO 55 NEXT

#TechnologyDesignedToDeliver

55 HP ENGINE | 2-WHEEL DRIVE | 15-SPEED GEARBOX | INDEPENDENT PTO | 2,000KG SENSI 1 LIFT

EQUIPPED WITH ADVANCED TECHNOLOGY FOR HIGH-END APPLICATION

POWERTRAC

देश का # 1 किफ़ायती ट्रैक्टर

मिट्टी की सेहत - खाद

भारत में पाई जाने वाली मृदाओं और उनमें उगाई जाने वाली फसलें

भारत में एक बहुत ही प्रसिद्ध कहावत है, माटी की काया है एक दिन माटी में ही मिल जाएगी। यह कहावत मिट्टी की महत्व को दर्शाती है। कैल्शियम, सोडियम, एल्युमिनियम, मैग्नीशियम, आयरन, क्ले एवं मिनरल ऑक्साइड के अवयवों से मिलकर बनी मिट्टी वातावरण को संशोधित भी करती है।

बतादें, कि घर निर्माण से लेकर फसल उत्पादन तक हमारी जिंदगी के तकरीबन हर कार्य में मृदा कहीं न कहीं आवश्यक होती है। किसी भी क्षेत्र में कौन-सी फसल बेहतर ढ़ंग से हो सकती है, यह बात काफी हद तक उस क्षेत्र की मृदा पर आश्रित रहती है। इकोसिस्टम में मिट्टी पौधे की उन्नति के लिए एक जरिए के तौर पर कार्य करती है। यहां हम आपको बताएंगे कि भारत के कौन-से इलाकों में कौन-सी मिट्टी होती है और उसमें कौन-सी फसलें उत्पादित की जा सकती हैं।

दोमट या जलोढ़ मिट्टी कहाँ पाई जाती है और इसमें कौन-कौन सी फसल की जा सकती हैं

जलोढ़ मिट्टी भारत में सबसे बड़े पैमाने पर पाई जाने वाली और सबसे महत्वपूर्ण मिट्टी समूह है। भारत के कुल भूमि रकबे का लगभग 15 लाख वर्ग किमी अथवा 35 प्रतिशत भाग में यही मिट्टी है।

भारत की तकरीबन आधी कृषि जलोढ़ मिट्टी पर होती है। जलोढ़ मृदा वह मृदा होती है, जिसे नदियां बहा कर लाती हैं। इस मृदा में नाइट्रोजन एवं पोटाश की मात्रा कम होती है। परंतु, फॉस्फोरस एवं ह्यूमस की अधिकता होती है। जलोढ़ मृदा उत्तर भारत के पश्चिम में पंजाब से लेकर पूरे उत्तरी विशाल मैदान से चलते हुए गंगा नदी के डेल्टा इलाकों तक फैली है। इस मृदा की यह विशेषता है, कि इसमें उर्वरक क्षमता काफी हद तक अच्छी होती है। पुरानी जलोढ़ मृदा को बांगर एवं नई को खादर कहा जाता है। जलोढ़ मृदा में काला चना, हरा चना, सोयाबीन, मूंगफली, सरसों, तिल, जूट, मक्का, तंबाकू, कपास, चावल, गेहूं, बाजरा, ज्वार, मटर, लोबिया, काबुली चना, तिलहन फसलें, सब्जियों और फलों की खेती इस मृदा में होती है।

काली मिट्टी कहाँ पाई जाती है और इसमें कौन-कौन से फसल की जा सकती हैं

काली मिट्टी बेसाल्ट चट्टानों (ज्वालामुखीय चट्टानें) के टूटने और इसके लावा के बहने से निर्मित होती है। इस मिट्टी को रेगुर मिट्टी और कपास की मिट्टी भी कहा जाता है। इसमें आयरन, मैग्नेशियम, लाइम और पोटाश होते हैं।

परंतु, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और कार्बनिक पदार्थ इसमें कम पाए जाते हैं। इस मृदा का काला रंग टिटेनीफेरस मैग्नेटाइट और जीवांश (ह्यूमस) की वजह से होता है। यह मृदा डेक्कन लावा के रास्ते में पड़ने वाले इलाकों जैसे कि महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, गुजरात, आंध प्रदेश और तमिलनाडु के कुछ इलाकों में होती है। नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा और ताप्ती नदियों के किनारों पर यह मिट्टी पाई जाती है। जानकारी के लिए बतादें कि काली मिट्टी में होने वाली प्रमुख फसल कपास है। हालाँकि, इसके अतिरिक्त गन्ना, गेहूं, ज्वार, सूरजमुखी, अनाज की फसलें, चावल, खट्टे फल, सब्ज़ियां, तंबाकू, मूंगफली, अलसी, बाजरा व तिलहनी फसलें होती हैं।

लाल और पीली मिट्टी कहाँ पाई जाती है और इसमें कौन-कौन सी फसल की जा सकती हैं

यह मिट्टी दक्षिणी पठार की पुरानी मेटामार्फिक चट्टानों के टूटने से बनती है। भारत के अंदर यह मृदा ओड़िशा, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश के पूर्वी इलाकों, छोटानागपुर के पठारी क्षेत्र, पश्चिम बंगाल के उत्तरी पश्चिम जिलों, मेघालय की गारो खासी और जयंतिया के पहाड़ी क्षेत्रों, नागालैंड, राजस्थान में अरावली के पूर्वी क्षेत्र, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और कर्नाटक के कुछ भागों में पाई जाती है।

यह मृदा कुछ रेतीली होती है और इसमें अम्ल एवं पोटाश की मात्रा ज्यादा होती है जबकि इसके अंदर नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम और ह्यूमस की कमी होती है। लाल मिट्टी का लाल रंग आयरन ऑक्साइड की मौजूदगी की वजह से होता है। परंतु, जलयोजित तौर पर यह पीली दिखाई पड़ती है। चावल, गेहूं, गन्ना, मक्का, मूंगफली, रागी, आलू, तिलहनी व दलहनी फसलें, बाजरा, आम, संतरा जैसे खट्टे फल व कुछ सब्ज़ियों की खेती अच्छी सिंचाई व्यवस्था करके उगाई जा सकती हैं।

लैटेराइट मिट्टी कहाँ पाई जाती है और इसमें कौन-कौन सी फसल की जा सकती हैं

लैटेराइट मृदा पहाड़ियों एवं ऊंची चट्टानों की चोटी से निर्मित होती है। मानसूनी जलवायु के शुष्क एवं नम होने का जो बदलाव होता है, उससे इस मृदा को निर्मित होने में सहायता मिलती है। मृदा में अम्ल एवं आयरन अधिक होता है। वहीं फॉस्फोरस, नाइट्रोजन, कैल्शियम और ह्यूमस की कमी होती है। इस मृदा को गहरी लाल लैटेराइट, सफेद लैटेराइट एवं भूमिगत जलवायी लैटेराइट में विभाजित किया जाता है। लैटेराइट मृदा केरल, मध्य प्रदेश, ओडिशा, असम, तमिलनाडु और कर्नाटक में पाई जाती है। लैटेराइट मृदा अत्यधिक उपजाऊ नहीं होती है। परंतु दलहन, चाय, कॉफी, रबड़, नारियल, काजू, कपास, चावल और गेहूं की खेती इस मिट्टी में होती है। इस मिट्टी में आयरन की भरपूर मात्रा होती है। इस वजह से ईंट तैयार करने में भी इस मृदा का इस्तेमाल किया जाता है।

किसान गोबर से बने इन उत्पादों का व्यवसाय करके कुछ ही समय में अमीर बन सकते हैं

आपकी जानकारी के लिए बतादें कि बाजार में धूपबत्ती की भांति इस वक्त गोबर से बने दिये भी खूब बिक रहे हैं। सबसे खास बात यह है, कि गोबर से निर्मित दिये भारत समेत विदेशों में भी ऑनलाइन माध्यम से विक्रय किए जा रहे हैं।

फिलहाल, दुनियाभर में किसान खेती से हटकर विभिन्न प्रकार के व्यापार कर रहे हैं। हालांकि, यह समस्त व्यापार कृषि एवं पशुपालन से ही संबंधित हैं। आज हम आपको गाय भैसों के गोबर से होने वाले ये बिजनेस आइडियाज देंगे, जो आपको कुछ ही समयांतराल में अमीर बना देंगे। सबसे खास बात यह है, कि इन कारोबारों को शुरू करने के लिए आपको काफी अधिक पूंजी की आवश्यकता नहीं है।

गोबर से निर्मित धूपबत्ती

गोबर से तैयार की गई धूपबत्ती इस समय बाजार में आम धूपबत्तियों और अगरबत्तियों से कहीं अधिक बिकती हैं। दरअसल, गाय के गोबर को काफी ज्यादा पवित्र माना जाता है, इसका उपयोग हिंदू धर्म को मानने वाले लोग अपनी पूजा पाठ वाली जगह पर भी करते हैं। यही कारण है, कि गाय के गोबर से निर्मित अगरबत्ती बाजार में बड़ी ही तीव्रता से बिक रही है। सबसे खास बात यह है, कि बिजनेस आप बड़ी सुगमता से घर पर भी चालू कर सकते हैं।

गोबर से निर्मित दिये

धूपबत्ती की भांति इस समय गोबर से निर्मित दिये भी बाजार में अत्यधिक बिक रहे हैं। सबसे खास बात यह है, कि गोबर से निर्मित दिये भारत के अलावा विदेशों में भी ऑनलाइन माध्यम से बिक रहे हैं। इस व्यवसाय को भी आप सहजता से अपने घर में ही चालू कर सकते हैं। इसके लिए आपको सर्व प्रथम गाय के गोबर को सुखा कर उसका पाउडर बना लेना है, उसके पश्चात उसमें गोंद मिलाकर दिये के शेप में उसे ढाल लेना है। दो चार दिनों तक के लिए उसको धूप में रख कर सुखाने के पश्चात आप सहजता से उत्तम कीमत पर उसकी बाजार में बिक्री कर सकते हैं।

गोबर से निर्मित गमलों का व्यवसाय

जैसा कि हम जानते हैं, कि बारिश का मौसम चल रहा है, ऐसे में गमलों की मांग काफी ज्यादा है। लोग अब हरियाली की तरफ दौड़ रहे हैं। इस गमले की सबसे मुख्य बात यह है, कि इसमें पौधे बड़ी ही तीव्रता से बड़े होते हैं और जब ये गमला गलने लगता है, तो उसे खाद के रूप में भी उपयोग कर लिया जाता है। यही कारण है, कि फिलहाल बाजार में इसकी मांग काफी बढ़ गई है। इस प्रकार के गमले इस समय बाजार में 50 से 100 रुपये के बिक रहे हैं।

गोकाष्ठ लकड़ी का व्यवसाय

गोकाष्ठ एक ऐसी वस्तु है, जिसका उपयोग दाह संस्कार में किया जाता है। दरअसल, हिंदू धर्म में जब कोई इंसान मरता है, तो उसका दाह संस्कार किया जाता है। मतलब की उसके शरीर को जलाया जाता है। अब ऐसी स्थिति में इस क्रिया के लिए लकड़ियों की काफी जरूरत होती है। इसी कारण से प्रति वर्ष लाखों वृक्ष कट जाते हैं। परंतु, यदि ये क्रिया गोकाष्ठ से होने लगे तो धरती के लाखों वृक्ष प्रति वर्ष बच जाएंगे। सबसे खास बात यह है, कि गोष्ठ बनाने हेतु आप 50000 तक में एक मशीन ला सकते हैं और फिर उससे अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

गोबर से खाद का व्यवसाय

गोबर एक प्रकार का जैविक खाद है। गांवों में आज भी किसान गोबर का उपयोग खाद के तौर पर करते हैं। यदि आप इस चीज का व्यवसाय चालू करते हैं, तो देखते ही देखते कुछ ही दिनों में आप धनी बन सकते हैं। दरअसल, इस समय शहरों के अंदर लोग अपनी बालकनी को गमलों से भर रहे हैं। साथ ही, उन गमलों में लगे पौधों को बड़ा करने हेतु वह जैविक खाद का उपयोग कर रहे हैं। इस वजह से यदि आप इस व्यवसाय में दांव लगाते हैं, तो निश्चित तौर पर आप सफल रहेंगे।

नैनो यूरिया उर्वरक क्या है और यह किस तरह से काम करता है ?

नैनो यूरिया, जिसे नैनोस्केल यूरिया या नैनोटेक्नोलॉजी-आधारित यूरिया के रूप में भी जाना जाता है, यूरिया उर्वरक का एक अभिनव रूप है जिसने हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया जा रहा है। इसमें पारंपरिक यूरिया (दानेदार यूरिया) की संरचना और गुणों को संशोधित करने के लिए नैनोटेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप यूरिया की कुशलता में वृद्धि हुई है, LIQUID नैनो यूरिया के इस्तेमाल से पारंपरिक यूरिया का पर्यावरण पर बुरा प्रभाव कम होगा है और फसल उत्पादकता में सुधार हुआ है। हमारे इस लेख में आप LIQUID नैनो यूरिया के गुणों और इसके इस्तेमाल से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी के बारे में जानेंगे।

नैनो यूरिया क्या है?

नैनो यूरिया, यूरिया का ही LIQUID रूप है , यूरिया एक रासायनिक नाइट्रोजन FERTILIZER है जिसका रंग सफ़ेद होता है, यह कृत्रिम रूप से पौधों को नाइट्रोजन प्रदान करता है जो पोधो के लिए एक प्रमुख पोषक तत्व है, नैनो यूरिया की 500 ML की बोतल में 40,000 मिलीग्राम प्रति लीटर NITROGEN होती है ,

नैनो यूरिया की प्रभावशीलता 85 – 90 % तक हो सकती है जिससे की पौधे को NITROGEN की उपलब्धता आसानी से हो जाती है ,नैनो यूरिया को सीधे पौधे की पत्तियों पर छिड़का जाता है जिसे पौधे द्वारा आसानी से अवशोषित कर लिया जाता है ,नैनो यूरिया को IFFCO – NANO BIOTECHNOLOGY RESEARCH CENTER कलोल गुजरात द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित किया गया है।

नैनो यूरिया से जुड़े महत्वपूर्ण बिंदु

- भारतीय फार्मर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड ने अगस्त 2021 में देश का पहला लिक्विड नैनो यूरिया संयंत्र चालू किया था।
- लिक्विड नैनो यूरिया का सीधा फसलों की पत्तियों पर छिड़काव किया जाता है , जिससे की पौधे द्वारा आसानी से सोख लिया जाता है।
- नैनो यूरिया की शेल्फ लाइफ एक साल होती है।
- यह किसानों के लिए सस्ता है और किसानों की आय बढ़ाने में भी लाभकारी है।
- IFFCO कंपनी के अनुसार नैनो यूरिया की एक बोतल का प्रभाव, यूरिया की एक बोरी के बराबर होती है , मतलब की 500 ML नैनो यूरिया की बोतल 45 किलोग्राम दानेदार यूरिया के बराबर है।

नैनो यूरिया से होने वाले लाभ

नैनो यूरिया पौधों की जड़ों द्वारा बेहतर संपर्क और अवशोषण को बढ़ावा देता है। इससे पौधे की पोषक तत्व ग्रहण क्षमता में सुधार होता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि फसलों द्वारा अधिक नाइट्रोजन का उपयोग किया जाता है और बर्बादी कम होती है।

नैनो यूरिया फसलों को नाइट्रोजन की निरंतर आपूर्ति प्रदान करता है, जिसके परिणामस्वरूप पौधों की वृद्धि और उपज में सुधार होता है।
नैनो यूरिया के नियंत्रित उपयोग और बढ़े हुए पोषक तत्व अवशोषण से पर्यावरण में नाइट्रोजन के नुकसान को कम करने में मदद मिलती है।

नैनो यूरिया के इस्तेमाल से जल प्रदूषण कम होता है क्योंकि दानेदार यूरिया पानी के साथ भूमि के निचे चला जाता है जिससे की भूमिगत जल प्रदूषण होता है
नैनो यूरिया के इस्तेमाल से नाइट्रस ऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम होता है, जो जलवायु परिवर्तन में एक शक्तिशाली योगदानकर्ता है।
नैनो यूरिया के इस्तेमाल से किसानों को उच्च फसल उपज प्राप्त होती है। इससे न केवल लागत बचती है बल्कि यूरिया की कुल मांग भी कम हो जाती है, जिससे अधिक टिकाऊ कृषि पद्धतियों में योगदान मिलता है।

पारंपरिक यूरिया (दानेदार यूरिया) में क्या कमियाँ है

यूरिया दुनिया भर में सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाले उर्वरकों में से एक है। यह पौधों को आवश्यक पोषक तत्व नाइट्रोजन प्रदान करता है, जो पौधों की वृद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण है। हालाँकि, पारंपरिक यूरिया में कुछ कमियाँ हैं जिन्हें नैनो यूरिया का इस्तेमाल करके दूर किया जा सकता है।

जब पारंपरिक यूरिया को मिट्टी में डाला जाता है, तो यह विभिन्न रासायनिक प्रतिक्रियाओं से गुजरती है जिससे वाष्पीकरण, निक्षालन और विनाइट्रीकरण के माध्यम से नुकसान होता है। ये नुकसान न केवल उर्वरक की प्रभावशीलता को कम करते हैं बल्कि वायु और जल प्रदूषण जैसे पर्यावरण प्रदूषण में भी योगदान करते हैं।

दानेदार यूरिया फसलों के लिए 30 -40 % ही प्रभावी है जबकि नैनो यूरिया फसलों के लिए 85 – 90 प्रतिशत तक प्रभावी है।

संक्षेप में, नैनो यूरिया कृषि उर्वरकों के क्षेत्र में एक आशाजनक प्रगति की किरण है। इसके नैनोस्केल गुण बेहतर पोषक तत्व ग्रहण, नियंत्रित रिलीज, कम पर्यावरणीय प्रभाव और कुशल संसाधन उपयोग प्रदान करते हैं। जैसे-जैसे इस क्षेत्र में अनुसंधान और विकास जारी है, नैनो यूरिया में टिकाऊ कृषि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता है, जो उर्वरक उपयोग को कम करते हुए फसल उत्पादकता में वृद्धि में योगदान देता है।

प्रगतिशील किसान

बेगूसराय के किसान नीरज ने 2 एकड़ में पपीते की खेती से कमाया लाखों का मुनाफा

नीरज सिंह ने अपने बाग में रेड लेडी किस्म के पपीते की खेती शुरू की है। उनका कहना है, कि वह एक पौधे से 100 किलो तक पपीता तोड़ रहे हैं। उनके बाग में 10 महिलाएं रोज काम करती हैं।

पपीता एक ऐसा फल होता है, जिसकी बाजार सालभर उपलब्धता बनी रहती है। पपीता की कीमत 40 से 50 रूपए के मध्य होती है। उत्तर प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु, हरियाणा, पंजाब और बिहार समेत बहुत सारे राज्यों में किसान पपीता का उत्पादन करते हैं। पपीता बागवानी के अंतर्गत आने वाली एक फसल है। बहुत सारे राज्यों में पपीता की खेती को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार द्वारा अच्छा खासा अनुदान प्रदान किया जाता है। विशेष रूप से बिहार के किसान खेती किसानी में अधिक रूची ले रहे हैं। बतादें, कि बिहार के सीतामढ़ी, नलंदा, हाजीपुर, दरभंगा और मधुबनी समेत बहुत सारे जनपदों में किसान पपीते का उत्पादन कर रहे हैं। परंतु, बेगूसराय जनपद की बात ही कुछ हटकर है। यहां पर एक किसान ने पपीते की खेती कर के लोगों के सामने नजीर प्रस्तुत की है।

एक पपीते के पौधे से कितना मुनाफा होता है

चेरिया बरियारपुर प्रखंड स्थित बढ़कुरवा के निवासी हैं। जानकारी के लिए बतादें कि किसान नीरज पपीते की खेती के जरिए सालाना 6 लाख रूपए की आमदनी कर रहे हैं। विशेष बात यह है, कि किसान नीरज सिंह को एक न्यूज चैनल पर प्रसारित एक खास कार्यक्रम से पपीते की खेती करने के लिए प्रेरित हुए। उसके पश्चात उन्होंने पपीते की खेती चालू कर दी। फिलहाल, उन्होंने 2 एकड़ भूमि के रकबे पर पपीते की खेती कर रखी है। विशेष बात यह है, कि पपीते के खेती के लिए नीरज को उद्यान विभाग से भी बेहद सहायता मिली और इसकी खेती आरंभ करने हेतु पौधें भी मुहैय्या कराए गए। वह एक पपीते के पौधे से 50 किलोग्राम तक पपीता की पैदावार कर रहे हैं।

पपीते की खेती से एक एकड़ में कितना मुनाफा होगा

मुख्य बात यह है, कि नीरज सिंह ने अपने बाग में रेड लेडी किस्म के पपीते को लगाया है। नीरज ने बताया है, कि वह कुछ पोधों से 100 किलो तक पपीता तोड़ रहे हैं। उनके बाग के अंदर 10 महिलाएं प्रतिदिन कार्य करती हैं। अब ऐसी स्थिति में उन्होंने 10 लोगों को रोजगार भी दे रखा है। किसान नीरज सिंह का कहना है, कि वह रेड लेडी किस्म के पपीते की दो एकड़ भूमि में खेती कर रहे हैं। एक वर्ष में पपीते की फसल तैयार हो जाती है। वह प्रति वर्ष 10 लाख रुपये के पपीते बेचते हैं। बतादें, कि 4 लाख रुपये की लागत को हटाकर वह 6 लाख रुपये का शुद्ध मुनाफा उठाते हैं।

पपीते की खेती के लिए 45 हजार तक अनुदान

उन्होंने बताया है, कि किसानों को परंपरागत खेती के साथ-साथ बागवानी भी करनी चाहिए। विशेष कर पपीते की खेती अवश्य करनी चाहिए। क्योंकि, इसमें दोगुना से भी ज्यादा मुनाफा होता है। यदि आप एक एकड़ में पपीते की खेती करते हैं, तो 2 लाख रुपये की लागत आ जाएगी। साथ ही, सरकार की ओर से प्रति एकड़ 45 हजार रुपये का अनुदान दिया जाता है। इस प्रकार बेगूसराय जनपद के अन्य किसानों के लिए भी पपीते की खेती करने का अच्छा अवसर है।

निरंजन सरकुंडे का महज डेढ़ बीघे में बैंगन की खेती से बदला नसीब

किसान निरंजन सरकुंडे ने बताया है, कि उनके पास 5 एकड़ खेती करने लायक भूमि है। पहले सरकुंडे अपने खेत में पारंपरिक फसलों की खेती किया करते थे। जिससे उनको उतनी आमदनी नहीं हो पाती थी।

उत्तर प्रदेश, राजस्थान, झारखंड, बिहार और हरियाणा में ही किसान केवल बागवानी की ओर रुख नहीं कर रहे। इनके साथ-साथ दूसरे राज्यों में भी किसान पारंपरिक फसलों की जगह फल और सब्जियों की खेती में अधिक रुची ले रहे हैं। मुख्य बात यह है, कि सब्जियों की खेती करने से किसानों की आय में भी काफी इजाफा होगा। इससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार देखने को मिलेगा। हालांकि, पहले पारंपरिक फसलों की खेती करने पर किसानों को खर्चे की तुलना में उतना ज्यादा मुनाफा नहीं होता था। साथ ही, परिश्रम भी काफी ज्यादा करना पड़ता था। बहुत बार तो अत्यधिक बारिश अथवा सूखा पड़ने से फसल भी बर्बाद हो जाती थी। परंतु, वर्तमान में बागवानी करने से किसानों को प्रतिदिन आमदनी हो रही है।

महाराष्ट्र के नांदेड़ निवासी किसान का चमका नसीब

वर्तमान में हम महाराष्ट्र के नांदेड़ के निवासी एक ऐसे ही किसान के संबंध में बात करेंगे, जिनकी सब्जी की खेती से किस्मत बदल गई। इस किसान का नाम निरंजन सरकुंडे है। वह नांदेड जिला स्थित जांभाला गांव के मूल निवासी हैं। निरंजन सरकुंडे एक छोटे किसान हैं। उनके समीप काफी कम भूमि है। उन्होंने डेढ़ बीघे भूमि पर बैंगन की खेती की है। विशेष बात यह है, कि विगत तीन वर्षों से वह इस खेत में बैंगन की पैदावार कर रहे हैं, जिससे उन्हें अभी तक चार लाख रुपये की आमदनी हुई है।

बैंगन विक्रय कर कमा चुके 3 लाख रुपये का मुनाफा

निरंजन सरकुंडे का कहना है, कि उनके समीप 5 एकड़ खेती करने लायक भूमि है। निरंजन सरकुंडे इससे पहले अपने खेत में पारंपरिक फसलों की खेती किया करते थे। परंतु, उससे उनको उतनी ज्यादा कमाई नहीं हो पाती थी। अब ऐसी स्थिति में उन्होंने सब्जी का उत्पादन करने का निर्णय लिया। उन्होंने डेढ़ बीघे भूमि में बैंगन की बिजाई कर डाली, जिससे कि उनकी अच्छी-खासी आमदनी हो रही है। वर्तमान में वह बैंगन बेचकर 3 लाख रुपये का मुनाफा कमा चुके हैं। हालांकि, वह बैंगन के साथ-साथ पारंपरिक फसलों का भी उत्पादन कर रहे हैं।

निरंजन सरकुंडे के बैगन की बिक्री स्थानीय बाजार में ही हो जाती है

वर्तमान में निरंजन सरकुंडे पूरे गांव के लिए मिसाल बन गए हैं। वर्तमान में पड़ोसी गांव ठाकरवाड़ी के किसानों ने भी उनको देखकर सब्जी की खेती चालू कर दी है। निरंजन सरकुंडे ने बताया है, कि इस डेढ़ बीघे भूमि में बैंगन की खेती से वह तकरीबन 3 लाख रुपये का शुद्ध मुनाफा अर्जित कर चुके हैं। हालांकि, डेढ़ बीघे भूमि में बैंगन की खेती करने पर उनको 30 हजार रुपये का खर्चा करना पड़ता है। छोटी जोत के किसान निरंजन द्वारा पैदा किए गए बैंगन की स्थानीय बाजार में अच्छी-खासी बिक्री है। सरकुंडे ने बताया है, कि ह वह अपने खेत की सब्जियों को बाहर सप्लाई नहीं करते हैं। उनके बैगन की स्थानीय बाजार में ही काफी अच्छी बिक्री हो जाती है।

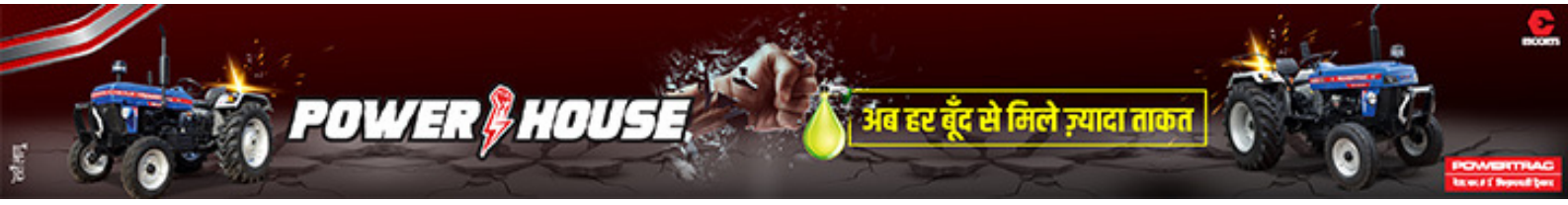

MERIKHETI

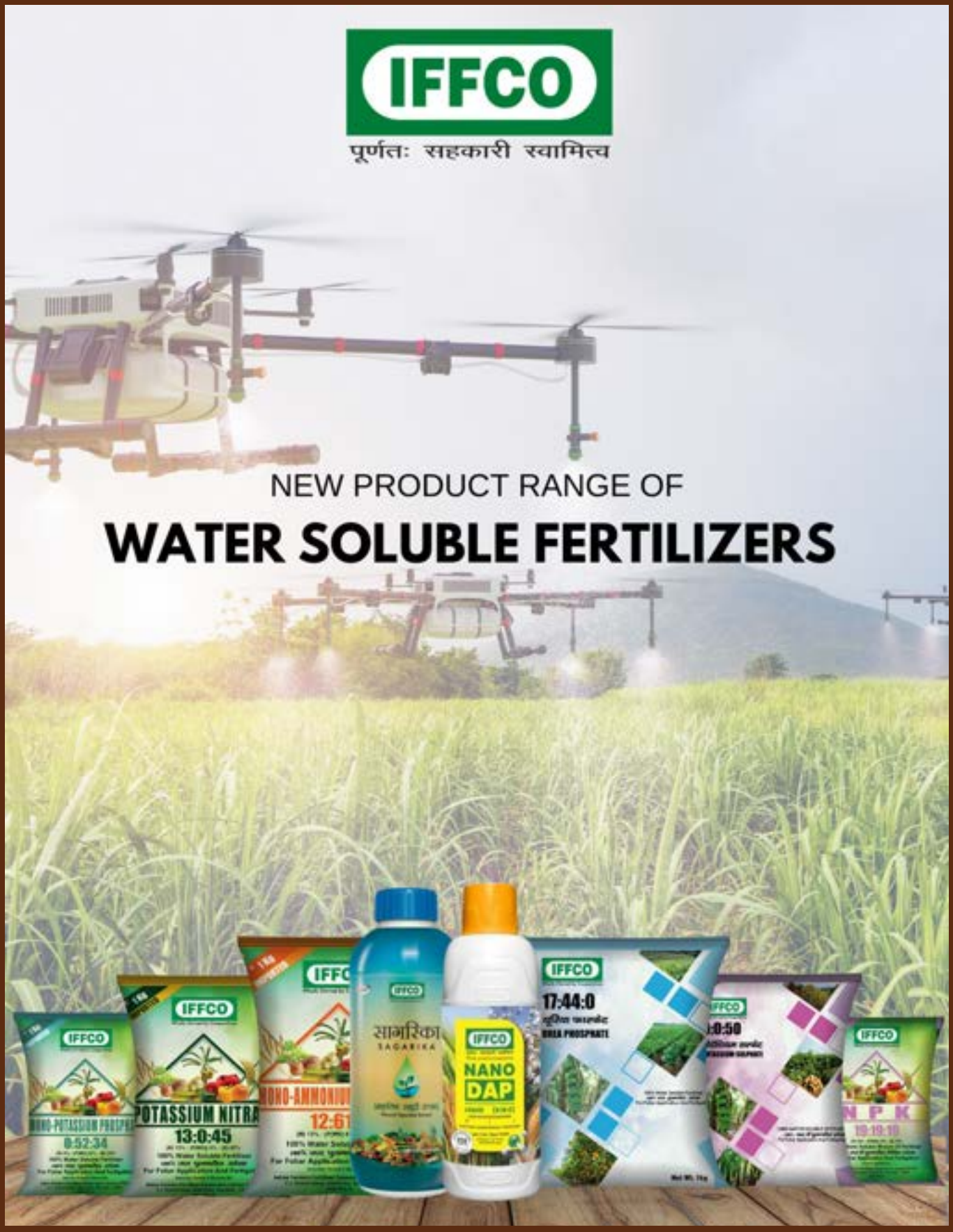

www.merikheti.com

Address: 5A-46, 6th Floor, Cloud9 Tower, Vaishali Sector 1, Ghaziabad – 201010